कक्षा 10

# प्रतिदीप्त

## सैंपल शिक्षण योजना संदर्शिका

### सत्र 2024-25

### माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों हेतु

कालेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन(सी.टी.ई.), प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

### मुख्य संरक्षक

**श्री दीपक कुमार**, अपर मुख्य सचिव, माध्यमिक शिक्षा, उ0प्र0 शासन, लखनऊ

### संरक्षक

**श्रीमती कंचन वर्मा**, महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ0प्र0, लखनऊ

### निर्देशन

**डॉ0 सरिता तिवारी**, निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ
**डॉ महेंद्र देव**, शिक्षा निदेशक(माध्यमिक), शिक्षा निदेशालय, उ०प्र०, लखनऊ

### मार्गदर्शन

**डॉ0 पवन कुमार**, संयुक्त निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ
**श्रीमती दीपा तिवारी**, उप शिक्षा निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ

### परामर्श

**श्री आनन्द कुमार पाण्डेय**, वरिष्ठ विशेषज्ञ एवं प्रभारी गुणवत्ता, समग्र शिक्षा, उ.प्र., लखनऊ
**श्री अशोक कुमार सिंह**, प्राचार्य, कालेज ऑफ टीचर एजुकेशन, प्रयागराज, उ0प्र0

### सह परामर्श

**श्री पी.एम.अंसारी**, राज्य सलाहकार, समग्र शिक्षा, उ.प्र. लखनऊ
**श्रीमती वर्चस्विनी जौहरी**, प्रवक्ता(समूह 'ख'), कालेज ऑफ टीचर एजुकेशन, प्रयागराज
**श्री संजय कुमार**, प्रवक्ता, कालेज ऑफ टीचर एजुकेशन, प्रयागराज

### समीक्षा निर्देशन

**श्री नवल किशोर**, प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज
**डॉ० दीप्ति मिश्रा**, सहायक उप शिक्षा निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज

### संपादन एवं विशेषज्ञ मण्डल

**डॉ० अवनीश यादव**, प्रधानाचार्य, रा०मा०इं०का०, नवाबगंज, बरेली
**श्री पवन कुमार श्रीवास्तव**, प्रधानाचार्य, रा०इं०का०, हमीरपुर
**श्री मदन पाण्डेय**, सेवानिवृत्त प्रवक्ता, एस0सी0ई०आर0टी0, उत्तराखंड, देहरादून
**श्री जयप्रकाश ओझा**, सहायक अध्यापक, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गोरखपुर

### समीक्षा मण्डल

**श्री रीतेश अग्रवाल**, प्रवक्ता, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज
**श्रीमती विभा मिश्रा**, प्रवक्ता, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज
**श्रीमती रिचा शुक्ला**, प्रवक्ता, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज
**श्रीमती स्मिता सिंह**, प्रवक्ता, कालेज ऑफ टीचर एजुकेशन, प्रयागराज, उ0प्र0
**श्रीमती अलका**, प्रवक्ता, कालेज ऑफ टीचर एजुकेशन, प्रयागराज, उ0प्र0

**श्रीमती प्रियंका पल्लवी**, स0अ0, कालेज ऑफ टीचर एजुकेशन, प्रयागराज, उ0प्र0

## लेखन मण्डल

**डॉ0 अर्चना सिंह**, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सैदपुर, गाजीपुर
**डॉ0 सतीश कुमार तिवारी**, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्रतापगढ़
**सुश्री शबनम सिद्दकी**, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कौशाम्बी
**श्री अनुराग सिंह**, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सारनाथ, वाराणसी
**श्री रीतेश अग्रवाल**, प्रवक्ता, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, प्रयागराज
**श्री सुनील कुमार सिंह**, प्रवक्ता, राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज, अनपरा, सोनभद्र
**श्री दिनेश कुमार सिंह**, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली
**श्रीमती शिप्रा श्रीवास्तव**, स0अ0, राजकीय इंटर कॉलेज, झांसी
**श्री अजय कुमार अनुरागी**, स0अ0, एस0पी0आई0 इंटर कालेज सिविल लाइन, झांसी
**डॉ0 दीपा रानी**, स0अ0, राजकीय कन्या इंटर कॉलेज बिसौली, बदायूं
**श्रीमती कामिनी जायसवाल**, स0अ0, राजकीय बालिका इंटर कालेज हुसैनगंज, फतेहपुर
**श्री अखिलेश कुमार तिवारी**, स0अ0, जवाहर ज्योति इंटर कालेज अमरगढ़, बुलंन्दशहर
**श्रीमती प्रियंका सिंह**, स0अ0, राजकीय हाईस्कूल एकारी, फतेहपुर
**श्री सहादुर**, स0अ0, पं0 दीनदयाल उपा0रा0 मॉडल इंटर कालेज इमलिया, हमीरपुर
**श्री देवेन्द्र कुमार सिंह**, स0अ0, आदर्श इण्टर कॉलेज सराय अकिल, कौशाम्बी
**श्री अरुण कुमार सिंह भदौरिया**, स0अ0, उ0प्रा0वि0 टिकरौली(1–8), सुमेरपुर, हमीरपुर
श्री नीरज अग्निहोत्री, सहायक अध्यापक, प्रा0वि0 जौरास, त्रिवेदीगंज, बाराबंकी

## तकनीकी सहयोग, कवर एवं बैक पेज डिजाइन

**श्री अरुण कुमार सिंह भदौरिया**, स0अ0, उ0प्रा0वि0 टिकरौली(1–8), सुमेरपुर, हमीरपुर
श्री नीरज अग्निहोत्री, सहायक अध्यापक, प्रा0वि0 जौरास, त्रिवेदीगंज, बाराबंकी

अशोक कुमार सिंह
प्राचार्य
कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

# प्राक्कथन

मनुष्य को सृष्टि का सबसे बुद्धिमान प्राणी कहा गया है। इसके पीछे अन्य तमाम कारणों के साथ प्रमुख कारण यह भी है कि उसने अपने जीवन को सहज एवं सुगम बनाने के लिए तमाम साधन–सुविधाओं के साथ–साथ सामाजिक परिवेश और उसके अनुरूप आवश्यक परिस्थितियों का भी निर्माण किया है। मानव जीवन के हजारों वर्षों के इतिहास पर यदि हम दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि हमारे पूर्वजों ने विषम परिस्थितियों तथा कड़ी चुनौतियों के बावजूद कठिन परिश्रम द्वारा गुफाओं–कन्दराओं से बाहर निकलकर ग्रामीण व नगरीय सभ्यता का विकास किया, जन–जीवन के अनुकूल संसाधनों का आविष्कार किया तथा सुव्यवस्थित सामाजिक जीवन हेतु संस्कृति का निर्माण किया जो प्राणिमात्र एवं प्रकृति के पारस्परिक अंतरसंबंधों पर निर्भर है। अद्यतन यह क्रम जारी है।

सामाजिक विज्ञान इन्हीं पारस्परिक संबंधों की जानकारी और जरूरतों की पड़ताल करता है। जिसमें विषय के रूप में भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र शामिल हैं। वस्तुतः सामाजिक विज्ञान एक विषय मात्र नहीं बल्कि मानव, प्रकृति और पर्यावरण के बीच सह–संबंधों तथा इनको सलीके से निर्वाह करने के तरीके सीखना और सिखाना ज्यादा है। हमारी कक्षा–कक्षीय परिस्थितियों में यह किस प्रकार संभव हो इस पर एक समझ विकसित करने तथा उदाहरण के रुप में कुछ शिक्षण योजनाएं दिए जाने के दृष्टिकोण से इस सैम्पल शिक्षण योजना संदर्शिका का विकास किया गया है।

वर्तमान समय तकनीकी उत्कृष्टता का है। कोरोना जैसे वैश्विक आपदाकाल में भी तकनीक ने ज्ञान–विज्ञान के नित नए द्वार खोले तथा सीखना सिखाना जारी रखा। विभिन्न शैक्षिक प्लेटफॉर्म, ई–सामग्री आदि उपलब्ध होने से ज्ञान के स्रोत कहीं ज्यादा सुगम व सुलभ हो गए हैं। ऐसे में शिक्षा से जुड़े हम सभी का यह दायित्व हो जाता है कि तकनीक समृद्ध हों तथा आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की ओर बढ़ते हुए भी ज्ञान के परम्परागत एवं सर्वमान्य स्रोत, 'मानवीय संसाधन' को अद्यतन रखें। इसके लिए तकनीकी ज्ञान व कौशल के साथ–साथ विषय की प्रकृति के अनुरूप शिक्षण विधाओं, आकलन प्रविधियों, शैक्षिक नवाचारों तथा ज्ञान के स्थानीय स्रोतों व संसाधनों का भी व्यापक उपयोग किया जाए। विद्यार्थी अपने परिवेशीय अनुभवों को शामिल करते हुए नवीन ज्ञान की रचना करें तथा जीवन की विविध परिस्थितियों में अर्जित ज्ञान का तार्किक उपयोग कर पाएँ यह हमारे शिक्षण का लक्ष्य होना चाहिए। विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत समाहित विषयों का पारस्परिक जुड़ाव एवं अन्तर महसूस करते हुए संवैधानिक प्रतिबद्धताओं, मानकों और मान्यताओं के अनुरूप एक बेहतर समाज की रचना में संलग्न हो, यह हमारी शिक्षण प्रक्रियाओं का अभीष्ट होना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023 सुखद भविष्य के लिए शिक्षार्थियों को सशक्त बनाने पर जोर देती है। इसके लिए सीखने के वातावरण को अधिक गतिशील और लचीला बनाया जाना

आवश्यक है। ऐसा वातावरण जहाँ बच्चे ज्ञान के निर्माण में स्वयं शोध की ओर अग्रसर हों तथा वर्तमान एवं आगामी समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हों। विद्यार्थियों में यह सब संभव बनाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षको को स्वविकास हेतु जरुरी साधन, संसाधन और पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराये जाएं। प्रस्तुत संदर्शिका इसी दिशा में एक प्रयास है।

संदर्शिका को अपने आशीर्वाद से गरिमा प्रदान करने हेतु मैं शिक्षा निदेशक(माध्यमिक), उ0प्र0 डा महेंद्र देव एवं निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 श्रीमती सरिता तिवारी का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ। संदर्शिका के विकास में विषय विशेषज्ञों, कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन के सहयोगी स्टॉफ ने जिस तत्परता, श्रम व समयबद्धता का परिचय दिया है उसके प्रति मै हृदय से साधुवाद देता हूँ। साथ ही प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में जिन भी स्रोत/माध्यमों से सामग्री अथवा सहयोग प्राप्त हुआ है उन सभी के प्रति मै हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

किसी भी शैक्षिक सामग्री, साहित्य अथवा मॉड्यूल की उपयोगिता तब साबित होती है जब वह विद्यार्थियों में उन विषयगत दक्षताओं का विकास कर पाए जो अपेक्षित हैं। निःसंदेह इस संदर्शिका की उपयोगिता विद्यालयों में इसके बेहतर उपयोग में ही निहित है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि संबंधित शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत संदर्शिका की सार्थकता सिद्ध की जाएगी। संदर्शिका के संबंध में सभी प्रबुद्धजनों के सुझावों का स्वागत रहेगा जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप प्रदान किया जा सके।

धन्यवाद।

अशोक कुमार सिंह
प्राचार्य
कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन
प्रयागराज

**डॉ0 सरिता तिवारी**
**निदेशक**
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश,
लखनऊ

# संदेश

शिक्षा किसी भी राष्ट्र और समाज का भविष्योन्मुखी निवेश होती है। शिक्षा द्वारा किसी भी व्यक्ति से यह अपेक्षित होता है कि वह एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित हो तथा देश और दुनिया की बेहतरी के लिए कार्य करे। इसी उद्देश्य और अपेक्षा से विद्यालयी शिक्षा में विभिन्न विषयों का समावेश किया गया है, जो अपनी प्रकृतिगत विविधता और विशिष्टता के साथ विद्यार्थी का व्यक्तित्व गढ़ते हैं।

सामाजिक विज्ञान अपनी सक्षम पाठ्यचर्या के साथ विद्यार्थियों को देश की समृद्ध और वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक विरासत के प्रति संवेदनशील बनाता है। विषयगत विशिष्टता के चलते सामाजिक विज्ञान बच्चों में इतिहास के मूल्यांकन, साधनों–संसाधनों के महत्व और परिरक्षण, प्राकृतिक चुनौतियों को पहचानने और उनका सामना करने, संसाधनों के उपयोग और समान वितरण जैसे तमाम बिंदुओं पर जानकारी, समझ और अनुप्रयोग का कौशल विकसित करता है। स्थानीय, राष्ट्रीय तथा वैश्विक दृष्टिकोण से लोकतांत्रिक सिद्धान्तों, नागरिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाता है। साथ ही समाधान कौशल के विकास द्वारा जेंडर, हाशिए तथा विशेष आवश्यकता वाले वर्गों के प्रति संवेदनशीलता व समानुभूति के भाव को पुष्ट करता है।

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, प्रयागराज द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय पर माध्यमिक स्तरीय सैम्पल शिक्षण योजना संदर्शिका का विकास कराया गया है। ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020'' के परिप्रेक्ष्य में विकसित यह सामग्री निश्चित ही शिक्षकों के क्षमता संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगी। कक्षाकक्षीय परिस्थितियों में उक्त सामग्री का प्रयोग विद्यार्थियों में वांछित विषयगत लर्निंग आउट्कम का विकास करेगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

मैं उक्त सामग्री के विकास में योगदान देने वाले प्राचार्य, कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन प्रयागराज व उनकी पूरी टीम, समस्त विषय विशेषज्ञों, तकनीकी विशेषज्ञों तथा सहयोगी स्टाफ की हृदय से सराहना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
उत्तर प्रदेश

**डॉ0 महेन्द्र देव**
**शिक्षा निदेशक (माध्यमिक)**
**उ0प्र0, लखनऊ**

# संदेश

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020" शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाते हुए किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। साथ ही विद्यार्थियों में विषयगत ज्ञान कौशलों तथा मानसिक शक्तियों के विकास हेतु समृद्ध भारतीय ज्ञान परंपरा को शैक्षिक प्रक्रियायों का अंग बनाने की आवश्यकता को प्रमुखता से इंगित करती है।

सामाजिक विज्ञान, विषय के रूप में विद्यार्थियों को देश के संवैधानिक ढाँचे के अनुरूप एक उत्तम एवं जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करता है। इसके अन्तर्गत देश की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ एवं उनके बीच अंतर्सम्बंधों की समझ को विद्यार्थियों तक पहुंचाया जाता है। जिसे विद्यार्थी अपने जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में लागू करते हैं।

सीखना एक सतत प्रक्रिया है, अतः नित–नूतन शोध, नवाचारों एवं आविष्कारों से स्वयं को जोड़े रहने के लिए आवश्यक है कि सीखना निरंतर जारी रखा जाए। समय–समय पर विभाग द्वारा विकसित पाठ्यसामग्रियाँ, प्रशिक्षण साहित्य, ई–सामग्री आदि इसी उद्देश्य के साथ विकसित किए जाते हैं कि वे सीखने में एक महत्वपूर्ण साधन का कार्य करें।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन (सी0टी0ई0) प्रयागराज द्वारा कक्षा–09 एवं 10 के सामाजिक विज्ञान विषय पर शिक्षकों के उपयोगार्थ 'सैम्पल शिक्षण योजना संदर्शिका' का विकास किया गया है। मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि उक्त संदर्शिका का विकास 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020' एवं 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023' में प्रदत्त संस्तुतियों, सहमतियों और मार्गदर्शक बिन्दुओं के आलोक में किया गया है।

मैं संदर्शिका के विकास से जुड़े समस्त अधिकारियों, विषय–विशेषज्ञों के प्रयास की सराहना करता हूँ। मेरी शुभकामना है कि प्रस्तुत संदर्शिका अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो।

डॉ(महेंद्र देव)
शिक्षा निदेशक (माध्यमिक)
उ०प्र० लखनऊ

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 1. | संदर्शिका के उपयोग से जुड़ी कुछ बातें | 09 |
| 2. | **सामान्य समझ पत्र** | 11 |
| 3. | **भूगोल** | |
| | ▪ केन्द्रिक लर्निंग आउटकम | 20 |
| | ▪ अवधारणा पत्र | 22 |
| | ▪ दिवसवार अध्याय की विषयवस्तु का विभाजन | 30 |
| | ▪ शिक्षण योजनाएं | 38 |
| 3. | **इतिहास** | |
| | ▪ केन्द्रिक लर्निंग आउटकम | 53 |
| | ▪ अवधारणा पत्र | 55 |
| | ▪ दिवसवार अध्याय की विषयवस्तु का विभाजन | 66 |
| | ▪ शिक्षण योजनाएं | 74 |
| 4. | **नागरिक शास्त्र** | |
| | ▪ केन्द्रिक लर्निंग आउटकम | 87 |
| | ▪ अवधारणा पत्र | 90 |
| | ▪ दिवसवार अध्याय की विषयवस्तु का विभाजन | 101 |
| | ▪ शिक्षण योजनाएं | 107 |
| 5. | **अर्थशास्त्र** | |
| | ▪ केन्द्रिक लर्निंग आउटकम | 118 |
| | ▪ अवधारणा पत्र | 121 |
| | ▪ दिवसवार अध्याय की विषयवस्तु का विभाजन | 132 |
| | ▪ शिक्षण योजनाएं | 138 |
| 6. | **परिशिष्ट** | 151 |

# संदर्शिका के उपयोग से जुड़ी कुछ बातें

प्रस्तुत संदर्शिका एक मार्गदर्शिका है जो विद्यालयीय परिस्थितियों में अनुकूल शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने हेतु कुछ सुझाव प्रस्तुत करती है। इन सुझावों के परिप्रेक्ष्य में हमें अपने कार्य को निरंतर बेहतर बनाने के लिए आवश्यक होगा कि–

- सामान्य समझ तथा अवधारणा पत्र को भली भाँति पढ़कर समझना तथा उसमें उल्लिखित बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में अपनी शिक्षण योजनाएं निर्धारित करना।
- शिक्षण अधिगम व विद्यार्थियों की ग्रहण क्षमता के दृष्टिकोण से कठिन समझे जाने वाले स्थलों का चिह्नांकन तथा उनके सरलीकरण व सामान्यीकरण हेतु कार्य योजना तैयार करना।
- जटिल, पारिभाषिक व तकनीकी शब्दावली को सरलीकृत करना।
- प्रत्येक प्रकरण में लर्निंग आउटकम/पाठ्य बिन्दु से संबंधित विद्यार्थियों के पूर्व/परिवेशीय अनुभवों को जानना तथा उन्हें शिक्षण योजना का हिस्सा बनाना।
- विषय से संबंधित स्थानीय सामग्री, स्रोतों व संसाधनों की पहचान करना तथा योजनाबद्ध तरीके से उनका उपयोग करना।
- विद्यार्थियों को परिवेशीय(स्थानीय) इतिहास, भौगोलिक परिदृश्य, स्थानीय प्रशासन व लोक संदर्भों से जोड़ना तथा इनसे संबंधित शोध, साक्षात्कार, सर्वे, संकलन आदि कार्य कराना।
- साहित्य, लोकसाहित्य, जनश्रुतियों व किंवदन्तियों में वर्णित भूगोल, इतिहास, नागरिक जीवन व अर्थशास्त्र से संबंधित विवरणों/वृत्तान्तों को जानना तथा उनकी प्रामाणिकता ज्ञात करना।

साहित्य में वर्णित विवरणों/प्रसंगों में रचनात्मक छूट की गुंजाइश होती है। साहित्यिक संदर्भों से प्राप्त जानकारियों का प्रामाणिक स्रोतों से मिलान आवश्यक है। इसी प्रकार राजनैतिक विचारधाराओं, तत्कालीन परिस्थितिगत निर्णयों, निर्धारित की गई व्यवस्थाओं, लागू किए गए नियमों आदि पर पर्याप्त तार्किक चर्चाएं आवश्यक होंगी। विद्यार्थी तत्कालीन परिस्थितियों में लिए गए निर्णयों का तार्किक विश्लेषण करें तथा किसी थोपी गई राय के बजाय बड़े समूह में चर्चा द्वारा परस्पर सामूहिक निष्कर्ष की ओर जाएं।

हम सभी इस बात से सहमत हैं कि हर विषय की अपनी प्रकृति होती है, जो उसे अन्य विषयों से अलग करती है। यह प्रकृतिगत भिन्नता या विविधता प्रत्येक विषय की शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं पर भी लागू होती है। पर, कदाचित यह देखने में आता है कि हम सभी विषयों का शिक्षण लगभग समान तरीकों से ही करते हैं। इससे न केवल विषयगत विशिष्टता प्रभावित होती है बल्कि विद्यार्थियों के कहीं ज्यादा बेहतर रूप में सीख पाने की संभावनाओं पर भी असर पड़ता है। अतः यह जानना आवश्यक होता है कि बच्चे कैसे सीखते हैं, तथा विषयगत

भिन्नता के आधार पर शिक्षण विधियों एवं तरीकों में किस किस प्रकार के बदलाव किए जा सकते हैं।

किसी भी अन्य विषय की तरह सामाजिक विज्ञान का अध्ययन केवल सूचनाओं/विवरणों को एकत्र करना, रटना या प्रश्नोत्तर देना भर नहीं है बल्कि इसके जरिए अर्जित ज्ञान और समझ को जीवन की विविध परिस्थितियों में तार्किक रूप से उपयोग कर पाने की दक्षता अर्जित करना है। अतः सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत विषयगत धारणाओं, मान्यताओं, तथ्यों आदि को पुष्ट करते समय इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि सुनी–सुनाई बातें, साक्ष्यहीन संदर्भ, पूर्वाग्रह, किंवदन्तियों, जनश्रुतियों के बजाए प्रामाणिक तथा वैज्ञानिक निष्कर्षो और शोध साक्ष्यों के आधार पर मान्य जानकारियां ही विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत की जाएं। जिन्हें वे अपने अध्ययन, अनुभवों, अनुप्रयोगों के आधार पर प्राप्त निष्कर्षो से मिलान कर ग्रहण करना सीखें।

**शैक्षिक नवाचारः** कक्षा कक्षीय शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ–साथ शैक्षिक नवाचार कराया जाना विद्यार्थियों में विषयगत रुचि–रुझान के अतिरिक्त विविधता पूर्ण वातावरण भी उपलब्ध कराता है। अतः समय–समय पर इस प्रकार के नवाचार कराया जाना आवश्यक होगा। ऐसे कुछ नवाचार इस प्रकार के हो सकते हैं–

पत्रिका का प्रकाशन, अवेयरनेस कैम्पेन, पोस्टर निर्माण, वाद–विवाद, संभाषण, क्विज, पुस्तकालय समय, साक्षात्कार, शैक्षिक भ्रमण, सर्वे, शार्ट वीडियोज/रील्स व एनीमेशन बनाना, रोल प्ले, स्थानीय पाठ्यक्रम का विकास, शोध आधारित प्रोजेक्ट कार्य, सामाजिक विज्ञान क्लबों का संचालन।

## सामान्य समझ पत्र

अध्ययन के एक विषय के रूप में समाज विज्ञान ने पिछली दो सदियों में आकार ग्रहण किया है। इससे पहले यह अपने घटक विषयों– इतिहास, भूगोल, राजनीति/नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र के रूप में पठन–पाठन का विषय रहा हैं। इन विषयों पर साहित्य लिखने का क्रम तो करीब ढाई हजार वर्ष पूर्व से जारी है। कौटिल्य की रचना अर्थशास्त्र ईसापूर्व चौथी सदी का ग्रंथ है। प्लेटो की रचना ''रिपब्लिक'' का रचनाकाल ईसापूर्व 380 वर्ष है। 'अर्थशास्त्र' समकालीन राज्य प्रबन्धन(शासन, कला, राज्य व्यवस्था) की एक उत्कृष्ट रचना है तो 'रिपब्लिक' न्याय और राजनीति शास्त्र का आदर्शवादी ग्रंथ। इस तरह की अनेकानेक पुस्तकें, नीति, धर्माचार तथा राज्य संचालन व समाज के नियमन के लिए बनाए गए अब तक के विधान समाज विज्ञान की धरोहर हैं।

हजारों–लाखों वर्ष की विकासयात्रा में मानव समाज अपने परिवेश, पर्यावरण और प्रकृति से सहकार और संघर्ष के रिश्ते बनाता रहा है। एक व्यक्ति के रूप में मनुष्य ने बाकी समाज से और एक समाज ने दूसरे समाजों के साथ भी तरह–तरह के संबंध बनाए हैं।

इन अनुभवों का विश्लेषण करके मानव जाति ने विभिन्न विज्ञानों और कलाओं का स्वरूप निर्धारित किया है। भौतिकी, रसायन, जीव व वनस्पति विज्ञान आदि विषय इसी क्रम में विकसित हुए हैं। मनोविज्ञान मनुष्य और समाज दोनों के व्यवहारों की व्याख्या करता है। विभिन्न समाजों ने अपने अनुभवों, कहावतों, मुहावरों, चुटकुलों, धारणाओं, भावनाओं और कल्पनाओं को कहानी, कविताओं जैसे साहित्यिक रूपों में प्रकट करना सीखा है। चित्रकारी और शिल्पों का इतिहास तो भाषा से भी ज्यादा पुराना है। लाखों वर्ष पहले हमारे पुरखों द्वारा पत्थर की दीवारों पर अमिट रंगों से बने चित्र आज तक हमें जहाँ–तहाँ मिल जाते हैं। ये सब समकालीन सामाजिक परिस्थितियों के साक्ष्य हैं। यह सभी मानविकी और एक तरह से समाजशास्त्र की भी अध्ययन संपदा हैं।

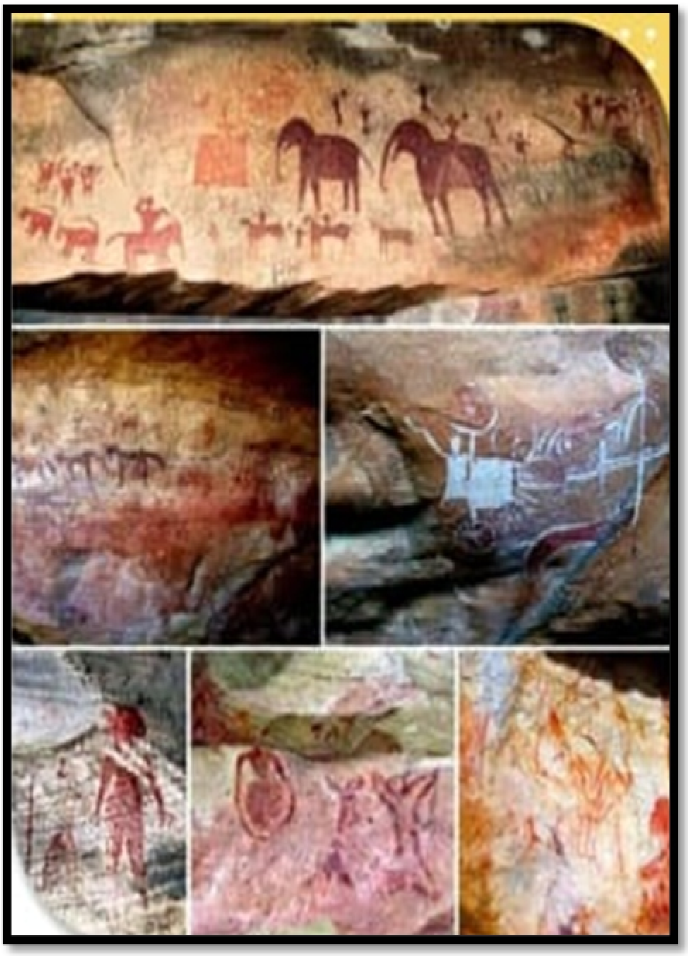

### समाजशास्त्र और समाजविज्ञान –

सामाजिक विषय पढ़ते–पढ़ाते हुए दो शब्द अक्सर हमारी नजर में आते है– समाजशास्त्र और समाज विज्ञान। दोनों में कोई स्पष्ट विभाजन कर पाना

कठिन काम है। क्योंकि ऐसा कोई विभाजन है ही नहीं। ये अलग अलग समय पर किए गए इस विषय के नामकरण हैं। फिर भी इतना कहा जा सकता है कि विषयवस्तु के रूप में समाज के विकास, संचालन, शिक्षा–दीक्षा, भरण–पोषण, और मानसिक उन्नति के लिए रचा गया समस्त साहित्य समाजशास्त्र के अन्तर्गत आ जाता है। जब हम इनका तथ्यों, घटनाओं के रूप में विश्लेषण करते हैं और इनमें समाज विकास के नियमों–सिद्धांतों की खोज करते हैं तो यह विज्ञान का रूप ले लेता है। विज्ञान के नियम, निष्कर्ष या सिद्धांत सार्वजनीन होते हैं। उदाहरण के लिए जब हम विभिन्न महाद्वीपों में देशों के निर्माण की प्रक्रिया देखते हैं तो उसके तीन मुख्य कारण दिखाई पड़ते हैं–

1. राजतंत्रों (सामंतवादी व्यवस्था) के प्रति जनता का असंतोष और विद्रोह
2. ज्ञान–विज्ञान, व्यापार और उद्योगों के साथ समाज की चेतना (समझ) का विकास तथा राजतंत्र का औद्योगिक सभ्यता के लिए अनुपयोगी हो जाना
3. साम्राज्यवादी/उपनिवेशी गुलामी के विरुद्ध– गुलाम देशों की जनता की आजादी और स्वशासन की इच्छा।

इनसे यह तथ्य प्रमाणित होता है कि विज्ञान और टैक्नोलोजी पर आधारित औद्योगिक सभ्यता के लिए, राजतंत्र या बादशाहतें उपयोगी नहीं हैं, बल्कि संसदीय लोकतंत्र उपयुक्त हैं। संसदीय लोकतंत्र की तुलना में राजतंत्र पिछड़ी हुई (Outdated) व्यवस्था है।

## समाज विज्ञानः सांसारिक वस्तुओं और घटनाओं के कारणों की समझ

प्राकृतिक विज्ञानों का कार्य–कारण नियम और सिद्धान्त थोड़ा फेरबदल के साथ समाज विज्ञान पर भी लागू होता है। हमारे चारों ओर एक विराट दुनिया है, हमारी पृथ्वी, सौरमंडल और ब्रहमाण्ड हैं। इन्हें देखकर हमारे मन में उत्पत्ति और विकास संबंधी अनेक सवाल पैदा होते हैं। हमारे पुरखों में भी ऐसी जिज्ञासा थी। उन्होंने उसका समाधान खोजने की कोशिश की। एक प्राचीन यूनानी विचारक फालिस कहते थे– यह दुनिया पानी से पैदा हुई है। यहीं का एक और विचारक डैमोक्रिट्स कहता था, संसार की सभी चीजें बारीक कणों से बनी हैं। एक प्राचीन भारतीय ऋषि कणाद ने अनुसार– यह सारा ब्रह्मांड पदार्थ से बना है। हर पदार्थ– यानि मानव शरीर भी बहुत सूक्ष्म कणों से बना है। आधुनिक विज्ञान ने परमाणु के भी छोटे अवयवों– इलेक्ट्रॉन, प्रोटान और न्यूट्रान की खोज करके इस धारणा को प्रमाणित कर दिया है। आधुनिक समाज विज्ञान भी संसार की सभी जैविक और अजैविक वस्तुओं को एक ही श्रेणी में रखता है।

मनुष्य और उनका समाज स्वयं विभिन्न रासायनिक– जैविक तत्वों का संगठन है। हमारी समझ/चेतना जिस मस्तिष्क में मौजूद रहती है वह एक खास पदार्थ का बना है। हमसे बाहरी दुनिया के पदार्थ हमारी ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, मुँह, नाक, त्वचा) पर असर डालते हैं और अनुभूतियाँ (फीलिंग्स) पैदा करते हैं।

आधुनिक समाज विज्ञान बताता है कि हमसे बाहर की वस्तुगत, प्राकृतिक दुनिया हमारी समझ/चेतना से स्वतंत्र है। इस अर्थ में कि यह हमारी मनमानी से नहीं चला करती। यदि हम चाहें कि पत्थर पानी में तैरना शुरू कर दे तो यह असंभव होगा। यहाँ आर्किमिडीज का तैरने का सिद्धांत काम करेगा। यानि ठोस वस्तु द्वारा हटाए गए द्रव का भार, वस्तु के कुल भार से

ज्यादा हो तभी कोई वस्तु तैरेगी। पानी में डाला गया पत्थर हमारी इच्छा के विपरीत पानी में डूब जाएगा। व्यक्ति के रूप सें एक सीमा तक मानव संगठनों पर हमारा नियंत्रण चल सकता है परन्तु व्यक्तियों की स्वतंत्रता और असहमतियों को स्थान देते ही समाज की अधिकतर घटनाओं पर सिर्फ एक व्यक्ति का यांत्रिक नियंत्रण असंभव हो जाता है। यहां संख्याओं की जरुरत होती है।

## समाज विज्ञान में गति –

गति का अध्ययन भौतिकी के साथ समाज विज्ञान का भी विषय है। भौतिकी और समाज विज्ञान दोनों के अनुसार पदार्थ और गति परस्पर संबंधित हैं। न पदार्थ/वस्तु के बिना गति संभव है, न गति के बिना पदार्थ। एक जगह पर स्थिर दिख रही वस्तुओं में परमाणु सतत गतिशील रहते हैं। समाज विज्ञान की सभी घटनाएँ मानव समूहों/समुदायों के लगातार गतिशील रहने का परिणाम हैं। समाज विज्ञान सभी प्रकार के वस्तु जगत और मानव जगत की गतियों को पाँच श्रेणियों में वर्गीकृत करता है–

1. **यांत्रिक गति–** भौतिक पदार्थों में कणों का एक से दूसरी जगह अंतरण।
2. **भौतिकीय गति–** यह ताप और विद्युत से संबंधित है और परमाणुओं के भीतर होती है।
3. **रासायनिक गति–** अणुओं का संयोजन–वियोजन
4. **जैविक गति–** जीव–जंतुओं का विकास (नृवांशिक)
5. **सामाजिक गति–** मानव समाज का विकास (समूहों, संगठनों, संस्थाओं के रूप में)

समाज विज्ञान गतियों की नाप–जोख नहीं करता बल्कि गति के कारणों की दार्शनिक व्याख्या करता है। समाज विज्ञान के अनुसार वस्तुओं और घटनाओं में गति का कारण है। दो विरोधी शक्तियों की एकता और टकराहट– यानि द्वंद्व। एक ही पदार्थ/वस्तु में भी परस्पर विपरीत शक्तियाँ मौजूद रहती हैं। किसी भी ग्रह का पदार्थ/चट्टानें यद्यपि स्वतंत्र होकर बिखर जाने की प्रवृत्ति रखती हैं, लेकिन ग्रह का गुरुत्व बल उसकी चट्टानों और मृदा राशि को बांधे रखता है। सूर्य के आकर्षण से ही पृथ्वी उसकी परिक्रमा करती है। स्वयं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण उसे अपने परिक्रमा पथ से विचलित नहीं होने देता। वह सूर्य से नहीं जा मिलती। दोनों के गुरुत्व का सामूहिक नतीजा है पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना।

## सामाजिक चेतना और व्यक्तिगत चेतना

चेतना और समझ लगभग पर्यायवाची हैं। समाज विज्ञान और मनोविज्ञान के अब तक के अनुभव सिद्ध करते हैं कि मानव के मन/मतिष्क में कोई अनुभूति अपने आप नहीं उपजती। उसके पीछे कोई तात्कालिक या दीर्घकालिक कारण जरूर होता है। हमारे विचार बाहरी जगत के आत्मपरक बिंब है। इन्हें हम बाहर से लेते और अपने पूर्वज्ञान से मिलाकर दिमाग में धारण कर लेते हैं। मस्तिष्क की खरबों कोशिकाएं सैकड़ों हजारों विचारों को स्मृति के रूप में धारण करने में सक्षम हैं। बाहरी संसार और समाज से प्राप्त अनुभव, अर्थकोड के रूप में मनुष्य के

दिमाग में अंकित होते रहते हैं। इन्हीं के साथ हमारे अनुभव और विचार लगातार विकास करते रहते हैं।

बाहरी संसार और समाज से मिले अनुभव मस्तिष्क पर विकास के लिए दबाव बनाते हैं। एक खास तरह का तनाव पैदा होता है और दिमाग में नई समझ के लिए जगह तय होती है। नई समझ बनाने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। वनमानुषों के दिमाग का औसत आयतन 400 घन से.मी. होता है और आज के विकसित मनुष्य के दिमाग का औसत आयतन 1400 घन से.मी. है। यह मनुष्य के विचारशील होते जाने और निरंतर भाषा का उपयोग करने से संभव हुआ है।

एक मनुष्य की चेतना व्यक्ति के रूप में सोच विचार के लिए स्वतंत्र होती है लेकिन बहुधा वह सामाजिक चेतना का अंश होती है। किसी भी सामाजिक चेतना के खिलाफ असहमति या विरोध भी एक चेतना ही है। विरोध या असहमति हमेशा नकारात्मक नहीं होते। झूठ के खिलाफ सच बोलने का आग्रह सकारात्मक चेतना है। अन्याय, उत्पीड़न का विरोध सकारात्मक चेतना है, अंग्रेजी साम्राज्य के शोषण के खिलाफ भारतीय जनता का प्रतिरोध लोगों की विद्रोही परन्तु एक सकारात्मक चेतना थी। यह पहले कुछ लोगों के मन में थी, फिर सामूहिक, सामाजिक बनी और अंत मे राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना बन गई।

एक ही विचार को मानने वाले कुछ या अधिक लोग हो जाते हैं तो एक खास तरह का मतवाद– पंथ, समुदाय या संप्रदाय बन जाता है। यह सांस्कृतिक, धार्मिक या राजनीतिक हो सकता है। समाज–विकास की प्रक्रिया में नई घटनाओं के साथ नए विचार भी पैदा होते हैं। उनकी कसौटी पर पुराने विचारों को कसा जाता है। उन्हें सुधारा या बदला जाता है। तर्क, आलोचना तथा व्याख्या, तथ्यों और घटनाओं का विश्लेषण करने के साधन हैं। वास्तव में आलोचना निंदा नहीं है। एक ही समाज में विरोधी विचारों के लोगों का साथ रहना सहिष्णुता का परिचायक है।

## समाज का विकास : टेढ़ा रास्ता

किसी भी समाज का विकास कभी भी सीधी रेखा में नहीं होता। विभिन्न घटनाओं का प्रभाव एक दूसरे और समाज पर पड़ता है। एक ही समाज, राज्य में रह रहे विभिन्न समुदायों, वर्गों के हित एक दूसरे से जुड़े होते हैं। ये समय–समय पर टकराते भी रहते हैं। इन सब के सम्मिलित प्रभाव में समाज विकास करता है। द्वंद्व और सहयोग/सहकार के नियम पदार्थों की तरह समाज विकास पर भी लागू होते हैं। अनेक बार सत्ता में बैठे वर्ग जन आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते। स्वार्थ का शिकार हो जाते हैं, तब जनता के आंदोलन फूट पड़ते हैं। ऐसे में विभिन्न सामाजिक या राजनीतिक संगठन समझौतों द्वारा समस्या का हल निकालते हैं या राजनीतिक सत्ता में परिवर्तन होता है।

## यथास्थिति और प्रगति

राज्य और समाज में विकास चाहने वाली और उसे रोकने वाली शक्तियाँ मौजूद रहती हैं। 1789 के आस–पास फ्रांस में ऐसी दो शक्तियों के बीच संघर्ष हुआ। राजा (लुई सोलहवां)

उसके दरबारी, सामंत जागीरदार आदि फ्रांस में औद्योगिक सभ्यता के विकास में रुकावट बन गए। वे उद्योगों तथा व्यापार के विकास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा लेखकों, कलाकारों, बुद्धिजीवियों की अभिव्यक्ति की आजादी के विरोधी थे। ऐसा वे सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए जनता से कर और बेगार लेकर अपने खजाने भरने के लिए कर रहे थे। साधारण लोग बेकारी और गरीबी के शिकार थे। किसान राजा और चर्च द्वारा लगातार वसूले जा रहे करों के कारण परेशान थे। मजदूरों को रोजगार की आजादी नहीं थी। राजाओं/बादशाहों और सामंतों का जरा भी विरोध करने पर उन्हें जेल में डाल दिया जाता, यंत्रणाएँ दी जातीं। इस स्थिति में फ्रांस की साधारण जनता, बुद्धिजीवियों, कलाकारों और उद्योगपतियों ने मिलकर विद्रोह कर राजा का तख्ता पलट दिया। जनता ने फ्रांसीसी संसद की स्थापना की। फ्रांस एक लोकतांत्रिक राज्य बना। कुछ बाधाओं के बावजूद धीरे-धीरे फ्रांस संसार का एक विकसित देश बन गया।

## मात्रात्मक और गुणात्मक वृद्धि तथा विकास

मात्रात्मक और गुणात्मक विकास का सिद्धांत, जीव विज्ञान व रसायन विज्ञान के साथ समाज विज्ञान में भी अपनी तरह से लागू होता है। यह व्यक्ति और समाज दोनों स्तरों पर संभव है। पृथ्वी पर एक कोशिकीय अमीबा की उत्पत्ति के बाद यदि वे संख्यात्मक रूप से ही बढ़ते रहते तो हमारी पृथ्वी पर आज उनकी एक मोटी परत जमी हुई होती, पर ऐसा नहीं हुआ।

एक कोशीय अमीबा द्विकोशीय और फिर बहुकोशीय जीव बना। आज मनुष्य और अन्य हजारों जीवधारियों के शरीर अरबों-खरबों कोशिकाओं से बने हैं। सभी शरीर विभिन्न आकार की कोशिकाओं के संगठन हैं। ये एककोशीय अमीबा से मात्रात्मक रूप से ही नहीं बल्कि गुण और कौशलों तथा क्षमताओं के रूप में भी बहुत भिन्न है। एक पच्चीस वर्ष का स्वस्थ युवक एक बच्चे की तुलना में मात्रा ही नहीं गुणात्मक रूप से भी बहुत भिन्न होता है। शारीरिक क्षमता, व्यवसाय संबंधी कौशल, अधिक भाषा क्षमता, अधिक ज्ञान, अधिक भार, आकार से वह तमाम ऐसे काम कर पाता है जो एक वर्ष का शिशु कभी नहीं कर सकता। यह बच्चे के शरीर में लगातार होती वृद्धि एवं विकास का परिणाम है, जो अपने परिवेश और बाहरी दुनिया से निरंतर संपर्क और अंतःक्रिया के फलस्वरूप होते हैं।

राजनीति/नागरिकशास्त्र में इसका एक उदाहरण, गाँवों की आबादी, बसावट, सुविधाएँ, संसाधन और बाजार, व्यापार के धीरे धीरे बढ़ते जाने से उनका नगरों में बदल जाना है। ऐसे ही कारणों से जब किसी कमिश्नरी (अंचल) को राज्य (प्राविंस) में बदल दिया जाता है या राज्यों को देश में बदला जाता है तो उनके क्रियाकलापों में गुणात्मक बदलाव आ जाते हैं। यद्यपि उनमें पहले की कुछ विशेषताएँ भी बनी रहती हैं।

## समाज का बुनियादी ढांचा और छतरी (अवरचना और अधिरचना)

किसी भी समाज की मुख्य संचालक शक्ति उसकी आर्थिक व्यवस्था होती है। आधुनिक विश्व में आर्थिक व्यवस्था के दो प्रमुख क्षेत्र हैं– कृषि और उद्योग। ये समाज के समस्त लोगों के लिए आहार और जीवनोपयोगी सामग्री का उत्पादन करते हैं। ये अर्थशास्त्र की भाषा में प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र कहलाते हैं। इन दोनों की सहायता के लिए और अर्थ व्यवस्था

तथा समाज–व्यवस्था के विकास हेतु कुछ अन्य कार्य भी किए जाते हैं। ये तृतीयक क्षेत्र में आते हैं।

मूलतः किसी समाज या राज्य के उत्पादक आर्थिक काम ही उसकी अवरचना (बुनियादी ढाँचे) बनाते हैं, इस ढाँचे की सुरक्षा के लिए खास तरह का राज्य और समाज एक छतरी (अधिरचना/ऊपरी ढांचा) बनाते हैं जो शिक्षा, कला, संस्कृति, सांस्कृतिक गतिविधियों, दार्शनिक, राजनीतिक विचारों आदि के रूप में होता है।

राज्य एवं समाज का बुनियादी ढांचा और ऊपरी ढांचा एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। कभी–कभी ये एक दूसरे को बदलते हैं और कभी–कभी खुद भी बदल जाते हैं। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से पहले फ्रांस का बुनियादी और आर्थिक ढाँचा बदल गया था। समाज में उद्योगपति, व्यापारी वर्ग, मजदूर वर्ग, व्यापार, कला और शिल्प का विकास हो चुका था। अखबार निकलने लगे थे। लेकिन शासन–सत्ता राजा और उसके कारिंदों के हाथ में थी। ये स्वयं कोई उत्पादक काम नहीं करते थे, लेकिन व्यापार, बाजार, नई खोजों और तकनीक के विकास पर रोक लगाते थे, मजदूरों को रोजगार की आजादी न थी, किसानों पर तरह–तरह के कर लगाते थे। अभिव्यक्ति की आजादी नहीं थी। राज्य और धर्म (चर्च) जनता से बड़ी मात्रा में राज्यकर व धर्मकर (दशमांश) वसूलते थे। कृषि के तरीके बहुत पुराने थे। ऐसे में जनता और समाज के जागरूक वर्गों ने विद्रोह किया। श्रमिकों, उद्योगपतियों, बुद्धिजीवियों ने राजतंत्र की इस छतरी को उखाड़ फेंका और ज्ञान, विज्ञान, कृषि व उद्योग के विकास के लिए फ्रांस में संसदीय लोकतंत्र की स्थापना की।

## समाज विकास और मानव श्रम

मनुष्य और समाज के विकास का सबसे बड़ा कारक मनुष्य का उत्पादक श्रम है। नृवंश विज्ञानियों का मत है कि मनुष्य के वन्य अवस्था से मनुष्य के रूप में आ जाने में सबसे बड़ी भूमिका श्रम की ही है। नृवंश विज्ञानियों के अनुसार वानरों की जिस प्रजाति ने सबसे अधिक प्रकार के श्रम किए वहीं शनैः शनैः मानव जाति में बदली और विकसित हुई। करीब 3 करोड़ 70 लाख वर्ष पहले की प्रोंकोसुल अवस्था से आज के विकसित मानव का रूप लेने में मानव श्रम, सामूहिकता और सामाजिकता की प्रमुख भूमिका रही है। सभी प्रकार का ज्ञान और कौशल मानव श्रम की उपज है। समाज विज्ञानियों–अर्थशास्त्रियों ने आधुनिक विश्व में करीब 48000 प्रकार के श्रमों की पहचान की है। श्रम ही वस्तुओं में मूल्य पैदा करता है और उन्हें माल (कमोडिटी) में बदलता है।

## कुछ सामाजिक मान्यताएँ और वास्तविकता–

समाज और उसकी स्थिति को लेकर हमारे समाज में कुछ ऐसी मान्यताएं मौजूद हैं जिनके पीछे कोई वैज्ञानिक और तार्किक कारण नहीं है। जैसे कि हमारा अतीत बहुत अच्छा था, स्वर्णिम था, वर्तमान बिगड़ चुका है और भविष्य बिलकुल अंधकारमय है। यह मान्यता हमें निराशा और अकर्मण्यता का शिकार बना सकती है। विश्वभर में मानव समाज थोड़ा आगे या पीछे क्रमशः वन्य, बर्बर युग से होता हुआ कृषि युग और आज के लोकतांत्रिक समाज की स्थिति तक पहुंचा है। संसार ने पूँजीवादी और समाजवादी दोनों ही प्रकार के लोकतंत्र देखे हैं,

और दोनों आधुनिक व्यवस्थाएं हैं। समाज विकास की वन्य और बर्बर अवस्थाओं में भोजन और बीमारियों का उपचार आसानी से सुलभ नहीं था। भोजन के लिए झगड़े और हिंसक युद्ध होते थे। प्राकृतिक आपदाओं से बचने और बीमारियों से इलाज के साधन नहीं थे। कृषि अवस्था ने भोजन की समस्या को बड़ी सीमा तक हल किया। पहले घरों के निर्माण से संबंधित मनुष्य का ज्ञान बहुत सीमित था। गुफाओं और झोपड़ियों से होते हुए लकड़ियों और मिट्टी, पत्थर के घरों से होता हुआ अब भवन निर्माण का हमारा कौशल महलों, धार्मिक इमारतों, विशाल किलों और आज की बहुमंजिला भूकंपरोधी इमारतों के निर्माण कौशल तक पहुँचा है। कोई चार, पांच सौ साल पहले तक भी लोग एक से दूसरे स्थान की दूरियाँ पैदल, घोड़ों, रथों, बैलगाड़ियों, बग्घियों से तय करते थे। इसमें हफ्तों–महीनों लग जाते थे। आज बसों, रेलों और हवाई जहाजों से कुछ ही घंटों में हमे एक से दूसरे देश और एक से दूसरे महाद्वीप में पहुंच सकते हैं।

मानव स्वास्थ्य भी औसत से बेहतर हुआ है और मनुष्य की औसत आय बढ़ी है। करीब डेढ़ सौ साल पहले हैजा और चेचक जैसी बीमारियों से कुछ ही दिनों में लाखों लोग बेइलाज मर जाते थे। एंटीबायोटिक और एंटीसेप्टिक की खोज ने दर्जनों बीमारियों का त्वरित इलाज संभव बना दिया है। भुखमरी और अकाल अब कम हैं। भूकंप, सुनामी और तूफानों की भविष्यवाणी काफी हद तक सटीक संभव हैं ताकि बचाव के उपाय किए जा सकें। राजाओं और बादशाहतों के जमाने में साधारण जनता की आवाज बहुत कम सुनी जाती थी। न्याय, कानून और जनकल्याण एक व्यक्ति की इच्छा और समझ पर निर्भर था। आज राज्य के संचालन के लिए हमारे पास संविधान है, सरकारें चुनी जाती हैं। नागरिक वोट डालकर अपना प्रतिनिधि चुनते हैं। मनुष्यता आज संस्थाबद्ध हो चुकी है। देश या राज्य अपने नागरिकों की शिक्षा, स्वास्थ्य, संपत्ति की सुरक्षा और रोजगार की जिम्मेदारियाँ उठाते हैं। विकास की पंचवर्षीय योजनाएँ बनती हैं। विभिन्न विषयों के ज्ञान की करोड़ों पुस्तकें सुलभ हैं। किसी भी महामारी की दशा में सारा संसार उसका सामना करने को एक हो जाता है। इसलिए यह कहना कि अतीत में सबकुछ था, सही नहीं होगा। इसका मतलब होगा कि पिछले हजारों वर्षों में समाज ने कोई भी काम या प्रगति नहीं की, यह धारणा ठीक नहीं होगी।

एक विषय के रूप में समाज विज्ञान के सामने फिर भी कुछ चुनौतियाँ हैं। उत्पादन के संसाधनों और राज्य की आय का न्यायसंगत वितरण, शोषण और अति मुनाफे की प्रवृत्ति जातीय नस्लीय या धार्मिक संकीर्णताएं, जेंडर संबंधी भेदभाव तथा पर्यावरण की सुरक्षा ऐसे कुछ संवेदनशील मुद्दे हैं जिन्हें संबोधित (Address) करने की जिम्मेदारी समाज विज्ञान के हिस्से में आती है। इन्हें कुशलतापूर्वक शिक्षण का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षक साथियों के समक्ष यह भी चुनौती है कि वे प्राकृतिक विज्ञानों की भांति इस विषय को भी वैज्ञानिक ढंग से पढ़ाएं, जिससे बच्चों में इस विषय के प्रति सकारात्मक रुझान उत्पन्न हो सके। इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र एवं अर्थशास्त्र के विभिन्न प्रकरणों को पढ़ाते समय उन्हें समाज के विकास क्रम को बारीकी से समझाना होगा। इस समझ को बच्चों तक पहुंचाने के लिए आवश्यक है कि ऐसा दस्तावेज हो जो सामाजिक विज्ञान को रोचक ढंग से पढ़ाने में सहायता प्रदान कर सके। यह संदर्शिका इसी भूमिका में है।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत चारों विषयों की पाठ्यवस्तु पर आधारित अध्यायों का वर्गीकरण निम्नलिखित है –

| क्रम संख्या | कक्षा | सामाजिक विज्ञान | | | | कुल अध्याय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | ठतिहास | भूगोल | नागरिक शास्त्र | अर्थशास्त्र | |
| **1.** | 9 | 05 | 06 | 05 | 04 | 20 |
| **2.** | 10 | 05 | 07 | 05 | 05 | 22 |

कक्षा 9 एवं कक्षा 10 में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को रुचिकर एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से इस दस्तावेज में सामाजिक विज्ञान विषयक समझ पत्र के साथ इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र एवं अर्थशास्त्र के अवधारणा पत्र रखे गए हैं। समझ पत्र और अवधारणा पत्र इस बात को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं कि कदाचित विषय शिक्षकों की अनुपस्थिति में अन्य शिक्षक भी इस विषय की आधारिक समझ के साथ बच्चों से संवाद स्थापित कर सकें। साथ ही एनसीईआरटी द्वारा विकसित लर्निंग आउटकम के आधार पर पहली बार उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा विभाग, समग्र शिक्षा तथा एससीईआरटी के मार्गदर्शन में सामाजिक विज्ञान के लिए लर्निंग आउटकम का विकास किया गया है। इनसे सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की अधिकतम अधिगम संप्राप्ति का मैपिंग किया जा सकेगा। समस्त पाठ्यक्रम को विषयवार एवं दिवसवार विभाजित किया गया है।

कक्षा 9 में 205 से 210 शिक्षण दिवसों में सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम को विभाजित किया गया है वहीं कक्षा 10 में पाठ्यक्रम को मानचित्र अभ्यास कार्य सहित 215 से 220 दिनों में विभाजित किया गया है। शैक्षिक पंचाग के अनुसार निर्धारित अवशेष कार्य दिवसों में अर्द्धवार्षिक, वार्षिक परीक्षाएं, उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन एवं अन्य परीक्षा संबन्धी कार्य तथा बच्चों को अतिरिक्त सहयोग प्रदान किए जाने वाले कार्य किए जा सकेंगे।

# भूगोल

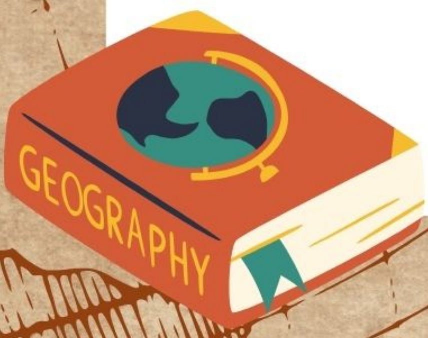

# केन्द्रिक लर्निंग आउटकम

1. **तथ्यों, आँकड़ों को पहचानता और पुनः प्राप्त करता है और प्रक्रियाओं को अभिव्यक्ति दे पाता है, जैसे–**
   - विभिन्न प्रकार की मिट्टी, खनिजों, ऊर्जा संसाधनों, नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों की पहचान करता है।
   - भारत के मानचित्र पर कोयला, लौह अयस्क, पेट्रोलियम, चावल, गेहूँ, चाय, कॉफी, रबर, सूती कपड़े का उत्पाद करने वाले इलाकों/क्षेत्रों का पता लगाता है।
   - भूगोल में महत्वपूर्ण शब्दों को परिभाषित करता है, जैसे संसाधन, नवीकरणीय और अप्राप्य संसाधन, निर्वाह कृषि, वृक्षारोपण, कृषि को स्थानांतरित करना।
1. **घटनाओं, तथ्यों और आँकड़ों को वर्गीकृत करता और उनकी तुलना करता है, जैसे–**
   - संसाधनों, खनिजों, खेती के प्रकारों को वर्गीकृत करता है, उदाहरण– निर्वाह और व्यावसायिक खेती।
   - भारत के मानचित्र पर चावल और गेहूँ उगाने वाले क्षेत्रों की तुलना करता है।
2. **घटना, कार्यक्रमों और उनकी घटना के बीच कारण और प्रभाव संबंध बताता है, जैसे–**
   - भारत में विभिन्न फसलों के उत्पादन के लिए जिम्मेदार कारकों के बारे में बताता है।
   - भू–जल और कच्चे तेल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के अति प्रयोग के प्रभाव का विश्लेषण करता है।
3. **विश्लेषण और जानकारी का मूल्यांकन करता है, जैसे –**
   - सतत विकास को ध्यान मे रखते हुए किसी भी क्षेत्र में लोगों के जीवन पर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रभाव का आकलन करता है।
   - जल/वन/वन्यजीव/मिट्टी के संरक्षण के स्वदेशी/आधुनिक तरीकों का विश्लेषण करता है।
4. **व्याख्या करता है, उदाहरण के लिए –**
   - मानचित्र
   - ग्रंथ
   - प्रतीक
   - आरेख जैसे कि– पाइ और बार
   - तस्वीरें
   - पोस्टर
   - अखबार की कतरनें

- विभिन्न क्षेत्रों/जलवायु क्षेत्रों में पानी की कमी
- भारत से पश्चिम एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और दुनिया के अन्य हिस्सों में व्यापार के समुद्री और भूमि लिंक को बताता है।
- भारत में सकल घरेलू उत्पाद, विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन और उद्योगों, रोजगार और जनसंख्या से संबंधित डेटा के पाइ और बार आरेखों को बनाता और उनकी व्याख्या करता है।

5. सामाजिक विज्ञान के साथ अंतर्संबंध जोड़ता है–
   - फसल पैटर्न, व्यापार और संस्कृति में परिवर्तन का विश्लेषण करता है।
6. मान्यताओं/पुरानी सोच पूर्वाग्रहों रुढ़ियों की पहचान करता है, उदाहरण के लिए–
   - क्षेत्र
   - ग्रामीण और शहरी क्षेत्र
   - भोजन की आदतें
   - जेंडर
   - भाषा
7. जिज्ञासा/पूछताछ के कौशल को प्रदर्शित करता है अर्थात् इससे संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत करता है, उदाहरण के लिए–
   - कुछ क्षेत्रों में उद्योगों की सघनता।
   - पानी की कमी
8. एकत्रित/दी गई जानकारी के आधार पर तर्कों/विचारों का निर्माण करता है, उदाहरण के लिए –
   - किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता
9. कार्यक्रमों और घटनाओं का पहले से अनुमान लगाता है, उदाहरण के लिए–
   - जल, वायु, भूमि और मानव स्वास्थ्य पर शोर के प्रदूषण के प्रभाव की भविष्यवाणी करता है।
   - वनों की कटाई के कारण प्राकृतिक आपदाओं का अनुमान लगाता है।

## अवधारणा पत्र

खुले मैदान में कभी—कभी धूप में खड़े होकर अपने चारों ओर देखेंगे तो हमें अपने चारों ओर ऊपर—नीचे अनेक चीजें दिखेंगी। दूर तक फैला मैदान, पृथ्वी—आकाश के बीच क्षितिज रेखा, नीला आकाश, बादल, चमकता सूर्य, गहरे हरे पत्तों वाले पेड़, मिट्टी के रंग और प्रकृति की अन्य अनेक चीजें। रात को यह दृश्य बदलेगा, प्रकृति की इन चीजों में से ज्यादातर को अंधेरे की काली चादर ढक लेगी। तब आकाश में तारे चमकते होंगे या चांद। प्रकृति की ये सारी चीजें भूगोल का हिस्सा है।

इन्हें जानने समझने की कोशिश में हम पहले इन चीजों का रूप/सौंदर्य देखते हैं। उनका आकार—प्रकार जाँचते परखते हैं, उनसे संबंधित विविध कल्पनाएं करते हैं। जिज्ञासा बढ़ी तो इन वस्तुओं के बनने की प्रक्रिया को जानते समझते हैं और एक निष्कर्ष तक पहुंचते हैं। यह निष्कर्ष किसी खास ज्ञान या विज्ञान से संबंधित हो सकता है। भूगोल इनमें से एक है। भूगोल हमारी पृथ्वी के सभी प्राकृतिक पिंडों, पदार्थों के आकार—प्रकार, उनके निर्माण की प्रक्रिया व उनके मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करता है। यह बहुधा स्वयं को उनके बाहरी भौतिक स्वरूप और उसके निर्माण के कारणों तक सीमित रखता है। यह रसायन विज्ञान और कण भौतिकी (क्वांटम फिजिक्स) की बारीकियों में नहीं जाता।

उदाहरण के लिए किसी बड़े मैदान के बीच हम कुछ पहाड़ियां देखते हैं तो उनकी उपस्थिति हमें सोचने को प्रेरित करती है कि यह यहां कैसे बनी, जबकि उनके चारों ओर, तीन ओर या दो ओर मैदान है। जरूर जमीन के भीतर किसी हलचल के कारण ऐसा हुआ होगा। जमीन के भीतर तीन ओर या चारों ओर से बीच के भाग पर दबाव पड़ रहा है। इस कारण बीच की भूमि वलित पहाड़ी के रूप में ऊपर उठ गई है। यह भूगर्भ की प्लेटों या चट्टानों के मध्य भाग की ओर दबाव के कारण हुई वलन की प्रक्रिया है और भूगोल का विषय है।

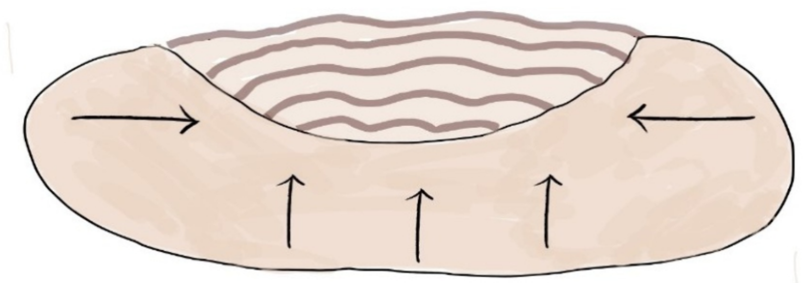

**वलन**

एक दृश्य चित्र के रूप में भूगोल कला है और प्राकृतिक क्रिया में विज्ञान। अन्य प्राकृतिक विज्ञान तो जैसे इसके बिल्कुल पड़ोसी हैं। ऊपर के चित्र में मैदान के चारों ओर से बीच पर पड़ता दबाव भौतिकी और भूगर्भ विज्ञान का भी विषय है। चित्र में दर्शित पहाड़ी पर यदि कोई व्यक्ति बागवानी करना चाहे तो उसे मिट्टी की जांच और पेड़—पौधों का चुनाव करना होगा। यह दोनों विषय रसायन विज्ञान और कृषि—बागवानी तथा वनस्पति विज्ञान के हैं। पृथ्वी के निर्माण का एक इतिहास है, इसे हम भूगोल और खगोल दोनों में पढ़ते हैं। हम कह सकते हैं कि भूगोल ने मानव सभ्यता के इतिहास को जन्म दिया है। पृथ्वी गोल है यह समझने में

मानव जाति को सदियां लग गईं। आधुनिक ज्ञान–विज्ञान, संचार और तकनीक के विकास ने पृथ्वी के आकार–प्रकार और अवयवों को समझने में बहुत मदद की है। अंग्रेजी का ज्योग्राफी शब्द जिओ( पृथ्वी) और ग्राफी (वर्णन करना) से मिलकर बना है।

आधुनिक सदियों में इसके विषयक्षेत्र का विस्तार हुआ है। अब मानव जाति के नृवांशिक (एंथ्रोपोलोजिकल) और सांस्कृतिक विकास को भी भूगोल के अध्ययन में शामिल माना जाता है। भूमध्य रेखीय प्रदेश के मूल निवासी ठीक वैसे ही नहीं है जैसे बर्फीले टुण्ड्रा प्रदेश के निवासी। यह अंतर उनके खास भौगोलिक क्षेत्र में लंबे समय से रहने के कारण आया है। भारत में केरल और नेपाल तथा लद्दाख वासियों के रहन–सहन और रीति रिवाज में अंतर है। इसका कारण भारत के उत्तर–दक्षिण की भिन्न भौगोलिक स्थितियां हैं। खान–पान, भाषा–साहित्य व संगीत पर भूगोल का गहरा असर पड़ता है। किसी बर्फीले क्षेत्र की भाषा में बर्फ के लिए, रेगिस्तानी इलाके में रेत के लिए और समुद्री क्षेत्र में समुद्र के लिए अधिक शब्द मिलेंगे।

ज्ञान के एक अनुशासन के रूप में भूगोल की विषयवस्तु का विवरण कुछ इस प्रकार है:– स्थल– भू आकृतियां– पर्वत, पठार, मैदान, घाटियाँ, मरुस्थल, महाद्वीप, प्रायद्वीप, द्वीप उच्चावच या धरातल, मिट्टी की किस्में, शैल, स्थलीय जीव व वनस्पतियां, मौसम, जलवायु, भौगोलिक अवस्थितियां– अक्षांश, देशांतर रेखाओं सहित।

जल – सागर, समुद्री धाराएं, झीलें, नदियां, बादल, वर्षा, बर्फ, प्रभंजन, समुद्री तूफान, ज्वार भाटा, जलीय जीव जंतु व वनस्पतियां

वायु – पवन, पवनदाब, मानसून, वायु और ताप के विक्षोभ, आंधियां आदि

अंतरिक्ष – सौरमंडल, पृथ्वी की गतियां, समय, ब्रह्मांड से पृथ्वी के संबंध

आर्थिकी – कृषि, खनिज, ऊर्जा, व्यापार

समाज – जनसंख्या वितरण, सांस्कृतिक विशेषताएं, भाषाएं

भूगोल में और भी बहुत कुछ शामिल है। यह जिज्ञासा, उत्सुकता, सौंदर्य, स्पर्श, स्वाद, खुशी, रहस्य–रोमांच, जोखिम–तकलीफ उठाने के साहस, साझेदारी और आनंद का विषय है। भूगोल हमें गांव, शहरों ,स्टेशनों, बंदरगाहों और झुग्गी झोपड़ियों की बसावट की कहानी सुनाता है। भूगोल में नई–नई जगह को खोजने का उत्साह है। इसमें पर्वतारोहण का रोमांच और जोखिम है। इसमें नदी और सागर की लहरों पर संतरण की इच्छा है। भूगोल में बाढ़, सुनामी और भूकंप जैसी विभीषिकाएं हैं ,उनसे बचाव के उपाय हैं। इसमें तन सहलाती बसंत की हवा है तो लू और सर्द बर्फीली हवा के थपेड़े भी। भूगोल हमें आकाश की ऊंचाई की टोह लेने की इच्छा जगा सकता है। यह समुद्र की गहराइयों में जाकर अंधेरे में प्रकाश उत्पन्न करने वाले जीवों और वनस्पतियों के फोटो लेने की प्रेरणा प्रदान कर सकता है। भूगोल बताता है कि दिन और रात ही हमारे पास नहीं आते, हम भी पृथ्वी का चक्कर लगाते हुए दिन से रात में और रात से दिन में प्रवेश कर सकते हैं। भूगोल बताता है कि प्रकृति और पर्यावरण के बीच रहते

हुए मनुष्य ने गीत–संगीत का निर्माण कैसे किया। भूगोल लंबे इतिहास में पृथ्वी के मानव बच्चों के बाकी जीवों की तुलना में महाबली बन जाने की कहानी है। बच्चे यह कहानी जरूर सुनना पढ़ना चाहेंगे। जरूरी यह है कि इसे सिर्फ किताब तक सीमित न रखा जाए।

यहां भूगोल से संबंधित कुछ गतिविधियां दी गई हैं जो नौवीं और दसवीं कक्षा के उन बच्चों के लिए खासकर उपयोगी हैं जिनकी विषय में रुचि नहीं बन पा रही है।

## भूगोल में शुरूआती रुचि पैदा करने के लिए कुछ गतिविधियां

यह गतिविधियां सीधे पाठ्य पुस्तक की विषयवस्तु से संबंधित नहीं है पर विषय में रुचि पैदा करने में मददगार है: –

बच्चों के साथ किसी पेड़ के पास जाएं। उसे जड़ों से लेकर ऊपर तक अच्छी तरह देखें। देखें कि उसकी जड़ों वाले हिस्से, बीच के हिस्से और ऊपर की शाखाओं में क्या फर्क है? इससे खुद पेड़ को क्या फायदे हैं? पेड़ की जड़ के पास क्या कुछ जीवों का निवास है? क्या उसके तने में कोटर है? तो उनमें कौन रहता है? पेड़ की शाखों पर किन जीवों ने घर बनाए हैं? चूहे जमीन में ही अपना बिल बनाना क्यों पसंद करते हैं और कठफोड़वा तने के भीतर क्यों ठिकाना बनाता है? पक्षी पेड़ की शाखों पर घोंसला बनाते हैं, ऐसा क्यों? यह तीनों पड़ोसी एक ही मकान की अलग–अलग मंजिलों पर क्यों रहते हैं? अगर चूहे को पेड़ के शाखों पर, चिड़ियों को जमीन पर बिल में रहने को कहा जाए तो क्या होगा? इस बातचीत को मनुष्य कैसी जगह आवास बनाना पसंद करते हैं– इससे जोड़ा जाए। बच्चे इस बातचीत को अपने शब्दों में लिखें।

- **मस्तिष्क मंथन (ब्रेनस्टॉर्मिंग) के कुछ सवालों पर चर्चा–**

○ पृथ्वी गोल क्यों है चपटी क्यों नहीं है?

○ जब यह सूर्य से अलग हुई होगी तब इसका आकार कैसा रहा होगा?

○ पृथ्वी अपनी धुरी पर क्यों घूमती है? क्या यह संभव है कि किसी रोज घूमना बंद कर दे तो क्या होगा?

- **ग्लोब देखिए और बताइए** – आप भारत में हैं। यहां दिन का 9:00 बजा हैं। जापान में लोग रात का भोजन कर रहे हैं। आपके यहां शाम 7:00 बजे के बाद रात होगी। कोई उपाय है कि आप पता कर बतायें कि कितने घंटे बाद रात के पास पहुंच जाएँगे?

- **क्षितिज के ऊपर नीचे**

पृथ्वी और प्रकृति की सुंदरता का अनुभव करने के लिए बच्चे किसी साफ दिन में दूर खड़ी क्षितिज रेखा को देखें। रफ कापी पर यह क्षितिज रेखा बनाएं– ये कुछ निम्नलिखित प्रकार की या अलग तरह की हो सकती है

बच्चों से कहें कि देखें क्षितिज रेखा के ऊपर और नीचे कौन–कौन सी चीज हैं? इनका रफ चित्र बनाएं। पूछें कि क्षितिज के नीचे पृथ्वी किस रंग में दिख रही हैं? फिर इन सब में हल्के या गहरे रंग भरें। परिस्थितियां देखकर इसे बादलों भरे आकाश (वर्षाहीन) के दिन भी कराया जा सकता है।

यदि स्कूल के सामने पर्वतमालाएं दिखती हैं तो एक रफ रेखाचित्र इस तरह बनाया जा सकता है–

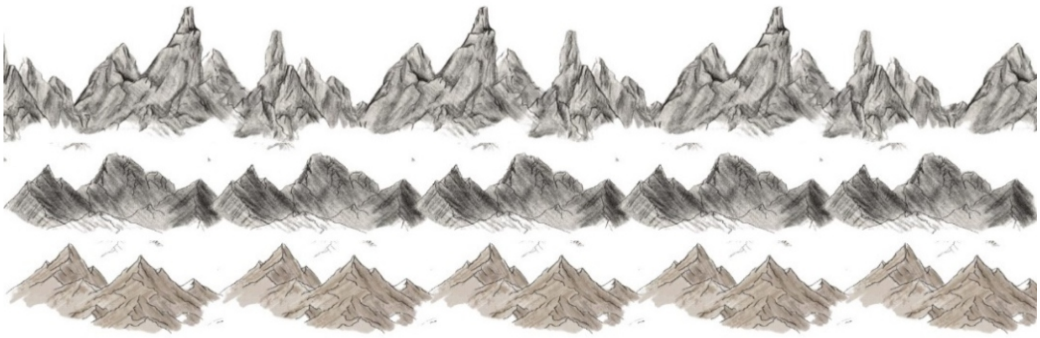

बच्चे अलग–अलग ऊंचाई के शिखरों को अलग–अलग रंगों से रंगे। हर एक पर उसकी अनुमानित ऊंचाई दर्ज करें चाहे तो इन्हें कुछ नाम भी दे सकते हैं।

- **ग्लोब, टॉर्च और दिन–रात**

अंधेरे कमरे में एक बड़े ग्लोब पर टॉर्च की रोशनी डालें। ग्लोब घुमाएं। इस पर चर्चा करें कि –जब देश या महाद्वीप में दिन था तो कौन से भाग में रात थी। ऐसा क्यों हो रहा था? ग्लोब के किन भागों पर प्रकाश ज्यादा पड़ रहा था और किन पर कम? विद्यार्थी बाद में इस पूरे अनुभव को अपने शब्दों में कॉपी में नोट करें।

- टीन के छोटे डिब्बों में विद्यार्थी कई जगह से मिट्टी एकत्र करें। उनके कणों व रंगों की तुलना करें, उन पर पानी डालकर देखें कि कौन सी मिट्टी पानी जल्दी सोखती है। पुनः बच्चे जिन क्षेत्रों/जगहों से मिट्टी लाए हैं वहां की वनस्पतियों का सर्वेक्षण करें। वहां की वनस्पतियों का नाम लिख लाएं, कक्षा में अपने अनुभव प्रस्तुत करें।

- **घास, पौधे और पेड़**

टोलियों में भूक्षेत्र का सर्वेक्षण करें। वहां कौन–कौन सी घासें ,पौधे और पेड़ मौजूद हैं उन्हें तालिका में लिखें। उनके एक या दो पत्ते लाएं। उन्हें किताब या कॉपी के बीच दबा दें। ऐसी बीस पत्तियां जमा हो जाने पर उनका हरबेरियम बनाया जा सकता है। मोटे कागज की एक कॉपी में दबा दें तथा सूख जाने पर चिपका दें। उनका नाम लिखें। पत्तियों के विन्यास(डिजाइन) को गौर से देखें और उस पर अपनी टिप्पणी लिखें।

**नजरी–नक्शे बनाना**

– विद्यार्थी अपनी कक्षा का एक नजरी नक्शा बनाएं। इसमें दरवाजा, बोर्ड, खिड़की, शिक्षक की जगह, बच्चों की कतारें और उनमें नक्शा बनाने वाला बच्चा अपनी जगह चिन्हित करे। यह नक्शा एक दूसरे को दिखाएं।

– वे अपने विद्यालय का नगरी नक्शा बना सकते हैं जो कुछ इस तरह का हो सकता है –

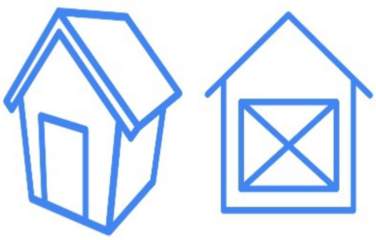

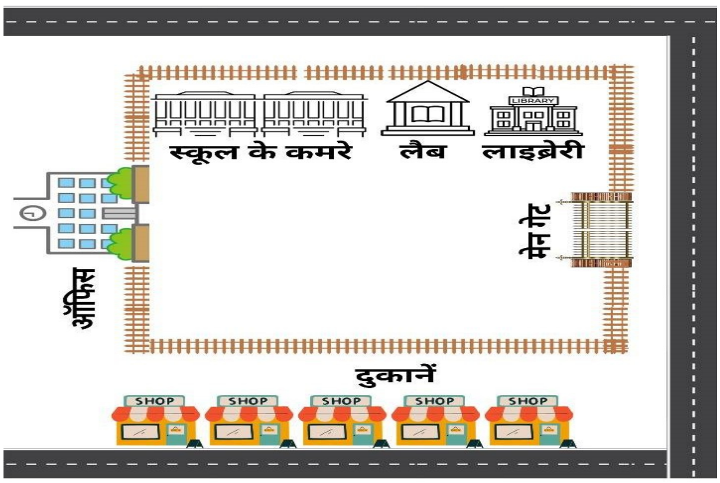


● स्कूल से बाहर किसी असमतल और बड़ी जगह पर थोड़ी देर भ्रमण करें। इसमें कोई टेकरी, कहीं ऊंची और कहीं नीची सतह हो तो अच्छा है। बच्चे कक्षा में लौटकर जगह का एक अनुमानित नक्शा/रेखाचित्र बनाएं इसमें अलग–अलग तलों के आधार पर कुछ घेरे बना सकते हैं। घेरों पर अनुमानित ऊंचाई लिख लें। हर ऊंचाई को अलग रंग से रंगें।

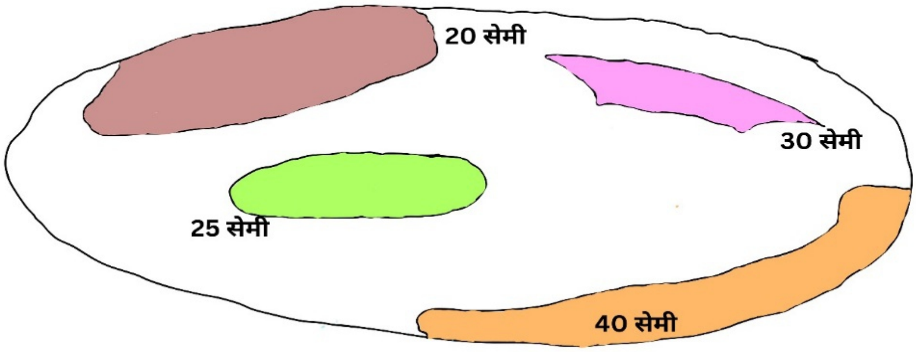


● अपने माता–पिता या पड़ोसियों से पूछ कर गांव के खेतों का एक रफ नजरी नक्शा बनाएं। खेतों में जो फसलें उगी हैं या बोई जाती हैं उनका नाम लिखे खेत पर खेत मालिक का नाम भी लिख दें।

● विद्यार्थियों के गांव को पानी जिन स्रोतों से प्राप्त होता है उनका सर्वेक्षण करें। यह सरकारी नल, हैंड पंप, कुआं, नहर, तालाब, नदी हो सकते हैं। इनमें से हर एक किस दशा में है उसका विवरण लिखें। दसवीं कक्षा के विद्यार्थी यदि शहर के स्कूल में है तो जल वितरण प्रणाली का सर्वेक्षण कर सकते हैं। जल संस्थान में जाकर संबंधित कर्मचारियों से बात कर बोर की गहराई, टैंक की क्षमता, पानी की आपूर्ति का इलाका, पानी पर बिल की दर, उपभोक्ताओं की संख्या आदि जानकारी एकत्र कर उसे कक्षा में साझा कर सकते हैं।

● बड़े–बूढ़ों से पूछ कर गांव पड़ोस की कहावतों का संकलन करें। इनका अर्थ और संदर्भ पूछें। इनमें खेती–बारी, जंगल, फसल, पशुपालन आदि से संबंधित शब्द खोजें और उसके संदर्भ के साथ कॉपी में लिखें!

● पर्वतों, नदियों, झरनों, सागर की लहरों, सूर्योदय, सूर्यास्त के दृश्य, विविध व विचित्र पशु–पक्षिओं, वनस्पतियों, भू भागों से संबंधित फोटोग्राफ कक्षा में दिखाकर उन पर रोचक बातचीत की जा सकती है।

## पुस्तक की विषय सामग्री

कक्षा दस की भूगोल की पुस्तक में 7 अध्याय है।

**पहले अध्याय** 'संसाधन एवं विकास' में प्रकृति और पर्यावरण में मौजूद संसाधनों को परिभाषित किया गया है तथा समाजोपयोग और उत्पादन के संदर्भ में उनकी व्याख्या की गई है। अध्याय में संसाधन के रूप में भूमि तथा विभिन्न प्रकार की मिट्टियों (मृदाओं) से विद्यार्थियों का परिचय कराया गया है। मृदाओं के बनने के कारण तथा विभिन्न प्रकार की मिट्टियों की उपयोगिता बताई गई है। अध्याय में अत्यधिक शहरीकरण, खनिजों के दोहन और औद्योगिकीकरण के कारण पैदा हुए मृदा प्रदूषण और भूमि कटान के प्रति चिंता को विद्यार्थियों से साझा किया गया है।

**दूसरा अध्याय** वनों और वन्यजीवों पर केंद्रित हैं। यह वनों के साथ वन्य जीवों को भी संसाधन (पर्यावरण की रक्षा के लिए) मानता है। अध्याय मानव जीवन के लिए वनों और वन्य जीवों की उपयोगिता को स्पष्ट करता है। यह बात जगजाहिर है कि वन पृथ्वी और पर्यावरण के पहरेदार हैं। पिछली सदियों में लगातार फैलती कृषि भूमि, शहरीकरण और वनों के व्यावसायिक उपयोग के कारण उनका रकबा कम हुआ है। पेड़ पौधों की बहुतेरी प्रजातियाँ भी शिकार या अन्य कारणों से कम हो रही हैं। अध्याय यह चिंता बच्चों के सम्मुख रखता है और इन्हें बचाने की सरकारी और गैरसरकारी कोशिशों के बारे में बताता है।

**तीसरा अध्याय** 'जल संसाधन' पर है। यह पृथ्वी पर पानी की मौजूदगी, पेय जल की सीमित मात्रा, कुछ क्षेत्रों में पानी के अतिउपयोग और कुछ क्षेत्रों में उसके अभाव के बाबत समझाता है। यह बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं के महत्व, उनके निर्माण से पैदा हुई पर्यावरणीय तथा सामाजिक समस्याओं की व्याख्या करता है। यह चिंताजनक है कि इन परियोजनाओं का लाभ एक खास वर्ग के ही लोगों को ज्यादा मिले। जल वितरण प्रणाली की असमानता के साथ यह जल संग्रहण के पारंपरिक देशी तरीकों के बारे में बताता है।

**चौथे अध्याय** में पुस्तक भारतीय कृषि की स्थिति बताती है। भारत में फसलों के चक्र, फसलों के प्रकार, उनके वर्गीकरण के साथ यह भारतीय खेती के प्रकारों और फसल चक्र की व्याख्या करती है। कृषि जोतों के असमान वितरण की ओर ध्यान खींचते हुए यह अध्याय भूमिहीनों, लघु और सीमांत किसानों को सरकार से सहायता मिलने की अपेक्षा करता है। यह कृषि को प्रौद्योगिकीय सहायता मिलने और कृषि क्षेत्र में संस्थागत सुधारों की हिमायत करता है।

**पाँचवें अध्याय** में खनिज और ऊर्जा संसाधनों की भूमिका और भारत में उनकी उपलब्धता के बारे में बताया गया है। इसमें धात्विक और आधात्विक खनिजों– लोहा, मैगनीज, तांबा, बाक्साइट, अभ्रक, चूना पत्थर की जानकारी दी गई है। ऊर्जा संसाधनों के रूप में कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, जलविद्युत तथा तापीय विद्युत, पवन ऊर्जा व बायोगैस के स्रोतों और उपयोग के विवरण दिए गए है। अध्याय इन संसाधनों के उचित उपयोग का सुझाव देता है। इसके लिए वह एक स्लोगन देता है– 'ऊर्जा की बचत ही ऊर्जा उत्पादन है।'

**छठे अध्याय** में भारतीय विनिर्माण उद्योग (मैन्यूफैक्चरिंग इंडस्ट्री) के बारे में समझाया गया है। इसकी स्थापना की जटिलता, उद्योग के वर्गीकरण तथा विभिन्न प्रांतों में इसकी स्थिति को स्पष्ट किया गया है। इसी के साथ कपड़ा, पटसन, लोहा–इस्पात, एल्यूमिनियम, रसायन, मोटरगाड़ी, सूचना प्रौद्योगिकी तथा इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों के भारत में वितरण तथा दुनिया के बाजार में भारत की स्थिति स्पष्ट की गई है।

**पुस्तक का सातवाँ अध्याय** देश की परिवहन व्यवस्था के चित्र दिखाता है। यह स्थल परिवहन का वर्गीकरण करता है। रेल और मोटर यातायात इसके प्रमुख घटक हैं। यह सड़कों के वर्गीकरण/श्रेणीकरण– राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग तथा जिला मार्गों तथा अन्य सड़कों के बाबत बताता है। इसी के साथ यह भारतीय रेल परिवहन प्रणाली की विशेषताओं को सामने

रखता है। उसकी चुनौतियों और समस्याओं के बारे में बताता है। यह भारत की तेल और गैस पाइप लाइनों को भी परिवहन में शामिल करता है। अध्याय में भारत के लंबे समुद्री तट पत्तनों (बंदरगाहों) के बारे में बताया गया है और संक्षेप में वायु मार्गों का भी उल्लेख किया गया है। भारतीय संचार सेवाओं, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन के साथ यह अध्याय पूरा होता है। इस अध्याय का शीर्षक किसी कविता की पंक्ति जैसा है– 'राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ।'

पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यासों/क्रियाकलापों का एक संक्षिप्त व्यौरा निम्नलिखित है–

| | | | |
|---|---|---|---|
| चित्र, फोटोग्राफ, कार्टून | 75 | पाइ और अन्य आरेख | 7 |
| फ्लो चार्ट | 9 | स्तम्भ आरेख | 1 |
| मानचित्र | 13 | आंकड़ा तालिकाएँ | 23 |
| पाठों और अभ्यासों में खोजबीन के क्रियाकलाप | 28 | प्रश्न पहेली अभ्यास | 1 |
| जिज्ञासा जगाने वाले तथ्य – 'क्या आप जानते हैं?' | 7 | वर्ग पहेलियाँ | 5 |
| खोजने–जानने का काम 'ज्ञात करो' | 31 | परियोजना कार्य | 5 |
| विशिष्ट शब्दों, पदों की व्याख्या, विशेष जानकारियाँ और प्रश्न | 31 | सोचें बताएँ | 7 |
| रोचक तथ्य | 3 | | |

शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए उपर्युक्त सभी गतिविधियों का उपयोग किया जाना चाहिए।

# दिवसवार अध्याय की विषयवस्तु का विभाजन

| अध्याय संख्या, नाम, निर्धारित दिवस, | थ्दवस | पाठ्यवस्तु / पाठ्यबिन्दु |
|---|---|---|
| अध्याय–1<br>संसाधन एवं विकास<br>दिवस 7 | 1 | • संसाधन का परिचय, परिभाषा व अर्थ<br>• विकास का तात्पर्य<br>• संसाधन के प्रकार |
| | 2 | • प्राकृतिक संसाधन<br>• उत्पत्ति के आधार पर – जैव और अजैव<br>• समाप्यता के आधार पर – नवीकरण योग्य और अनवीकरण योग्य<br>• स्वामित्व के आधार पर – व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय<br>• विकास के स्तर के आधार पर – संभावी और विकसित संसाधन, विकसित भंडार और संचित कोष |
| | 3 | • मानवीय संसाधन<br>• संरचनायें एवं संस्थाएं<br>• मात्रा एवं गुणवत्ता<br>• संसाधनों का विकास<br>• सतत पोषणीय विकास<br>• पृथ्वी सम्मेलन(1992)रियो डी जेनेरो एवं एजेंडा–21 |
| | 4 | • संसाधनों के विकास से उत्पन्न समस्याएं<br>• अपशिष्ट क्या होते हैं?<br>• संसाधन नियोजन का अर्थ<br>• भारत मे संसाधन नियोजन |
| | 5 | • संसाधनों का संरक्षण<br>• भू संसाधन<br>• भू–उपयोग संवर्ग<br>• भू संसाधनों के उपयोग के उद्देश्य |

| | | |
|---|---|---|
| | | • भारत मे भू–उपयोग प्रारूप<br>• राष्ट्रीय वन नीति (1952) |
| | 6 | • भूमि निम्नीकरण और संरक्षण उपाय<br>• मृदा संसाधन<br>• मृदाओं का वर्गीकरण<br>– जलोढ़ मृदा<br>– काली मृदा<br>– लाल और पीली मृदा<br>– लेटराइट मृदा<br>– मरुस्थलीय मृदा<br>– वन मृदा |
| | 7 | • मृदा अपरदन और संरक्षण<br>• मानचित्र कार्य, प्रोजेक्ट कार्य<br>• पुनरावृत्ति |
| पाठ–2,<br>वन्य एवं वन्य जीव संसाधन<br>दिवस 06 | 1 | • जैव विविधता एवं वन्य जीवन संरक्षण |
| | 2 | • बाघ परियोजना तथा प्रमुख राष्ट्रीय पार्क या अभयारण्य जिनमें बाघ परियोजना चलाई जा रही है। |
| | 3 | • वन संरक्षण एवं प्रबन्धन के आधार पर वन के प्रकार<br>–आरक्षित वन<br>–रक्षित वन<br>–अवर्गीकृत वन |
| | 4 | • जनजाति समुदाय द्वारा वन संरक्षण<br>– चिपको आन्दोलन<br>– एपिको आन्दोलन<br>– बीज बचाओ आन्दोलन<br>– नवदानय |
| | 5 | • संयुक्त वन प्रबंधन<br>• वन और वन्य जीव संरक्षण में रीति–रिवाजों का योगदान |

| | | |
|---|---|---|
| | | • वन– ह्रास के लिए जिम्मेदार कुछ मानवीय क्रियायें |
| | 6 | • पुनरावृत्ति एवं मानचित्र कार्य |
| पाठ–3,<br>जल संसाधन,<br>दिवस 08 | 1 | • जल का जीवन में महत्त्व, पृथ्वी पर जल का असमान वितरण, जल एक नवीकरणीय संसाधन, जलीय चक्र, पुनर्भरण |
| | 2 | • जल की दुर्लभता, जल की दुर्लभता के कारण |
| | 3 | • जल संरक्षण एवं प्रबंधन |
| | 4 | • जल संरक्षण एवं प्रबंधन से लाभ |
| | 5 | • बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं के उद्देश्य एवं महत्त्व |
| | 6 | • बहुउद्देशीय परियोजनाओं से हानि, नर्मदा बचाओ आन्दोलन, टिहरी बांध आन्दोलन |
| | 7 | • मानचित्र कार्य |
| | 8 | • पुनरावृत्ति |
| पाठ–4,<br>कृषि<br>दिवस 12 | 1 | • प्राथमिक क्रिया के रूप में कृषि का सामान्य परिचय<br>• कृषि प्रक्रिया<br>• कृषि प्रणाली<br>– प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि<br>– गहन कृषि<br>– वाणिज्यिक<br>– रोपण कृषि |
| | 2 | • फसलों के प्रारूप व ऋतुएं<br>– रबी,<br>– खरीफ<br>– जायद<br>• फसलों का वर्गीकरण<br>❖ खाद्य फसलें – गेहूं, चावल, मक्का, दलहन, तिलहन<br>❖ नकदी फसलें – चाय, कॉफी, रबड़, जूट, कपास<br>❖ बागवानी फसलें – फल, फूल, सब्जियां |
| | 3 | • भारत की मुख्य फसलें |

| | | |
|---|---|---|
| | | • चावल<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा (प) उत्पादक राज्य<br>• गेहूँ<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा (प) उत्पादक राज्य |
| | 4 | • मोटे अनाज एवं उनकी विशेषताऐं<br>• बाजरा<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा (प) उत्पादक राज्य<br>• मक्का<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा (प) उत्पादक राज्य |
| | 5 | • पुनरावृत्ति |
| | 6 | • दालें, प्रमुख फसलें एवं उत्पादक राज्य<br>• खाद्यान्नों के अलावा अन्य खाद्य फसलें<br>• गन्ना<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा (प) उत्पादक राज्य<br>• तिलहन<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा (प) उत्पादक राज्य |
| | 7 | • चाय<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द ) वर्षा (प) उत्पादक राज्य<br>• कॉफी<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा (प) उत्पादक राज्य |
| | 8 | • बागवानी फसलें<br>• अखाद्य फसलें<br>• रबड़<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा (प) उत्पादक राज्य |

| | | |
|---|---|---|
| | | • कपास<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा<br>(प) उत्पादक राज्य<br>• जूट<br>(अ) जलवायु (ब) मृदा (स) तापमान (द) वर्षा<br>(प) उत्पादक राज्य |
| | 9 | • प्रौद्योगिकीय और संस्थागत सुधार<br>– शस्यावर्तन (फसल चक्र)<br>– चकबंदी<br>– सहकारिता<br>– जमीदारी प्रथा का अंत<br>– हरित क्रांति<br>– श्वेत क्रांति<br>• भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व |
| | 10 | • भारतीय कृषि की विशेषताएं<br>• भारतीय कृषि पर वैश्वीकरण के प्रभाव<br>• कृषि क्षेत्र में प्रोत्साहन |
| | 11 | • भारत में किसानों के सामने चुनौतियाँ<br>• भारत में कृषिगत सुधारों के उपाय<br>• सरकार द्वारा किसानों के हित में किए गए संस्थागत सुधार |
| | 12 | • पुनरावृत्ति |
| पाठ–5,<br>खनिज तथा ऊर्जा संसाधन,<br>दिवस 14 | 1 | • खनिजों का परिचय व निर्माण प्रक्रिया |
| | 2 | • खनिजों का वर्गीकरण |
| | 3 | • खनन एवं खनिजों की उपलब्धता |
| | 4 | • लौह खनिज (लौह अयस्क, मैंगनीज) |
| | 5 | • अलौह खनिज ( ताँबा, बॉक्साइट) |
| | 6 | • अधात्विक खनिज (अभ्रक, चट्टानी खनिज ) |
| | 7 | • खनिजों का संरक्षण एवं पुनरावृत्ति |
| | 8 | • ऊर्जा संसाधन |
| | 9 | • परंपरागत ऊर्जा के स्रोत |

| | | |
|---|---|---|
| | | (कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, विद्युत) |
| | 10 | • पुनरावृत्ति |
| | 11 | • गैर– परंपरागत ऊर्जा के साधन<br>(परमाणु अथवा आणविक ऊर्जा, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा) |
| | 12 | • बायोगैस, ज्वारीय ऊर्जा, भू–तापीय ऊर्जा |
| | 13 | • ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण |
| | 14 | • पुनरावृत्ति एवं मानचित्र कार्य |
| पाठ–6,<br>विनिर्माण उद्योग<br>दिवस 12 | 1 | – अर्थव्यवस्था के क्षेत्र<br>– द्वितीयक क्षेत्र तथा विनिर्माण उद्योग<br>– विनिर्माण का महत्त्व |
| | 2 | उद्योगों का वर्गीकरण<br>• कच्चे माल के स्रोत के आधार पर–<br>(अ)कृषि आधारित<br>(ब)खनिज आधारित<br>• प्रमुख भूमिका के आधार पर–<br>(अ) आधारभूत उद्योग<br>(ब) उपभोक्ता उद्योग<br>• स्वामित्व के आधार पर–<br>(अ) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग<br>(ब) निजी क्षेत्र के उद्योग<br>(स) संयुक्त क्षेत्र के उद्योग<br>• पूँजी निवेश के आधार पर –<br>(अ) सूक्ष्म उद्योग<br>(ब) लघु उद्योग<br>(स) वृहद उद्योग |
| | 3 | कृषि आधारित उद्योग (वस्त्र उद्योग)<br>• सूती, ऊनी, रेशमी वस्त्र<br>• पटसन उद्योग<br>• चीनी उद्योग |
| | 4 | खनिज आधारित उद्योग<br>लोहा इस्पात उद्योग – विनिर्माण प्रक्रिया एवं वितरण, |

| | | |
|---|---|---|
| | | संकेन्द्रण, मानचित्र कार्य |
| | 5 | एल्यूमिनियम प्रगलन – विनिर्माण की प्रक्रिया, |
| | 6 | • रसायन उद्योग –<br>(अ) अकार्बनिक रसायन उद्योग<br>(ब) कार्बनिक रसायन उद्योग<br>• उर्वरक उद्योग, उत्पादन एवं उपभोग<br>• सीमेंट उद्योग |
| | 7 | मोटरगाड़ी उद्योग– प्रकार, उत्पादन एवं वितरण |
| | 8 | इलेक्ट्रॉनिक उद्योग– उत्पाद, उपकरण एवं वितरण |
| | 9 | • हार्डवेयर<br>• सॉफ्टवेयर<br>• साफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क, मानचित्र कार्य |
| | 10 | औद्योगिक प्रदूषण<br>• वायु प्रदूषण<br>• जल प्रदूषण<br>• मुद्रा प्रदूषण<br>• तापीय प्रदूषण<br>• ध्वनि प्रदूषण |
| | 11 | पर्यावरणीय निम्नीकरण कारण एवं रोकथाम सतत संपोषणीय विकास की आवश्यकता |
| | 12 | मानचित्र कार्य एवं पुनरावृत्ति |
| पाठ–7,<br>राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ,<br>दिवस 9 | 1 | • पाठ परिचय<br>• परिवहन के साधनों की सामान्य जानकारी |
| | 2 | • स्थल परिवहन<br>(अ) सड़क परिवहन (ब) सड़क के प्रकार<br>(द) सड़क मार्ग का महत्व |
| | 3 | • रेल परिवहन<br>(अ) रेल प्रखंड और उनके मुख्यालय<br>(ब) भारतीय रेलों का आर्थिक महत्व<br>(स) कम्प्यूटर आरक्षण व्यवस्था |
| | 4 | • पाइप लाइन परिवहन<br>(अ) भारत की प्रमुख पाइप लाइनें |

| | | |
|---|---|---|
| | | (ब) पाइप लाइन का महत्व |
| | 5 | • जल परिवहन का परिचय<br>(अ) आन्तरिक जलमार्ग<br>(ब) सामुद्रिक जलमार्ग (प्रमुख समुद्री पत्तन) |
| | 6 | • वायु परिवहन<br>– उत्तर–पूर्वी राज्यों में वायु परिवहन अधिक महत्वपूर्ण क्यों?<br>– एयर इंडिया से जुड़े देशों के नाम |
| | 7 | • संचार सेवाऐं – अर्थ एवं प्रकार |
| | 8 | • अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अर्थ एवं व्याख्या<br>• पर्यटन का व्यापार के रूप में योगदान |
| | 9 | मानचित्र कार्य |

**कुल दिवस–68**

## शिक्षण योजना 01

| अध्याय 1 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| संसाधन एवं विकास | मृदा संसाधन | 06 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउटकम :–** छात्र मृदा बनने की प्रक्रिया, उसकी किस्मों और विभिन्न राज्यों में उनकी स्थिति को बता रहे है।

**शिक्षण उद्देश्य–** प्रत्यक्ष अनुभव/अवलोकन द्वारा मृदा निर्माण की प्रक्रिया को समझना, उसके प्रकारों को पहचानना तथा मानचित्र में विभिन्न राज्यों में उनके क्षेत्र चिन्हित करना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** कविता–पाठ, भारत का मानचित्र, सुडोकु, गतिविधियाँ कार्ड।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ :–**

**शिक्षण की शुरुआत में (समय 5 से 10 मिनट)**

– शिक्षक बड़े समूह में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा रचित निम्नलिखित पंक्तियों का सस्वर वाचन तथा कविता पर बातचीत करेंगे–

"जिसकी रज में लोट–लोट कर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक–सरक कर खड़े हुए हैं।
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये"
हम खेलें – कूदें हर्षयुक्त, जिसकी प्यारी गोद में
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में ?

- रज का अर्थ बताते हुए मृदा को समझाना व मृदा एक संसाधन कैसे बन जाती है इसके संबंध में छात्रों के मिट्टी संबंधी अनुभवों को शामिल करते हुए विद्याथियों की समझ बनाना।
- मृदा निर्माण कैसे होता है, उसको निम्नलिखित नियंत्रित करने वाले कारकों पर विद्यार्थियों के अनुभवों को सम्मिलित करते हुए पारस्परिक चर्चा द्वारा समझ बनाना।

1. जलवायु
2. मूल शैलों की प्रकृति
3. भूमि की बनावट
4. वनस्पति के प्रकार

शिक्षण के दौरान (समय 20 से 25 मिनट)

गतिविधि

संबंधित प्रकरण को पाठ्यपुस्तक के वाचन द्वारा स्पष्ट करना ।

गतिविधि–

छात्रों की सहभागिता तथा दिए गए कार्य में संलग्नता का अवलोकन

- सम्पूर्ण कक्षा को सात बराबर समूहों को बाँटना।
- प्रत्येक समूह को भारत में पायी जाने वाली मिट्टियों के एक–एक नाम देना । उदाहरण –

1. पर्वतीय मिट्टी
2. जलोढ़ मिट्टी
3. मरुस्थलीय मिट्टी
4. काली मिट्टी
5. लाल/पीली मिट्टी
6. लैटेराइट मिट्टी
7. वन मृदा

- प्रत्येक समूह को क्रमानुसार भारत की मृदा वाला मानचित्र देकर अपने नाम की मृदा को राज्यों के मानचित्र में खोजने का निर्देश देना।
- प्रत्येक समूह को क्रमानुसार खड़ा करना और उनके नाम से संबंधित मृदा की विशेषता के बारे में बताना।
- बच्चों से पूछना कि इस तरह की विशेषताओं वाली मिट्टी क्या उन्होंने कहीं देखी है? हाँ तो वे भी उसके बारे में कुछ कहें!
- प्रत्येक समूह के छात्रों से उनके समूह के नाम की मृदा से संबंधित राज्यों के नाम बताने को कहना। वे मानचित्र देखकर भी जवाब दे सकते हैं।
- छात्रों से कहना कि कक्षा की सारी बातचीत पर एक 'नैरेटिव/वर्णन' अपने समूह के साथ बैठकर बनाएं। वे अपनी पाठ्यपुस्तक और एटलस की मदद ले सकते हैं।

शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)

- प्रत्येक मृदा की विशेषता वाले 7 कार्ड बनायेंगे और छात्रों को बुलाकर 1 कार्ड उठाने को कहा जायेगा, कार्ड में जो भी विशेषताऐं लिखी होंगी, उक्त छात्र उस विशेषता को पढ़ेगा और कक्षा के बाकी छात्र संबंधित मृदा का नाम बताएंगे।
- सुडोकु विधि द्वारा छात्रों से मृदा का नाम और उसके पाये जाने वाले राज्य का नाम सुडोकु में तलाशने को बोलना।

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| B | C | K | L | Z | C | G | Z | W | V | T | H | I | J | M | P | L | Z | A | C | E | F | I |
| M | Z | D | M | Y | D | I | P | A | R | V | A | T | E | E | Y | A | V | Y | G | H | I | M |
| A | K | L | M | S | H | I | M | A | L | A | Y | A | T | A | Z | L | O | R | I | S | S | A |
| L | E | T | R | A | I | T | C | M | Z | O | Q | V | K | L | S | K | U | V | S | A | V | B |
| A | R | K | M | O | C | F | E | V | M | A | R | U | S | T | H | A | L | Y | W | Y | Z | C |
| B | J | A | L | O | R | H | X | A | Z | Y | A | Z | O | Q | Y | L | S | T | B | D | F | S |
| A | T | G | U | J | R | A | T | S | T | B | J | C | E | G | H | I | J | R | L | S | T | C |
| R | U | Y | X | T | V | I | J | M | A | H | A | R | A | S | T | R | A | K | R | S | U | P |
| T | P | A | R | V | A | T | E | E | Y | A | S | N | A | Z | Y | K | X | C | X | P | F | R |
| A | B | K | R | S | N | A | C | K | L | M | T | O | X | C | W | Y | B | A | C | H | J | T |
| T | A | R | C | R | B | L | P | F | S | A | H | J | X | I | D | X | H | R | S | A | C | P |
| I | X | K | Z | S | Z | Q | B | D | G | F | A | I | C | J | V | A | J | K | R | R | O | P |
| Z | Y | B | X | W | Y | S | C | O | R | I | N | Y | H | G | C | O | P | O | C | O | O | O |

छात्रों की प्रतिक्रियाओं व प्रस्तुतीकरण के आधार पर अवलोकन

**गृहकार्य/परियोजना कार्य (प्रोजेक्ट) :–** अपने आस –पास रहने वाले किसी एक सब्जी/फसल उत्पादक से मिलकर उनकी मृदा और फसल के बारे में निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर जानकारी जुटाना।

| क्र.सं. | उत्पादक का नाम | फसल का नाम | उपयुक्त मृदा का प्रकार | मिट्टी की विशेषताएं और उसमें आने वाले बदलाव |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |

**शिक्षण की आगामी कार्ययोजना :–** मृदा के अपरदन के कारण समझाते हुए भारतीय मृदा नीतियों के संरक्षण के लिये किये गये उपाय व संरक्षण को समझाना।

## शिक्षण योजना 02

| अध्याय 2 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| वन एवं वन्य जीव संसाधन | वन संरक्षण एवं प्रबन्धन के आधार पर वनों के प्रकार, दिवस | 06 | 40 मिनट |

लर्निंग आउटकम :–

- वन/जंगल के संरक्षण के महत्व को समझते हैं।
- विभिन्न प्रकार के वनों (आरक्षित वन/रक्षित वन/अवर्गीकृत वन) में अन्तर स्थापित करने में समर्थ होते हैं।

शिक्षण उद्देश्य–

- सामग्री के साथ गतिविधि द्वारा वन/जंगल के संरक्षण के महत्व व उनके प्रकारों में अंतर कर पाना।
- भारत के मानचित्र में विभिन्न वन क्षेत्रों को चिन्हित करना, दर्शा पाना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री** :– चार्ट, पीपीटी, डिजिटल बोर्ड, वीडियो

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ** :–

शिक्षण के शुरुआत में (समय 5 से 10 मिनट)

- शिक्षक कक्षा की शुरुआत उत्तराखण्ड के 'चिपको' आन्दोलन एवं केरल राज्य के 'एपिको' आन्दोलन की कहानियों से करेंगे।
- उपर्युक्त आन्दोलनों से जुड़े घटनाक्रम को समझाते हुए विद्यार्थियों को वन संरक्षण तथा वन संरक्षण एवं प्रबन्धन के प्रकारों से जोड़ेंगे।
- डिजिटल बोर्ड/प्रोजेक्टर द्वारा डिस्कवरी चैनेल आदि से विभिन्न प्रकार के वनों एवं वन्य जीवों के संरक्षण एवं प्रबन्धन के तौर–तरीकों से बच्चों को परिचित करायेंगे।

शिक्षण के दौरान – (समय 20 से 25 मिनट)

- बच्चों से वन की अवधारण पर चर्चा करेंगे। बच्चों से वन संरक्षण के महत्व पर आधारित प्रश्न करेंगे। वनों के प्रबन्धन के तरीकों/आधारों से परिचित करायेंगे तथा उनके आशय भी स्पष्ट करेंगे। इस सम्बन्ध में बच्चे परिवेशीय जानकारी भी प्राप्त करेंगे।

- भारत के मानचित्र पर विभिन्न प्रकार के वनों को दिखाकर संरक्षण एवं प्रबन्धन के आधार पर, उनके प्रकार को डिजिटल बोर्ड/व्हाइट बोर्ड पर लिखेंगे तथा उनके आशय भी स्पष्ट करेंगे –

  (i) आरक्षित वन

  (ii) रक्षित/संरक्षित वन

  (iii) अवर्गीकृत वन

- पीपीटी या वीडियो के माध्यम से विभिन्न प्रकार के वनों की सामान्य विशेषताओं, उनके अन्तर, उनके संरक्षण के आाधार, प्रबन्धन के तरीकों एवं मानदण्डों से छात्रों को परिचित कराएंगे।
- देश के विभिन्न राज्यों में उपर्युक्त वन प्रकारों के क्षेत्रीय विस्तार या प्रतिशत को, भारत के मानचित्र पर दर्शाते हुए, स्पष्ट करेंगे।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

बच्चों से उनके स्थानीय परिवेश में मौजूद आरक्षित वन (जैव आरक्षित क्षेत्र एवं राष्ट्रीय पार्क जो भी मौजूद हो), रक्षित वन एवं अवर्गीकृत वन दिखा कर, उनसे बिन्दुवार अन्तर बताने को कहेंगे।

**गृहकार्य/परियोजना कार्य (प्रोजेक्ट) :–**

- बच्चे bhuvan portal तथा DIKSHA portal पर मोबाइल से आरक्षित, रक्षित एवं अवर्गीकृत वनों का अवलोकन करेंगे तथा इन वनों के संरक्षण के स्तर को समझने का प्रयास करेंगे। इन वनों में आरक्षित एवं रक्षित कुछ वन्य जन्तुओं एवं वनस्पतियों की सूची तैयार कर कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।
- बच्चे ऐसे रीति–रिवाजों की जानकारी कर उन पर लेख लिखेंगे जो पर्यावरण बचाव और संरक्षण में मदद करते हैं।

**शिक्षण की आगामी कार्ययोजना :–**

- विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाकर जैव आरक्षित क्षेत्रों, राष्ट्रीय पार्कों, एवं वन्य जीव अभयारण्यों का अवलोकन करायेंगे।
- बच्चों को उनके परिवेश में मानव और प्रकृति के समन्वयन पर प्रचलित कहानियों के बारे में बताएंगे।

## शिक्षण योजना 03

| अध्याय 3 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| जल संसाधन | जल संरक्षण एवं प्रबन्धन | 03 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउटकम :–**

- जल का जीवन में महत्त्व समझ रहे हैं।
- जल संरक्षण की आवश्यकता बता रहे हैं।
- जल संरक्षण के उपाय बता रहे हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–** कविता, अभ्यास चार्ट और चर्चा द्वारा जल संरक्षण के महत्व को समझना और स्पष्ट करना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** रेखाचित्र, डिजिटल बोर्ड, चित्र

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियां :–**

**शिक्षण की शुरुआत में (अनुमानित समय –10 मिनट)**

- शिक्षक कक्षा की शुरुआत इस कविता से करेंगे–
  आओ बच्चो तुम्हें सुनाए, आज कहानी नीर की, हिमसागर की नदियों की, झरनों की और झील की। बलखाती लहराती नदियाँ, जीवन का आधार हैं, जन–जन तक जल को पहुंचाती, इनकी अमृत धार है। खेतों में हरियाली लाती, वर्षा की फुहार है। जल जीवन है, जल अमृत है, जल ही सबका प्यार है। शब्दों में भी नहीं समा सकती है गाथा नीर की, हिमसागर की नदियों की, झरनों की और झील की। बिन पानी गौरैया गायब, घर–आँगन, खलिहानों से सूखा जंगल पूछ रहा, धरती के इंसानों से। खाली मटका देख के कौआ कहता है नादानों से, धरती पे उपकार करो अब, जल संचय के नारों से। इस कविता का भावार्थ समझाते हुए बच्चों को जल संरक्षण से जोड़ेंगे।

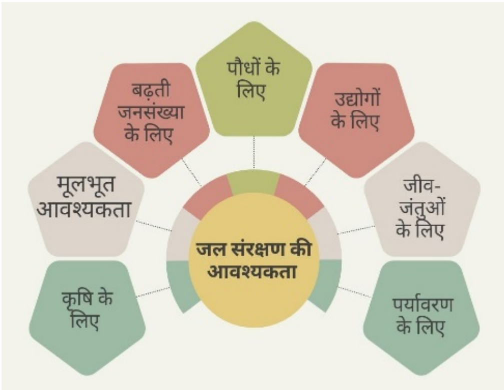


**शिक्षण के दौरान – (समय 20 से 25 मिनट)**

- शिक्षक बच्चों को चित्र के माध्यम से जल के असमान वितरण से अवगत करायेंगे।
- शिक्षक बच्चों को ग्राफ/रेखाचित्र के माध्यम से

जल संरक्षण की आवश्यकता स्पष्ट करेंगे –

बच्चों से चर्चा करेंगे कि रेगिस्तानी इलाकों में जल की कमी के कारण बच्चों को शिक्षा को प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षक बच्चों से जल संरक्षण के उपाय बताने को कहेंगे और उन्हें बोर्ड पर लिखते जायेंगे।

शिक्षक जल संरक्षण के अन्य उपायों को बच्चों की बातों में जोड़ेंगे तथा उसे बोर्ड पर लिखकर बच्चों को समझायेंगें।

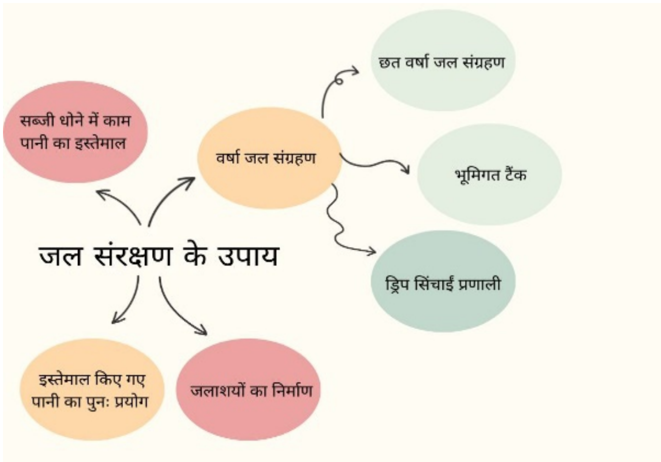


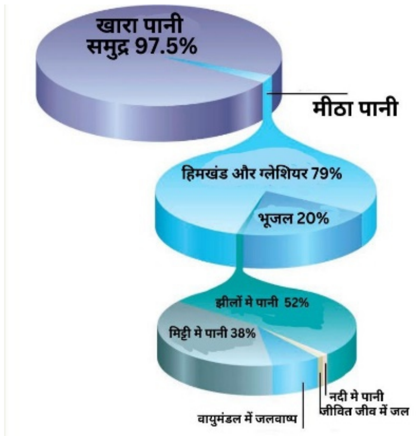


शिक्षण के अन्त में– (समय 5 से 10 मिनट)

कक्षा के बच्चों को दो ग्रुप में बाँटेंगे। एक ग्रुप जल की आवश्यकता पर चर्चा करेगा तथा दूसरा ग्रुप उसको बचाने के उपायों पर चर्चा करेगा। इस गतिविधि को शिक्षण के दौरान भी करा सकते हैं। दोनों अपनी चर्चा की संक्षिप्त रिर्पोट बनाएंगे।

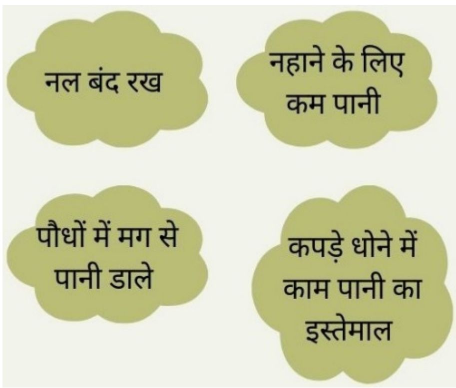

## शिक्षण योजना 04

| अध्याय 4 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| कृषि | भारत की मुख्य फसलें | 03 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउटकम** :– भारत की मुख्य फसलों की जानकारी प्राप्त करते हैं। उसे बताते हैं। फसलों की विशेषताओं और भारत में उनके क्षेत्रों की पहचान करते हैं।

शिक्षण उद्देश्य–

- भारत की मुख्य फसलों को पहचानना, उनका वर्गीकरण करना।
- भारत के मानचित्र में विभिन्न फसल क्षेत्रों को चिह्नित करना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री** :– श्यामपट, कहानी से सबंधित चार्ट, भारत की प्रमुख फसलों का मानचित्र, गतिविधि कार्ड।

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ :–

शिक्षण के शुरुआत में (समय 05 से 10 मिनट)

**गतिविधि** – कक्षा के समस्त छात्रों को निर्देश देंगे कि वे जिन–जिन खाद्य पदार्थों का उपयोग करते हैं, उनमें से किसी एक का नाम पर्ची पर लिखकर पर्ची मेज पर रखे डिब्बे में डालते जायेंगे। तत्पश्चात् शिक्षक प्रत्येक पर्ची को एक–एक करके उठायेंगे और छात्रों से ही पूछेंगे कि वह खाद्य पदार्थ किस फसल से प्राप्त होता है।

जिन फसलों के नाम निकलकर सामने आते हैं, शिक्षक उन फसलों के नामों को श्यामपट पर लिखते जायेंगे और छात्रों को बतायेंगे कि आज हम भारत की प्रमुख फसलों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

शिक्षण के दौरान (समय 20 से 25 मिनट)

**गतिविधि** – सम्पूर्ण कक्षा के बच्चों को 4 समूहों में बांट लेंगे? प्रत्येक समूह को एक फसल का नाम देंगे।

1. चावल  2. गेहूँ  3. बाजरा  4. मक्का

- समूह पाठ्यपुस्तक में अपने अन्न से संबंधित जानकारी पढ़ लेंगे।

- तब एक–एक करके प्रत्येक समूह को क्रमानुसार खड़ा करेंगे और उनके नाम से संबंधित फसल की विशेषताओं, जलवायु दशाओं के बारे में बताने को कहेंगे। पूरा समूह मिलजुलकर अपनी जानकारी देगा।
- तत्पश्चात् उस समूह से अपने नाम से संबंधित फसल के उत्पादन वाले राज्यों को भारत के मानचित्र से खोजकर सूची बनाने को कहेंगे।
- शिक्षक समूहों द्वारा बताई गई बातों को श्यामपट्ट पर लिखकर आवश्यक बिन्दु जोड़ेंगे ।

| क्रम संख्या | फसल का नाम | तापमान | वर्षा | उपयुक्त मृदा | राज्यों के नाम | विशेष टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 01 | चावल | | | | | |
| 02 | गेहूँ | | | | | |
| 03 | बाजरा | | | | | |
| 04 | मक्का | | | | | |

**श्यामपट्ट कार्य**

**शिक्षण के अन्त में (समय 05 से 10 मिनट)**

चावल, गेंहूँ, बाजरा, मक्का चारों फसलों के राज्यों को एक साथ एक चार्ट पेपर पर लिख देंगे और फिर एक–एक छात्र को बुलाकर किसी फसल का नाम लेकर उससे संबंधित राज्य को तलाशकर उस पर गोला बनाने को कहेंगे।

उदाहरण– गेहूँ उत्पादन करने वाले एक–एक राज्य पर गोला लगाइए!

पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., गंगा मैदान, बिहार, राजस्थान, गुजरात महाराष्ट्र, सिक्किम, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तेलंगाना, म.प्र., झारखंड, अरुणाचल प्रदेश।

**गृहकार्य/परियोजना कार्य (प्रोजेक्ट)** :– भारत के मानचित्र में गेहूँ, चावल, बाजरा और मक्का के उत्पादन क्षेत्रों को दर्शाना है।

**शिक्षण की आगामी कार्ययोजना :–** अद्यतन पढ़ाये गये सम्पूर्ण अध्याय की पुनरावृत्ति करायेंगे।

## शिक्षण योजना 05

| अध्याय 5 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| खनिज तथा ऊर्जा संसाधन | ऊर्जा संसाधन | 08 | 40 मिनट |

लर्निंग आउटकम :–

- विद्यार्थी परम्परागत व गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधनों में अंतर कर पा रहे हैं।
- बच्चे ऊर्जा संसाधनों की उपयोगिता के संबंध में बता रहे हैं।

**शिक्षण उद्‌देश्य–** अनुभवों पर बातचीत व आइ.सी.टी. के उपयोग द्वारा ऊर्जा के संसाधनों की जानकारी प्राप्त करना व उसे व्यक्त करना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** TLM, PPT, वीडियो, डिजिटल बोर्ड।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियां**

**शिक्षण की शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

- कक्षा की शुरुआत एक वीडियो से करेंगे। शीर्षक है ''कोयले की कहानी''।
- वीडियो का लिंक है – https://youtu.be/ZefxR-ympec?Feature=shared
- वीडियो देखने के बाद शिक्षक बच्चों से ऊर्जा के संसाधनों पर सामान्य बातचीत करेंगे जैसे–
  - मोटरसाइकिल चलाने के लिए हम किस ईंधन का प्रयोग करते हैं?
  - आपने बस की सवारी की है। सोचिए बस चलाने के लिए किस ईंधन का प्रयोग होता होगा?
  - घर में माँ खाना बनाने के लिए किस ईंधन का प्रयोग करती हैं?

**शिक्षण के दौरान– (अनुमानित समय 20 से 25 मिनट)**

- शिक्षक बच्चों को निम्नांकित रेखाचित्र डिजिटल बोर्ड पर बनाकर या फ्लो चार्ट बनाकर ऊर्जा के संसाधनों से परिचित करायेंगे–

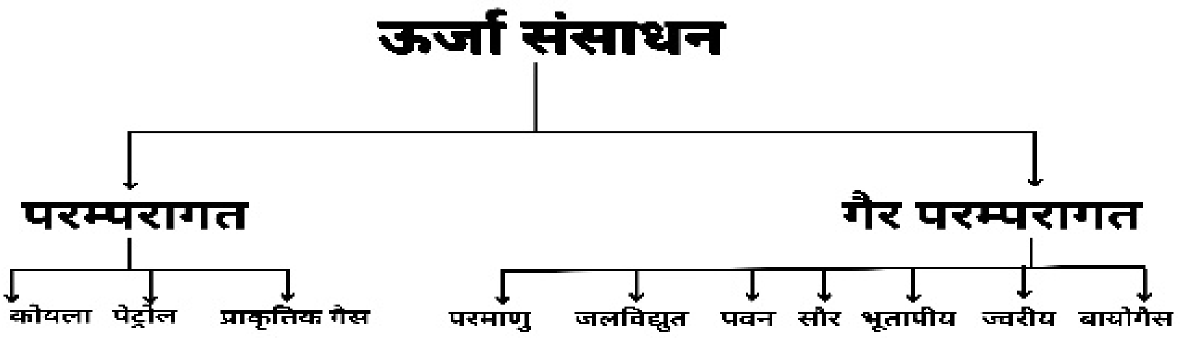


- शिक्षक पीपीटी, चित्र अथवा आईसीटी सामग्री के माध्यम से रोचक ढंग से बच्चों को एक–एक करके सभी ऊर्जा संसाधनों के विषय में जानकारी प्रदान करेंगे।
- ऊर्जा संसाधनों की उपयोगिता पर बच्चों की समझ विकसित करेंगे।

शिक्षण के अन्त में – (समय 05 से 10 मिनट)

पूरी कक्षा के बच्चों को दो भागों में बाँट देंगे। एक समूह होगा परम्परागत ऊर्जा संसाधनों का तथा दूसरा समूह गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधनों का प्रत्येक समूह अपने–अपने संसाधनों के विषय में आपस में चर्चा करेगा तथा संक्षेप में दूसरे समूह को उनकी उपयोगिता बतायेगा।

गृह कार्य/परियोजना कार्य (प्रोजेक्ट) :– बच्चे अपने परिवेश मे जो ऊर्जा संसाधन देख रहे हैं उन्हें परम्परागत व गैर परम्परात में बांटकर सूचीबद्ध करेंगे तथा कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

शिक्षण की आगामी योजना :–

परम्परागत व गैर परम्परागत ऊर्जा के कुछ संसाधनों पर शिक्षण योजना तैयार करेंगे।

## शिक्षण योजना 06

| अध्याय 6 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| विनिर्माण उद्योग | कृषि आधारित उद्योग (वस्त्र उद्योग) | 03 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउटकम :-**

छात्र कृषि आधारित उद्योगों, उद्योगों के कच्चे माल के स्रोत, सूती वस्त्र उत्पादन के विभिन्न उपक्रमों तथा वस्त्र उद्योग के देश में वितरण एवं स्थानीकरण के कारकों के विषय में प्राप्त जानकारी को बता पाते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–**

- चर्चा और सामग्री की मदद से कपड़ा निर्माण की प्रक्रिया को समझना,बताना
- विनिर्माण द्वारा कच्चे माल को संसाधित कर उत्पाद बनाने की प्रक्रिया को समझना, बताना

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** डिजिटल बोर्ड/व्हाइट बोर्ड, भारत में वस्त्र उद्योग के वितरण को प्रदर्शित करने वाला मानचित्र, पीपीटी ।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ :–**

**शिक्षण के शुरुआत में (समय 5 से 10 मिनट ) –**

- बच्चों से सामान्य चर्चा करेंगे कि जीवन की आधारभूत आवश्यकताएँ क्या–क्या हैं? (छात्रों द्वारा दिये गये उत्तर को बोर्ड पर लिखेंगे।)
- छात्र/छात्राओं से चर्चा के दौरान पूछेंगे कि कपड़ा/वस्त्र कितने प्रकार के होते हैं ?
- चर्चा के दौरान विद्यार्थी स्पष्ट करेंगे कि वस्त्र धागों से बनते हैं तथा धागा रेशों से बनता है। छात्रों से रेशों के स्रोत के बारे में भी बातचीत करेंगे। कच्चे माल के स्रोत के आधार पर छात्रों से उद्योगों को वर्गीकृत कराया जाएगा।

**उद्योग**

**कृषि आधारित**
- सूती वस्त्र
- ऊनी वस्तु
- रेशमी वस्त्र
- चीनी etc

**खनिज आधारित**
- लोहा
- एल्यूमिनियम
- सीमेंट etc

## शिक्षण के दौरान (समय 20 से 25 मिनट)

- बच्चों से चर्चा करेंगे कि कपास, रेशम तथा पटसन के रेशों से धागा कैसे बनाते हैं? गाँधीजी का चरखे से सूत कातते हुए चित्र दिखाएंगे। बच्चों से यह प्रश्न करेंगे कि वस्त्र बनाने के लिए गाँधीजी सूत कातने का कार्य क्यों कर रहे थे ?
- बच्चों को चित्र/आईसीटी सामग्री के माध्यम से वस्त्र उद्योग के विभिन्न प्रकारों से परिचित कराएंगे।
  - i. सूती वस्त्र उद्योग
  - ii. ऊनी वस्त्र उद्योग
  - iii. रेशम वस्त्र उद्योग

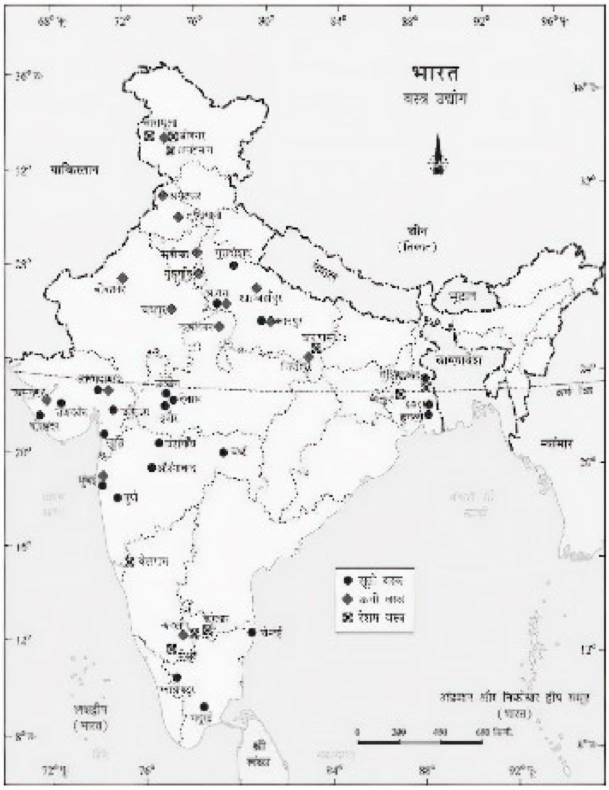


- बच्चों को संबंधित चित्र दिखाकर सूती वस्त्र उद्योग के विभिन्न उपक्रमों से परिचित करायेंगे तथा उनके आशय भी स्पष्ट करेंगे। शिक्षक इसे डिजिटल बोर्ड/ व्हाइट बोर्ड पर लिखेंगे। निम्नलिखित के संबंध में विद्यार्थियों से परिवेशीय जानकारी भी प्राप्त करेंगे।
  - i. हथकरघा (Handloom)
  - ii. स्वतः चालित करघे/विद्युत चालित करघे (Powerloom)
  - iii. मशीनों द्वारा या मिलों में बुनाई का कार्य।
- पीपीटी तथा वीडियो के माध्यम से वस्त्र उद्योग के प्रकार, उनके उपक्रम उनकी सामान्य विशेषताओं, देश में इन उद्योगों तथा भारत के मानचित्र पर इन उद्योगों के वितरण तथा स्थानीयकरण के बारे में छात्रों को जानकारी देंगे।
- शिक्षक सूती वस्त्र के स्थानीयकरण के कारणों से बच्चों को परिचित करायेगें। स्थानीयकरण के कारकों को डिजिटल बोर्ड/व्हाइट बोर्ड पर लिखेंगे।
  - i. कपास/कच्चे माल की उपलब्धता
  - ii. बाजार
  - iii. परिवहन
  - iv. पत्तनों की समीपता
  - v. श्रम
  - vi. आर्द्र जलवायु

- सूती वस्त्र उद्योग किन–किन लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जीविका प्रदान करता है– इस संबंध में विद्यार्थियों के अनुभवों को शामिल कर डिजिटल बोर्ड या व्हाइट बोर्ड पर सूचीबद्ध कर स्पष्ट किया जाएगा, जो इस प्रकार हो सकता है–
    - कृषक
    - कपास चुनने वाले
    - गाँठ बनाने वाले
    - कताई करने वाले
    - बुनाई कार्य मे लगे लोग
    - रंगाई करने वाले
    - डिजाइन बनाने वाले
    - सिलाई करने वाले
    - पैकेट बनाने वाले

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

बच्चों से उनके स्थानीय परिवेश में उत्पादित ऐसी फसलों की जानकारी प्राप्त करेंगे जो उद्योगों के लिए कच्चे माल का स्रोत बनती हैं। तथा अलग–अलग खाने बनाकर उसमें बच्चों से लिखने के लिए कहेंगे–

| | | |
|---|---|---|
| तिल<br>अलसी, मूंगफली | पटसन<br>सनई | कपास<br>सेमल |

**परियोजना कार्य/गृहकार्य :–**

बच्चे भुवन पोर्टल तथा दीक्षा पोर्टल पर मोबाइल से वस्त्र उद्योग, विशेषकर सूती वस्त्र उद्योग का अवलोकन करेंगे तथा अपनी–अपनी कापियों में इसके वितरण को मानचित्र पर दर्शाते हुए कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

**शिक्षण की आगामी योजना :–**

- बच्चों को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाकर हथकरघा तथा विद्युत चालित करघा से धागा तथा वस्त्र की क्रमशः कताई एवं बुनाई होते हुए दिखाएंगे।
- बच्चों को उनके परिवेश के खेतों का भ्रमण करायेगें तथा उनमें पैदा होने वाली नगदी फसलों या ऐसी फसलों को दिखाएँगे जो विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराती हैं।

# इतिहास

# केन्द्रिक लर्निंग आउटकम

1. **तथ्यों, आँकड़ों को पहचानता और पुनः प्राप्त करता है और प्रक्रियाओं को अभिव्यक्ति दे पाता है।**

- कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं जैसे फ्रांसीसी क्रांति, राष्ट्रवाद, औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण और शहरीकरण से जुड़े लोगों के नाम, स्थान, दिनांक याद करता है।
- राष्ट्रवाद, उपनिवेशवाद, प्राच्यवाद, लोकतंत्र, सत्याग्रह, और स्वतंत्रता जैसे शब्दों और संकल्पनाओं को परिभाषित करता है।
- संघीयता, विविधता, धर्म, राजनीतिक पार्टी जैसे महत्वपूर्ण शब्दों को परिभाषित करता है।

2. **घटनाओं, तथ्यों और आँकड़ों को वर्गीकृत करता और उनकी तुलना करता है, जैसे–**

- जर्मेनिया की छवि के साथ भारतमाता की छवि जैसे दृश्यों की तुलना करता है।
- भारत, दक्षिण अमेरिका, केन्या, इंडोचीन जैसे देशों में उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद के साथ यूरोपीय राष्ट्रवाद की तुलना करता है।
- राजनीतिक चर्चाओं में प्रयुक्त शब्दों और उनके अर्थ, जैसे – गांधीवादी, साम्यवादी, धर्मनिरपेक्षतावादी, नारीवादी, जातिवादी, सांप्रदायिकतावादी आदि की व्याख्या करता है।

3. **घटना, कार्यक्रमों और उनकी घटना के बीच कारण और प्रभाव संबंध बताता है, जैसे–**

- विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं और विकास के बीच कारण और प्रभाव जैसे कि भारत में राष्ट्रवाद के विकास पर प्रिंट संस्कृति का प्रभाव बताता है।
- खाद्य उपलब्धता पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव की जाँच करता है। दुनिया के उदाहरण के लिए अमेरिका के उपनिवेश में विभिन्न क्षेत्रों में पूर्व आधुनिक दुनिया में बीमारी के वैश्विक हस्तांतरण के प्रभाव का आकलन करता है।

4. **विश्लेषण और जानकारी का मूल्यांकन करता है, जैसे –**

- भारत में लोकतंत्र में सुधार के लिए विभिन्न सुझावों का मूल्यांकन करता है।
- ग्रंथों और दृश्यों का विश्लेषण करता है जैसे कि यूरोप के बाहर के देशों में राष्ट्रवाद के प्रतीक यूरोपीय प्रतीकों से कैसे भिन्न हैं।

5. **व्याख्या करता है, उदाहरण के लिए –**

- मानचित्र, ग्रंथ
- प्रतीक
- कार्टून
- तस्वीरें
- पोस्टर
- अखबार की कतरनें
- यूरोप में विभिन्न संधियों द्वारा लाए गए मानचित्रों में परिवर्तन

- भारत से पश्चिम एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और दुनिया के अन्य हिस्सों में व्यापार के समुद्री और भूमि लिंक को बनाता, बताता है।

6. **सामाजिक विज्ञान के साथ अंतर्संबंध जोड़ता है–**

- संस्कृति पर व्यापार के प्रभाव का विश्लेषण करता है।

7. **मान्यताओं/पुरानी सोच/पूर्वाग्रहों/रुढ़ियों की पहचान करता है, उदाहरण के लिए–**

- क्षेत्र
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्र
- जेंडर
- विकास का विचार
- जाति
- धर्म
- लोकतंत्र
- राजनैतिक दल
- हाशिए पर और निःशक्त लोगों के समूह
- विभिन्न विकासों जैसे– भूमंडलीकरण और औद्योगीकरण के कई पक्षों की पहचान करता है।
- प्रगति और आधुनिकता की धारणा की आलोचना करता है।

8. **जिज्ञासा/पूछताछ के कौशल को प्रदर्शित करता है अर्थात् इससे संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत करता है, उदाहरण के लिए–**

- कुछ क्षेत्रों में उद्योगों की सघनता
- विभिन्न देशों के राष्ट्रवादी संघो में महिलाओं की भूमिका

9. **एकत्रित/दी गई जानकारी के आधार पर तर्कों/विचारों का निर्माण करता है, उदाहरण के लिए –**

- ऐतिहासिक घटनाएँ और व्यक्तित्व

10. **कार्यक्रमों और घटनाओं का पहले से अनुमान लगाता है, उदाहरण के लिए–**

- कलाकारों और लेखकों द्वारा कला, साहित्य, गीत और कहानियों के माध्यम से राष्ट्रवादी संवेदनाओं का पोषण कैसे किया है, इन स्थितियों से निष्कर्ष निकालता है और उनका संभावित अतिरिक्त विस्तार करता है।

11. **निर्णय लेने/समस्या सुलझाने के कौशल दर्शाता है, उदाहरण के लिए–**

- अपने क्षेत्र से संबंधित मुद्दों के समाधान का कौशल।
- यह आकलन करता है कि औपनिवेशिक भारत में कुछ विकास उपनिवेशवादियों के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों, जैसे – साहित्य, परिवहन और उद्योगों में राष्ट्रवादियों दोनों के लिए उपयोगी थे।

## अवधारणा पत्र

इतिहास हमारे बीते समय का लेखा–जोखा है। इसमें एक के पीछे एक घटनाएं मौजूद रहती हैं। हर एक घटना के आसपास सैकड़ों घटनाओं का जमावड़ा होता है। अगर विज्ञान में कोई टाइम मशीन बनाई होती तो हम उस पर बैठकर बीते समय की यात्रा पर जा सकते थे। समय के इस यान पर बैठकर स्वाभाविक रूप से हमारी यह इच्छा होती कि हम धरती पर समय के पहले छोर तक जाएं और अपनी प्यारी पृथ्वी की शुरुआत को देखें। तब हम पाते कि यह सूर्य से अभी–अभी ही अलग हुई है और ज्वालामुखी तथा विस्फोटों से धधक रही है। हम वापस लौटते फिर वर्षों तक इसपर होती रही धारदार वर्षा के साक्षी होते। फिर वनस्पतियों और जीवों की उत्पत्ति को देख पाते। जंगलों से ढकी पृथ्वी और बर्फ से लदे पहाड़ों के ऊपर से गुजरते। डायनासोर हमारे आस पास उड़ते। सहसा अगले दृश्य में वे गायब हो जाते। किसी मैदान में हमें अपने परिवार संग पत्थर के भालों से एक में मेंमथ (महागज) का मुकाबला करता अपना पुरखा मानव मिल सकता था या फिर किसी गुफा के द्वार पर थका मांदा सोया अकेला मनुष्य जो चौंक कर बार–बार नींद से उठ जाता, इसलिए कि सोए में कहीं कोई उस पर हमला न कर दे। हम उससे बातें करते तो वह हमारी भाषा ही नहीं समझ पाता। हम किन्ही विरल (कम घने) जंगलों के पास होते तो हमें पेड़ों पर हथेलियों से ताल देकर संगीत बजाते मानव समूह मिल जाते। वापसी के इस सफर में हमें जमीन और राज्य के लिए लड़ती राजाओं की सेनाएं दिखतीं। वे ओझल होतीं तो धूल में टूटे पड़े राजसिंहासन और मुकुट चमकते नजर आते। हम 15वीं 16वीं सदी के यूरोप के आकाश में होते तो वहां भाप से मशीनें चलाते कामगार और समुद्री बेड़े तैयार करते नाविक जरूर हमारा ध्यान खींचते। युगों पीछे की इन यात्राओं से जब हम थक जाते तो वर्तमान की जमीन पर उतर पड़ते। लेकिन हमारी मुश्किल यह है कि ऐसी कोई मशीन अभी बनी नहीं और हमें इस काल्पनिक यात्रा से ही संतोष करना पड़ता है।

यही कारण है कि इतिहासकारों को हमें इतिहास तक पहुंचाने या इतिहास को हमारे लिए लिखने में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। उन्हें काफी गहराई तक जमीनें खोदनी होती हैं। सावधानी के साथ उसमें दबी इमारतें, बर्तन, सिक्के, खेती–बाड़ी के औजार सजावट के आभूषण और हड्डियां तक बाहर निकालनी होती हैं। महीनों–वर्षों तक यह काम चलता है। इतना ही नहीं वह अभिलेखागारों/अजायबघरों की अलमारियां खंगालते हैं। महीनों पुस्तकालयों में किताबें टटोलते–पढ़ते हैं, फिर इन चीजों और इनसे मिली जानकारी को अपने सामने व्यवस्थित करते हैं। वे इन वस्तुओं का समय और संबंध ढूंढते हैं। तब जाकर इतिहास की कोई सच्ची घटना लिखी जा सकती है। इतिहासकारों की कोशिश होती है घटना पूरी सच न हो तो भी सच के बहुत करीब हो।

जब इतिहास लिखना और जानना इतना कठिन है तो इतिहास को पढ़ना–समझना भी थोड़ा चुनौती भरा होगा ही। हमारे स्कूलों में बहुत पहले से इतिहास सीखने का एक खास तरीका चलन में रहा है। बच्चों के सामने इतिहास के ढेर सारे तथ्य रख दिए जाते हैं, तारीखों–वर्षों के साथ उन्हें जस का तस याद रखने को कहा जाता है। बहुत से बच्चे ऐसा कर भी लेते हैं, बहुत से नहीं कर पाते। पर इस तरीके में एक दिक्कत तो है ही। तथ्यों या घटनाओं को हू–ब–हू याद रखने को कोशिश में इतिहास को समझना कहीं पीछे छूट जाता है। यह संभावना भी रहती है कि बच्चों की इतिहास पढ़ने में ,उसे जानने–समझने में रुचि ही न

बन पाए। इस तरीके में इतिहास की समझ बनाने, उसका 'बोध' करने यानि उसमें घटी घटनाओं में अच्छे–बुरे, सही–गलत का फर्क करने और न्याय–अन्याय समझने की सलाहियत नहीं बन पाती। जबकि इतिहास पढ़ने का असली फायदा ही तब है जब हम उससे अपनी और अपने समाज की जिंदगी सुधारने के लिए कोई सबक निकालें। हमारे मन में स्वयं और समाज को सुंदर बनाने की इच्छा जाग पड़े।

खोजबीन और छानबीन जैसे शब्द इतिहास सीखने–सिखाने के काम में खास तौर पर उपयोगी हैं। खोजबीन का मतलब है ऐसी किसी वस्तु, तथ्य, सवाल, संदर्भ, किताब या स्रोत की खोज करना जिसके द्वारा हम इतिहास की समझ बनाना चाहते हैं। खोजबीन के बाद छानबीन की बारी आती है। छानबीन अंग्रेजी के शब्द 'फिल्टर' से मिलता जुलता है, वैसे दोनों शब्द 'विश्लेषण' से संबंधित है, और दोनों में एक दूसरे का अंश मौजूद है।

जब इतिहास का कोई तथ्य विचार या वस्तु खोज या चुन ली जाती है तो जरूरी है कि कक्षा के सभी विद्यार्थी उसे अपनी नजर से देखें, परखें। सभी बच्चे न सही अधिकांश उस पर अपनी राय कक्षा में साझा करें। उस पर तर्क–वितर्क करें, आखिर इतिहास के एक खास दौर में वह चीज आई कहां से या कैसे पैदा हो गई? अपने समय में समाज के लिए उसका क्या उपयोग था? क्या वह आज भी उपयोगी है या बेकार समझी जाने लगी है? उसके पुराना पड़ जाने के क्या कारण है? क्या उसे सुधारा या बदला जा सकता है? उसने समाज में किन लोगों को फायदा पहुंचाया और किन का नुकसान किया? वह समाज के कितने बड़े भाग के लिए उपयोगी है?

**क्रांतिकारी महिला ओलम्प दे गूज़ ( 1748–1793 ) का जीवन**

ओलम्प दे गूज़ क्रांतिकालीन फ़्रांस की राजनीतिक रूप से सक्रिय महिलाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण थीं। उन्होंने संविधान तथा 'पुरुष एवं नागरिक अधिकार घोषणापत्र' का विरोध किया क्योंकि उसमें महिलाओं को मानव मात्र के मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा गया था। इसलिए उन्होंने सन् 1791 में 'महिला एवं नागरिक अधिकार घोषणापत्र' तैयार किया जिसे महारानी और नैशनल असेंबली के सदस्यों के पास यह माँग करते हुए भेजा कि इस पर कार्रवाई की जाए।

इतिहास के किसी भी तथ्य को कक्षा में उपरोक्त इन्हीं सवालों की कसौटी पर कसा जाना चाहिए। इस तरह की चर्चा में शिक्षक बच्चों के साथ शामिल रहें। चर्चा के बाद सभी विद्यार्थी इस चर्चा का सार कम या अधिक अपने शब्दों में लिखें। वे उससे संबंधित कोई सरल और कच्चा रेखाचित्र (स्केच) भी बना सकते हैं। बच्चों के इन नोट्स में से कुछ को शिक्षक कक्षा में प्रस्तुत कराएं। उन पर बाकी कक्षा अपनी राय दे। इस तरीके में केवल मौखिक भाषा में दक्ष बच्चे भी इतिहास की समझ बना सकते हैं, चाहे वह लिख न पाते हों।

## हाई स्कूल स्तर पर इतिहास शिक्षण की कुछ गतिविधियां

हाई स्कूल स्तर पर पढ़ रहे बच्चों की आयु 15 या 16 वर्ष की होती है। उनके जीवन अनुभव पर्याप्त होते हैं। उनसे अच्छे विचारोत्तेजक संवाद द्वारा भी इतिहास का शिक्षण किया जा सकता

है। इसमें जरूरी होगा कि जितना शिक्षक बोलें कम से कम उतना या उससे ज्यादा बच्चों को सुना जाए। इसके लिए हमारे पास पर्याप्त प्रश्न कौशल होना चाहिए। यहां कुछ गतिविधियां सुझाई गई है। इन्हें स्कूल की परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए कक्षाओं में कराया जा सकता है।

- **कल्पनाशील प्रश्नों के द्वारा संवाद**

हम मुख्यतः तीन तरह के सवालों से कक्षा में संवाद का माहौल बना सकते हैं।

1. **सुई सवाल** – ऐसे सवाल जिनका जवाब निश्चित (कंक्रीट) है।
2. **धोती सवाल** – जिनका जवाब बच्चे स्वतंत्र रूप से सोचते हुए अपनी कल्पना और पूर्वज्ञान के आधार पर दें।
3. **फिटकरी सवाल** – इन प्रश्नों का जवाब देने के लिए बच्चों को अच्छी तरह सोचना और आपस में विचार–विमर्श भी करना पड़ सकता है। ये विश्लेषण कराने वाले प्रश्न हैं। यह एक प्रकार का मस्तिष्क मंथन (ब्रेनस्टॉर्मिंग) है।

- **प्रोजेक्ट कार्य**

इतिहास शिक्षण में 'प्रोजेक्ट कार्य' का विशेष महत्व है। यह घर और स्कूल दोनों जगहों पर किया जा सकता है। इन्हें छोटे और बड़े समूहों में बच्चों की संख्या का ध्यान रखते हुए इस प्रकार किया जा सकता है–

**समूह एक–** अपने परिवेश की किसी पुरानी इमारत (मकान, किले, बड़ी बिल्डिंग, झोपड़ी, स्कूल आदि) का अवलोकन करें। उसके इतिहास, पुरानेपन, बनाने वालों, उसमें रहने वालों, काम करने वालों, उसके निर्माण में लगी सामग्री आदि के बारे में तथ्य जमा करें और उनकी रिपोर्ट बनाएं।

**समूह दो–** गांव–मोहल्ले की किसी वृद्धा से साक्षात्कार करें। उनसे उनके समय में महिलाओं की समाज में स्थिति, आज के समय में महिलाओं की स्थिति पर बातचीत करें, उनके अनुभव और निष्कर्ष पूछें, इस कार्य की रिपोर्ट बनाएं।

**समूह तीन–** यह समूह पास के किसी म्यूजियम/अजायबघर की यात्रा करे। उसके क्यूरेटर से साक्षात्कार करे और म्यूजियम में रखी चीजों का विवरण और उनके समय और महत्व पर लेख लिखे।

**समूह चार–** यह अपने आस–पास के किसी भी घुमंतू समूह (चरवाहा, बंजारे, स्लम आबादी) के पास जाकर उनके अतीत और वर्तमान की दशाओं का अध्ययन कर सकता है।

- सभी समूह अपने कामों पर लेख और रिपोर्ट तो बनाएं ही, उनसे संबंधित नजरी नक्शा और सरल, रफ रेखाचित्र (स्केच) भी बनाएं। 'इन्हें' कक्षा में प्रस्तुत करें। बच्चों के काम की सराहना हो।

**वस्तुओं का इतिहास–** मेंज पर रखी एक मोमबत्ती, पेन, गिलास, स्वेटर, आदि के इतिहास पर चर्चा की जा सकती है। यह किन चीजों से बनी, कहां –कहां से आई होगी और किस–किस ने बनाई होगी, किन हालात में बनाई होगी आदि सवालों के साथ।

**पुराने व्यवसायों की खोज खबर** – किसी शिल्पकार के काम की प्रक्रिया और उसकी चुनौतियों पर एक साक्षात्कार लिया जा सकता है।

**रोल प्ले–** इतिहास की खास घटनाओं पर छोटे–छोटे नाटक रचे/खेले जा सकते हैं। घटना से अच्छी तरह परिचित हो जाने के बाद इनकी स्क्रिप्ट/पटकथा बनाने में बच्चों की मदद ली

जा सकती है। इसकी एक थीम हो सकती है– फ्रांसीसी क्रांति में बास्तीय के किले पर हमला करने से पहले पेरिस के चौराहे पर, एक सिपाही, एक मजदूर, एक कलाकार, एक शिक्षक, एक स्त्री, एक बुद्धिजीवी की बातचीत।

**भाषाई सर्वेक्षण–** एक छोटे से आबादी क्षेत्र में कितनी भाषाएं बोलने वाले लोग रहते हैं, वे कहां–कहां से आए हैं, इसका सर्वेक्षण किया जा सकता है। इस भाषा के वाक्यों–शब्दों का संकलन किया जा सकता है।

**लोकसाहित्य का संकलन–** स्थानीय लोककथाओं, लोकगीतों, कहावतों, पहेलियों का संकलन–बुजुर्गों/युवाओं आदि से मिलकर किया जा सकता है। इनमें से कुछ पर क्रमशः कक्षा में चर्चा करें। इन सब की योजनाएं बनाने में शिक्षक बच्चों का मार्गदर्शन और उनकी सहायता करें।

## कक्षा 10 की इतिहास पुस्तक

नौवीं कक्षा की इतिहास पाठ्यपुस्तक ने हमें विश्व इतिहास की उन प्रमुख घटनाओं के बारे में बताया जिन्होंने पुरानी पड़ गई राजतंत्र की शासन प्रणाली को बदल दिया और संसार के सामने एक नई व्यवस्या के रूप में लोकतंत्र और राष्ट्रों, राज्यों की स्थापना के उदाहरण रखे। दसवीं की इतिहास की पाठ्यपुस्तक नवीं कक्षा की पुस्तक में वर्णित विषयों का एक प्रकार से विस्तार है। राजाओं और बादशाहों के राज्य उनकी इच्छाओं/मतों के आधार पर चलते थे। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति और 1917 की रूसी समाजवादी क्रांति वे महान घटनाएँ थीं जिन्होंने संसार भर में लोकतान्त्रिक राज्यों/सरकारों के लिए जमीन तैयार की।

केवल राजनीतिक रूप से राष्ट्र बन जाना, संसद और लोकतंत्र की स्थापना कर लेना एक काम है। राष्ट्र के भीतर जनता के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना, नागरिक के रूप में उसकी विभिन्न जरूरतें पूरी करना, उसकी समस्याएं हल करना उसका अगला कदम है। यह काम ज्ञान–विज्ञान, उद्योग तकनीक और संचार साधनों के विकास के बिना असंभव है। राजनीतिक क्रिया कलापों के साथ–साथ संस्कृति, भाषा साहित्य और कला भी राष्ट्रीयता के विकास में मदद देते हैं। यदि जनता आर्थिक रूप से आत्म निर्भर नहीं है, समुदायों के विकास असमान है, देश के विभिन्न भागों के लोग हिलमिल नहीं पाते तो राष्ट्रीयता (Nationality) को ठोस आधार नहीं मिलेगा। अतः यह भावना कमजोर रहेगी। (अनेक बार राजतन्त्र–सामंतवाद के समर्थक फिर पुरानी सत्ता वापस लेने की कोशिश करते हैं तब लोकतंत्र के नायक फिर उनका सामना करतें हैं।) इन्ही और ऐसी परिस्थितियों में पंद्रहवीं से बीसवीं सदी तक यूरोप और भारत में राष्ट्रवाद (Nationality) का विकास हुआ है। दसवीं की यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रवाद के विकास की इन्हीं हलचलों और उतार चढ़ावों पर केंद्रित है।

दसवीं की इतिहास पुस्तक तीन खंडों के पाँच अध्यायों में विभाजित है।

1. यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय और विकास 2. भारत में राष्ट्रवाद 3. भूमंडलीकृत विश्व का बनना 4. औद्योगीकरण का युग 5. मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

ये सभी अध्याय एक दूसरे से संबंधित हैं। उद्योग और तकनीक का विकास आगे के ज्ञान–विज्ञान के विकास का कारण बना और ज्ञान–विज्ञान की मदद से उद्योग और तकनीक को उन्नत किया गया। उद्योग और तकनीक के विकास ने ही राजाओं की सत्ता बदलने के लिए दबाव पैदा किया और फिर क्रमशः राष्ट्रीय राजतंत्र और लोकतांत्रिक राष्ट्र बने। राष्ट्र स्वतंत्र हुए तो कला–कौशल और औद्योगिक विकास ने उड़ान भरी। इसी के साथ संचार के साधन विकसित हुए तो संसार भर के लोगों की एक दूसरे तक पहुँच आसान हुई। मुद्रण की तकनीक ने ज्ञान–विज्ञान को सुरक्षित किया, संचार को विश्वव्यापी बनाया। इसने लेखकों को साहित्य लिखने को प्रेरित किया। यथार्थवादी और रचनात्मक साहित्य ने मनुष्य के व्यक्तित्व को गढ़ने तक की भूमिका निभाई। संचार और मुद्रण से विज्ञापन की कला भी संभव हुई और उत्पादों को ग्राहक मिले। लेकिन इन कामों में सदियां लगीं। सैकड़ो–हजारों घटनाओं के योगफल ने दुनिया को इस आधुनिक दशा में पहुँचाया है। उनमें से खास ऐतिहासिक घटनाओं के संक्षिप्त ब्यौरे हमें इस पुस्तक को पढ़ाने में मदद देंगे।

### 1. यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय और विकास –

15वीं और 19वीं सदीं के अंत तक यूरोप राजतंत्र और लोकतंत्र के बीच झूलता रहा। राजे और सामंत घूमफिर कर खोई सत्ता वापस पाने की कोशिश करते थे। उधर स्वभाव से क्रांतिकारी होने के बावजूद राष्ट्रवादियों के पास भी आधुनिक राष्ट्र के निर्माण का कोई नक्शा नहीं था। इसलिए वे कुछ राजनीतिक– प्रशासनिक सुधारों की बात कर राष्ट्र का मुखिया फिर राजाओं को बना देते। लेकिन जनता के बीच लोकतंत्र और राष्ट्रवाद की भावना इतनी वेगवान थी कि राजाओं के सिंहासन और तलवारें उनके आगे टिक नहीं पाए। इस वेगवान धारा को प्रवाहित करने वाले थे यूरोप के उद्योगपति, आधुनिक व्यापारी, कारखाने के मजदूर, साधारण छोटे किसान और निर्धन लोग।

यह पूरा दौर यूरोप में राष्ट्रीयता की भावना के उभार का दौर था। यूरोपीय कलाकारों ने राष्ट्रीयता की कल्पना एक स्त्री के रूप में की। फ्रांस की राष्ट्रीयता की देवी को 'मारियाना' और जर्मनी की राष्ट्रीयता की देवी को जर्मेनियाँ के रूप में चित्रित किया गया। फ्रांस के लेखकों ने लोक साहित्य और लोक संस्कृति के संरक्षण को राष्ट्रीयता के लिए अनिवार्य बताया।

यूरोप में किसानों की टोलियों ने राष्ट्रवाद के लिए राजाओं के सैनिकों से सैकड़ों स्थानों पर लड़ाइयाँ लड़ीं। यूरोप भर में विचारकों, बुद्धिजीवियों के बीच– राष्ट्र में स्त्रियों, किसानों, मजदूरों की स्थिति और अभिव्यक्ति की आजादी को लेकर बहसें चलीं।शहरों में इन्हें लेकर आंदोलन हुए,

लोगों ने सजा भी भुगती। 17वीं से 19वीं सदी तक यूरोप में पुराने तमाम सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक विश्वासों को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर कसा गया। रूसो, वाल्टेयर और दिदेरो जैसे विचारकों ने नागरिकों की स्वतंत्रता और अधिकारों के समर्थन में खुलकर विचार प्रकट किए। 19वीं सदी के अंत तक यूरोप के ज्यादातर इलाकों में स्वतंत्र राष्ट्र राज्यों (Nation State) की स्थापना हो चुकी थी।

2. भारत में राष्ट्रवाद –

संसद में सभी देशों की जनता के राष्ट्रीयता व स्वतंत्रता आंदोलन ने सभी को प्रभावित किया। भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन पर भी यूरोप के राष्ट्रीय आंदोलनों का प्रभाव पड़ा। भारत में 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग सदियों पहले साहित्य में हुआ लेकिन आधुनिक स्वायत्त राज्य के रूप में इसने ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश साम्राज्यवाद से लड़ते हुए आकार लिया। अंग्रेजों के आगमन से पहले यह विभिन्न राज्यों बादशाहतों और रियायतों में बँटा हुआ था यद्यपि इसकी खास भौगोलिक स्थिति एक राष्ट्र के रूप में इसकी सीमाएँ निर्धारित करती है।

भारतीय जनता ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ छिटपुट विद्रोह करती थी, पर भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन को व्यापक स्वीकृति महात्मा गांधी के नेतृत्व में किए गए स्वाधीनता आंदोलनों के साथ मिली। भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में अहिंसक सत्याग्रह और सशस्त्र क्रांति दोनों धाराएँ मौजूद थी। लेकिन देश में गांधीवादी आंदोलनों को सर्वाधिक स्वीकार्यता मिली।

भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ, राम प्रसाद बिस्मिल सरीखे युवा क्रांतिकारियों का विश्वास सशस्त्र क्रांति में था।

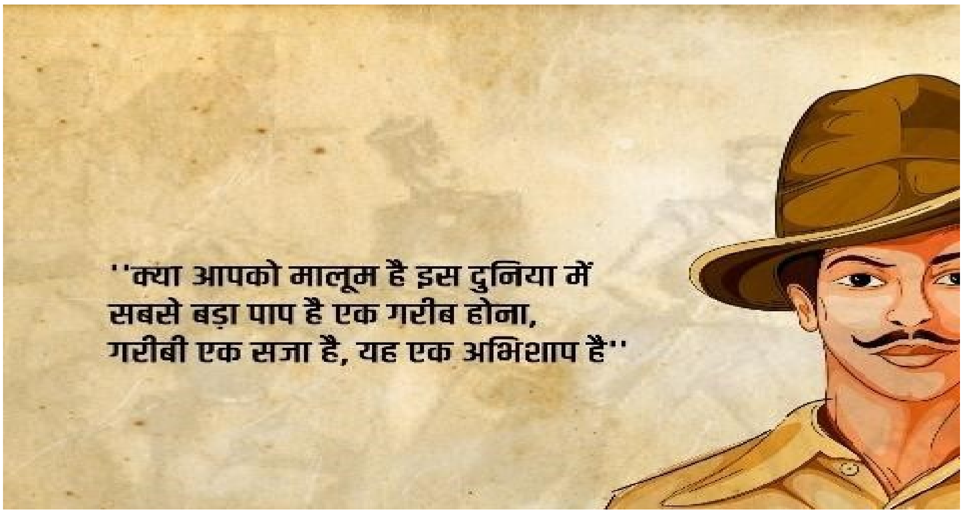

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही स्त्रियों के अधिकारों, भारत की जातीय समस्या और धार्मिक अल्पसंख्यकों की स्थिति पर विचार विमर्श हुए। उनके स्वतंत्र संगठन बने। कमोबेश इनका राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव रहा। यूरोप की तरह भारत में कवियों–कलाकारों ने राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता को स्त्री की छवि में व्यक्त किया। उसे भारतमाता कहा। उसकी स्तुति में गीत–कविताएँ लिखी और राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार किया। 15 अगस्त 1947 को भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

3. भूमंडलीकृत विश्व का बनना–

भूमंडलीकृत से आशय है पृथ्वी के एक भाग के लोगों का दूसरे भाग के लोगों से मिलना। उनसे संबंध बनाना। उनके साथ रहना, बसना या फिर मिलकर अपने ठीहे पर लौट आना। पृथ्वी पर यह काम मानव समुदायों के विकास की शुरुआत से ही होता आया है और बढ़ता ही गया। कोई सवा दो लाख साल पहले मानव सभ्यता के अफ्रीका महाद्वीप में होने और फैलने के सबूत मिले हैं। अमेरिका के रैड इंडियन लोगों में मंगोलिया वासियों के वंशज होने के प्रमाण मिले हैं। भारत में सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों (ईसापूर्व करीब 3000 वर्ष) ने समुद्री मार्ग से यमन से व्यापार किया था। ईसा की पहली सदी के आस पास से बौद्ध भिक्षु हिमालय के दर्रों को पार कर तो कभी अफगानिस्तान से घूम कर मंगोलिया, चीन, जापान तक बौद्ध धर्म का प्रचार करने पहुँचे हैं। चीन के अनेक शहरों के नाम संस्कृत साहित्य में मिलते हैं।

| **चीनी शहर का चीनी नाम** | **संस्कृत नाम** |
|---|---|
| ................................ | ................................ |
| ................................ | ................................ |
| ................................ | ................................ |
| ................................ | ................................ |

ईसापूर्व की शताब्दियों में ही भारत के यूनानियों से भी संबंध बन गए थे। ईसा पूर्व 299 से सन 645 तक मेगास्थनीज (यूनान) फाहियान और हुएनत्सांग भारत आए। तीनों काफी समय तक भारत में रहे।

इस समय तक चीन से पश्चिम एशिया को जाने वाले रेशम मार्ग बन चुके थे। पश्चिमी एशिया में होने वाले व्यापार का महत्व यह है कि उसने तीन महाद्वीपों– एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ दिया।

विद्यार्थियों के लिए यह चर्चा और खोजबीन का विषय है कि इतने पुराने समय में जब लोग पैदल, घोड़ों, रथों, ऊंटों आदि पर हजारों मील की यात्रा करते थे तो उन्हें क्या कठिनाइयाँ होती होंगी। वे दुर्गम पर्वत–पठार, तेज और गहरी नदियाँ तथा घने जंगल कैसे पार करते होंगे? वह रास्ते में किन जगहों पर पड़ाव डालते होंगे? वहाँ उनकी मुलाकात किन भू–भागों के लोगों से होती होगी? जब वे पश्चिम एशिया पहुँचते होंगे तो यूरोपीय अफ्रीकी व पश्चिम एशिया के व्यापारियों से किस भाषा में बात करते होंगे क्योंकि उनकी भाषाएं अलग–अलग होती होंगी। आखिर वह बाजार/हाट/पैंठ कैसी होगी जहाँ इन व्यापारियों का जमावड़ा लगता होगा। समुद्र में काठ की नावों से बेड़े बनाकर व्यापार करने जाने वालों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा। तब क्या दूर के इन मुसाफिरों को चोर–डाकुओं का डर नहीं सताता होगा?

भूमंडलीकरण के हजारों वर्षों में स्वाभाविक ही था कि अनेक प्रकार के अनाज, वनस्पतियाँ, खाद्य पदार्थ, बीमारियाँ, औषधियाँ, इलाज के तरीके पृथ्वी के एक भाग से दूसरे भाग में ले जाए गए। वैज्ञानिक और गणितीय ज्ञान का आदान–प्रदान हुआ, गणित में शून्य का प्रयोग भारत से दूसरे देशों में गया। इसने बड़ी–बड़ी गणनाओं को आसान बना दिया।

भारतीय कला और संगीत दूसरे भू–भागों में पहुंचा। विश्व के दूसरे स्थान की कलाओं का परिचय भारतीयों को मिला। अनेक भारतीय इमारतें भारतीय और अन्य देशों की कलाओं का सुंदर मिश्रण हैं।

14वीं, 15वीं सदी के बाद हुए औद्योगिक विकास ने जैसे भूमंडलीकरण को पंख लगा दिए। लेकिन यह कोई दोस्ती, बराबरी और प्रेमभाव से भरी हुई प्रक्रिया नहीं थी।

यूरोप के विकसित देशों ने जब 15वीं 16वीं सदी के बाद अमेरिका, अफ्रीका और एशिया की प्राकृतिक संसाधनों से भरी पूरी धरती पर अपने उपनिवेश बनाए तो यहाँ से वे लगभग मिट्टी के मोल चांदी, सोना, टिन, कीमती लकड़ी, नील, अभ्रक, कोयला, कच्चा लोहा और कपास ले जाने लगे। उनके कारखानों को इनकी जरूरत थी। वापसी में यूरोपीय कारखानों से बना पक्का माल इन महाद्वीपों और बाकी दुनिया के बाजारों में बेचने को भेज दिया जाता।

शक्तिशाली विकसित देशों ने गुलाम बनाए गए भू–भागों के मूल निवासियों का संहार भी किया। एशिया, अफ्रीका यूरोप के निर्धन लोगों को मजदूर बनाकर दूसरे देशों में ले जाया गया। उनमें से कुछ स्वदेश लौटे, कुछ नहीं। भूमंडलीकरण ने संसार को एक तो किया लेकिन मानवता की दृष्टि से यह एक पीड़ादायक प्रक्रिया रही।

### 4. औद्योगीकरण का युग–

उद्योगों की जटिल मशीनों की विकास यात्रा छोटी और सरल मशीनों–उपकरणों के निर्माण से शुरू होती है। कारखानों के लिए जटिल मशीनें बनाने से पहले दुनिया भर के समाजों ने सरल मशीनें या उपकरण बनाए हैं। जिस ढेकली या कुएँ या गड़हे से पानी निकाला जाता है उसके प्राचीन आवशेष मिस्र में पाए गए हैं। इसे वहाँ शादूफ कहा जाता था।

17वीं से 20वीं सदी तक यूरोप के औद्योगिक विकास से पहले वहां भी दस्तकारों द्वारा बनाई सरल मशीनों से कारखाने चलते थे। कताई की एक मिल में सैकड़ो तकलियों पर एक साथ सूत तैयार होता था। कपड़े की बुनाई, रंगसाजी, धातुओं की ढलाई भी लंबे समय तक हाथ से बने उपकरणों से होती रही। भाप की शक्ति का पता चलने, भौतिक और रसायन की नई खोजों, कारखाने में बिजली के इस्तेमाल ने यूरोपीय उद्योगों की दुनिया ही बदल दी। वह कम समय में अधिकाधिक औद्योगिक सामान बना सकने वाला महाद्वीप बन गया। वहाँ के देश औद्योगिक विकास में अग्रणी बन गए।

अंग्रेजों के आने से पूर्व भारतीय दस्तकारी भी उन्नत अवस्था में थी। कहा जाता है कि यहाँ ढाका (बंगाल) से सूरत (गुजरात) तक 40 हजार करघे थे। इन पर लाखों बुनकर काम करते थे। उच्च कोटि की कपास और भारतीय बुनकरों द्वारा तैयार कपड़े की संसार भर में मांग थी। दक्षिण भारत अच्छी कोटि के लकड़ी के जलयान बनाने का केंद्र था। ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश सरकार के कारिंदों ने इन उद्योग, करघों और जलयान निर्माण केंद्रों को नष्ट कर दिया। इससे लाखों बुनकर और कारीगर तो बेकार हुए ही, भारतीय ज्ञान–विज्ञान और तकनीक

का विकास भी बाधित हुआ। भारत ब्रिटेन के लिए केवल कच्चे माल का स्रोत और ब्रिटेन में बने सामान की बिक्री का बाजार बन कर रह गया। ब्रिटिश भारत में अनेक भारतीय उद्योगपतियों ने अपने उद्योग खड़े करने की कोशिश की। लेकिन ब्रिटिश सरकार द्वारा उनकी राह में अनेक कानूनी बाधाएं खड़ी की गई, केवल ब्रिटिश कारखानों में उत्पादित सामान भारत में बिके ऐसे हालात बनाए गए। इस कारण भारतीय उद्यमियों को अपने कारोबार समेटने पड़े।

लेकिन 1945 में भारत में लोहा, कोयला और तेल आदि की खोज और निकासी के लिए बने मार्शल प्लान ने – स्वतंत्र भारत के उद्यमियों के लिए औद्योगिक विकास का रास्ता खोल दिया।

### 5. मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया –

हमारी दुनिया को जिन चीजों ने आधुनिक बनाया उनमें एक है मुद्रण की कला और तकनीक। यानी कही या लिखी हुई किसी इबारत (script) को शब्दशः छाप कर अन्य लोगों तक पहुँचाना।

इस कला के विकास का एक रोचक इतिहास है। मनुष्यों को यह समझने में लंबा समय लगा कि किसी ज्ञान, समझ या सूचना को भाषा या चित्र में छाप कर सुरक्षित किया जा सकता है। सदियों पहले प्लेट में खुदे शब्दों को हाथ से दबाकर सीमित मात्रा में छपाई हुई। आखिर कागज बनाया गया और मुद्रण की नई–नई मशीनों का आविष्कार हुआ। मानव जाति के अर्जित ज्ञान को सुरक्षित रखने और दुनिया भर में फैलाने के लिए किताबें छापी जाने लगीं। दुनिया भर में घट रही घटनाओं की सूचना लोगों तक पहुंचाने के लिए अखबार छापे जाने लगे। यह भी समझ में आया कि खास तरह के वाक्यों और शब्दों के साथ कोई चित्र देकर लोगों को सामान खरीदने के लिए आकर्षित किया जा सकता है। इस तरह विज्ञापन बनाने की कला विकसित हुई। आज प्रतिदिन दुनिया में लाखों अखबार छपते हैं, पत्रिकाएँ निकाली जाती हैं, तरह–तरह की कहानियाँ और उपन्यास छाप कर बाजार में लाए जाते हैं जो मनोरंजन देने के साथ लोगों को शिक्षित भी करते हैं। आज हर अखबार या पत्रिका सूचना का एक संस्थान है।

मुद्रित साहित्य विविध प्रकार के पात्रों और परिस्थितियों से हमारा साक्षात्कार करता है। हम अपने मानस लोक में उनसे जुड़ते और तालमेल बनाना सीखते हैं। अच्छा यथार्थवादी साहित्य हमारे दृष्टिकोण को उदार और मानवीय बनता है। दुनिया की जिन जगहों पर हम नहीं जा पाते साहित्य द्वारा अपनी कल्पना में उनकी प्रतीति कर लेते हैं। मुद्रण की कला आज हाथ से दबाने वाले फर्मे से बहुत आगे बढ़कर फोटो प्रिंटिंग के दौर में है। यह आधुनिक विश्व की एक पहचान है।

दसवीं की पाठ्यपुस्तक के अध्यायों के बीच और उनके बाद अनेक तरह के अभ्यास दिए गए हैं। शिक्षण के दौरान इनका भरपूर उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक अपनी कल्पना से इनमें नई गतिविधियाँ जोड़ सकते हैं।

पुस्तक में सुझाए गए क्रियाकलापों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है–

| | |
|---|---|
| चित्र, फोटोग्राफ और कार्टून | 109 |
| नक्शे | 07 |
| नए शब्द | 39 |
| गतिविधि बॉक्स | 26 |
| चर्चा बिन्दु | 15 |
| मौखिक चर्चा प्रश्न | 21 |
| चर्चा और नोट्स के लिए प्रश्न | 15 |
| परियोजना कार्य | 04 |
| साक्ष्य श्रोत | 20 |
| बॉक्स मे जानकारियाँ | 14 |
| महत्वपूर्ण तिथियाँ और वर्ष | 18 |

शिक्षक पुस्तकों के अध्यायों और क्रियाकलापों का भली प्रकार अध्ययन करने के बाद शिक्षण कार्य करेंगे तो वह अवश्य प्रभावशाली होगा।

# दिवसवार अध्याय की विषयवस्तु का विभाजन

| अध्याय संख्या, नाम, निर्धारित दिवस | दिवस | पाठ्यवस्तु/पाठ्यबिन्दु |
|---|---|---|
| पाठ–1, यूरोप में राष्ट्रवाद, दिवस 17 | 1 | • फ्रांसीसी कलाकार फ्रेड्रिक सॉरयू के चित्रों का विश्लेषण, राष्ट्रवाद का आशय, रेनन के अनुसार राष्ट्र का विचार, पारिभाषिक शब्दावली (निरकुंशवाद, यूटोपिया, जनमत संग्रह) |
| | 2 | • फ्रांसीसी क्रांतिकारियों द्वारा फ्रांसीसी लोगों में सामूहिक भावना के विकास हेतु उठाए गए कदम |
| | 3 | • फ्रांसीसी क्रांतिकारियों द्वारा राष्ट्रीय विचार का विदेशों में प्रचार– प्रसार<br>• नेपोलियन द्वारा फ्रांस के साथ–साथ अधीन यूरोपीय क्षेत्रों में भी सुधार लागू करना<br>• नेपोलियन का नकारात्मक कदम एवं नेपोलियन का पतन |
| | 4 | • मध्य 18 वीं सदी के यूरोप में राष्ट्र–राज्य अवधारणा का अभाव, यूरोपीय समाज एवं नए सामाजिक वर्ग का उदय। |
| | 5 | • उदारवादी राष्ट्रवाद का अभिप्राय एवं उदारवाद का राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक विचार, पारिभाषिक शब्दावली– ऐले, जॉलबेराइन |
| | 6 | • रूढ़िवाद का आशय, वियना सम्मेलन एवं वियना सन्धि तथा परिणाम (यूरोप में 1815 के बाद का नया रूढ़िवाद) |
| | 7 | • गुप्त क्रांतिकारी गतिविधियां, इटालियन क्रांतिकारी ज्युसेपी मेत्सिनी और उसके कार्य |
| | 8 | • रूढ़िवादी व्यवस्था के विरुद्ध उदारवादी एवं राष्ट्रवादी एकता, फ्रांस की जुलाई क्रांति और उसके परिणाम, यूनानी स्वतंत्रता संग्राम |
| | 9 | • रुमानीवाद का आशय एवं रुमानीवाद का राष्ट्रवाद के विकास में योगदान– उदाहरण सहित |
| | 10 | • 1829–30 की आर्थिक मंदी एवं उसके आर्थिक–राजनीतिक परिणाम |

| | | |
|---|---|---|
| | | • 1848 की फ्रांसीसी क्रांति एवं उसके परिणाम, सिलेसिया का विद्रोह |
| | 11 | • 1848 की उदारवादी क्रांति एवं उसके असफलता के कारण और परिणाम<br>• उदारवादी आन्दोलन में महिलाओं का स्थान |
| | 12 | • जर्मनी का एकीकरण, बिस्मार्क का योगदान |
| | 13 | • इटली का एकीकरण, काउण्ट काबूर एवं गैरीबाल्डी की भूमिका |
| | 14 | • ब्रिटेन में राष्ट्र–राज्य का निर्माण एक दीर्घकालीन प्रक्रिया का परिणाम (संसदीय सत्ता में वृद्धि, राजतंत्र की शक्ति में कमी, स्कॉटलैण्ड व आयरलैण्ड का विलय) |
| | 15 | • राष्ट्र की दृश्य कल्पना या रूपक का आशय मारिआन एवं जर्मेनिया का महत्व एवं उनके प्रतीकों का अर्थ, भारतीय सन्दर्भ में तुलनात्मक चर्चा |
| | 16 | • यूरोपीय शक्तियों द्वारा साम्राज्यवादी उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु राष्ट्रवादी आकांक्षा का हथियार के रूप में उपयोग एवं उसके दुष्परिणाम (बाल्कन समस्या, प्रथम विश्वयुद्ध)<br>• औपनिवेशिक देशों में साम्राज्य विरोधी राष्ट्रवादी आन्दोलन |
| | 17 | • आकलन एवं पुनरावृत्ति |
| पाठ–2, भारत में राष्ट्रवाद, दिवस 14 | 1 | • राष्ट्रवाद से अभिप्राय, भारत में राष्ट्रवाद उदय के कारण<br>• प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत की आर्थिक व राजनीतिक स्थिति |
| | 2 | • गांधी का आगमन एवं उनके सत्याग्रह के विचार, सत्याग्रह के प्रारम्भिक प्रयोग (चम्पारन, खेडा, अहमदाबाद और मजदूर सत्याग्रह) |
| | 3 | • रौलेट एक्ट का तात्पर्य एवं गाँधी द्वारा रॉलेट सत्याग्रह जलियांवाला बाग हत्याकांड एवं परिणाम ( विरोध, दमन, एवं सत्याग्रह वापसी) |
| | 4 | • खिलाफत आन्दोलन एवं गाँधी द्वारा उसका समर्थन, गांधी का असहयोग पर विचार एवं असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव तथा कार्यक्रम की कांग्रेस द्वारा स्वीकृति |
| | 5 | • असहयोग आन्दोलन के कारण, कार्यक्रम वापसी एवं परिणाम तथा महत्व |

| | | |
|---|---|---|
| | 6 | • विभिन्न सामाजिक समूहों के मध्य गांधी के स्वराज का अभिप्राय ( शहरी क्षेत्रों में, किसानों, मजदूरों, आदिवासी किसानों के सन्दर्भ में) |
| | 7 | • सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कारण (स्वराज पार्टी का गठन, विश्वव्यापी आर्थिक मंदी, साइमन कमीशन का गठन, नेहरू रिपोर्ट, लार्ड इरविन द्वारा डोमिनियन स्टेटस की गोलमोल घोषणा, कांग्रेस की लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज की घोषणा) |
| | 8 | • सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत एवं वायसराय को 11 मांग पत्र भेजना, दांडी यात्रा, नमक कानून उलंघन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं असहयोग आन्दोलन में अंतर, सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कार्यक्रम |
| | 9 | • आन्दोलन एवं दमन, गांधी–इरविन समझौता, सविनय अवज्ञा आन्दोलन की वापसी, गाँधी द्वारा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना, गाँधी द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन दुबारा प्रारम्भ एवं वापसी |
| | 10 | • सविनय अवज्ञा आन्दोलन में शामिल होने वाले विभिन्न सामाजिक समूह और उनके उद्देश्य। (सम्पन्न किसान, गरीब किसान, उद्योगपति, मजदूर एवं महिला) |
| | 11 | • सविनय अवज्ञा आन्दोलन की सीमाएं, (दलित एवं मुस्लिम का शामिल न होना) |
| | 12 | • सामूहिक अपनेपन के भाव के विकास में सहायक तत्व (भारत माता का चित्रांकन, राष्ट्रीय गीत का निर्माण, भारतीय लोक कथाओं का पुनर्जीवन, चिह्नों और प्रतीकों का प्रयोग, राष्ट्रीय झंडों का निर्माण, इतिहास की पुर्नव्याख्या) एवं सीमाएं |
| | 13 | • भारत छोड़ो आन्दोलन कारण, परिणाम व महत्व |
| | 14 | • आकलन एवं पुनरावृत्ति |
| पाठ–3, भूमण्डलीकृत विश्व का बनना, दिवस 12 | 1 | आधुनिक युग से पहले भूमंडलीकरण की समझ<br>• रेशम मार्ग से जुड़ती दुनिया<br>• भोजन सामग्रियों की यात्रा<br>• व्यापार<br>• बीमारी<br>• आकलन व पुनरावृत्ति |

| | | |
|---|---|---|
| | 2 | 19वीं शताब्दी में भूमंडलीकरण (1815 से 1914)<br>● श्रम, पूंजी, तकनीकी, वस्तुओं, लोगों एवं सेवाओं का एक देश से दूसरे देश में स्वतंत्र प्रवाह |
| | 3 | ● कार्न लॉ<br>● अफ्रीका में उपनिवेशवाद (व्यापार, रिंडरपेस्ट या मवेशी प्लेग ) |
| | 4 | भारत से अनुबंधित श्रमिकों का जाना<br>● विदेश में भारतीय उद्यमी<br>● भारतीय व्यापार (वस्तु प्रवाह)<br>● आकलन व पुनरावृत्ति |
| | 5 | ● महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था<br>● युद्धकालीन रूपांतरण<br>● युद्धोत्तर सुधार |
| | 6 | ● बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपभोग<br>● महामंदी<br>● भारत और महामंदी<br>● आकलन व पुनरावृत्ति |
| | 7 | ● विश्व अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण (युद्धोत्तर काल)<br>● युद्धोत्तर बंदोबस्त और ब्रेटन वुड्स संस्थान |
| | 8 | ● प्रारंभिक युद्धोत्तर वर्ष और औपनिवेशीकरण तथा स्वतंत्रता<br>● ब्रेटन वुड्स का समापन और वैश्वीकरण<br>● आकलन व पुनरावृत्ति |
| | 9 | ● 19वीं शताब्दी में तकनीकी की भूमिका (रेलवे, भाप के इंजन व टेलीग्राफ एवं उनका प्रसार, परिणाम<br>● पारिभाषिक शब्द– उपनिवेशवाद, मांस उत्पादों का व्यापार एवं तकनीकी का प्रभाव |
| | 10 | ● युद्धोत्तर काल में वैश्विक अर्थव्यवस्था पुनर्निर्माण (प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध का तुलनात्मक अध्ययन)<br>● अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का उद्देश्य<br>● ब्रेटन वुड्स सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IME) और अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निमाण एवं विकास बैंक (विश्व बैंक) |
| | 11 | ● यूरोपीय औपनिवेशिक शासन, विकासशील व विकसित देशों |

| | | |
|---|---|---|
| | | का तुलनात्मक अध्ययन, नयी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली द्वारा (N.I.E.O.) समूह – 77 (9–17)<br>● ब्रेटन वुड्स का अध्ययन उसका समापन, चीन की अर्थव्यवस्था विनिमय दर एवं प्रकार |
| | 12 | आकलन एवं पुनरावृत्ति |
| पाठ–4, औद्योगिकीकरण का युग, दिवस 14 | 1 | ● मशीन और तकनीक का महिमा मण्डन<br>● अलादीन तथा मैकेनिक के पोस्टर प्रदर्शन द्वारा पूरब तथा अतीत और पश्चिम एवं आधुनिकता का तुलनात्मक अध्ययन |
| | 2 | औद्योगिक क्रांति के पहले का परिदृश्य –<br>● इंग्लैण्ड और यूरोप के लिए फैक्ट्रियों की स्थापना से पहले अंर्तराष्ट्रीय–राष्ट्रीय बाजार<br>● 17 वीं 18 वीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागरों का गाँवों की तरफ रुझान<br>● शहरी दस्तकार और व्यापारिक गिल्ड्स<br>● गरीब काश्तकार और दस्तकार शहरों और गांवों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध<br>● कपड़ा व्यवसायी, स्टेप्लर्स, बुनकर, फुलर्ज और रंगसाज |
| | 3 | कारखानों का उदय –<br>● 18 वीं शताब्दी में कारखानों की संख्या में वृद्धि<br>● कपास का नया युग<br>● 18 वी शताब्दी में नवीन आविष्कार<br>● 19वीं शताब्दी में विशाल कारखाने और नई प्रौद्योगिकी<br>औद्योगिक परिवर्तन की गति<br>● ब्रिटेन का सूती उद्योग और कपास उद्योग<br>● लोहे तथा स्टील उद्योग का विकास<br>● नए कारखाने और घरेलू इकाइयों की तुलना<br>● परम्परागत उद्योग, गैर मशीनी क्षेत्र का उत्पादन, महंगी मशीनें, खर्चीले तकनीक एवं रखरखाव में बाधा |
| | 4 | ● हाथ का श्रम और वाष्प शक्ति<br>● विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में मानव श्रम<br>● मौसमी आधार पर उद्योगों में श्रमिकों की मांग<br>● हाथ से तैयार किये गये उत्पाद एवं उनका महत्व<br>● मजदूरों के अभाव में मशीनों का उपयोग |

| | | |
|---|---|---|
| | 5 | बाजार में श्रम की मांग के कारण रोजगार का सृजन<br>● नौकरी में सामाजिक सम्पर्क की भूमिका<br>● मौसमी उद्योग का कामगारों पर प्रभाव<br>● 19वीं शताब्दी में मजदूरों का वेतन<br>● 19वीं शताब्दी में शहरी आबादी का आर्थिक स्तर, 1830 में आर्थिक मंदी एवं बेरोजगारी<br>● ऊन उद्योग में स्पिनिंग जेनी मशीन<br>● 1840 में शहरों में निर्माण गतिविधि की वृद्धि |
| | 6 | पुनरावृत्ति |
| | 7 | उपनिवेशों में औद्योगीकरण<br>● भारतीय कपड़े का युग<br>● मशीनी उद्योग के पहले अन्तर्राष्ट्रीय कपड़ा बाजार में भारत की स्थिति<br>● भारत में पैदा होने वाला कपास<br>● भारत और विदेशों का व्यापारिक सम्बन्ध, महत्वपूर्ण मार्ग, महत्वपूर्ण बन्दरगाह |
| | 8 | भारत में यूरोपीय कंपनी का बढ़ता हुआ प्रभाव<br>● ईस्ट इण्डिया कंपनी के भारत में प्रवेश से भारतीय कपड़ा उद्योग में गिरावट<br>● कंपनी का व्यापार में एकाधिकार<br>● प्रबन्ध एवं नियंत्रण के लिए नवीन व्यवस्था<br>● बुनकरों पर नियंत्रण और कपड़ों की गुणवत्ता जांचने के लिए गुमाश्ता की नियुक्ति<br>● बुनकरों पर पाबंदियां<br>● परिवार में सभी लोगों का व्यवसाय में लगना<br>● नये गुमाश्तों और बुनकरों में टकराव<br>● बंगाल और कर्नाटक से बुनकरों का पलायन<br>● ब्रिटेन में सूती कपड़ा उद्योग का विकास<br>● भारतीय बाजार में निर्यात हेतु उत्पाद, बुनकरों की दयनीय दशा |
| | 9 | इंग्लैंड में कपास उद्योग विकसित<br>● आयात शुल्क वसूलने पर जोर<br>● मशीनों से तैयार उत्पाद का सस्ता होना |

| | | |
|---|---|---|
| | | • बुनकरों की बेकारी<br>• अमेरिकी गृह युद्ध का दुष्प्रभाव<br>• भारत से कच्चे कपास का निर्यात व कपास की कीमत में बढ़त |
| | 10 | भारत में औद्योगिक विकास<br>• फैक्ट्रियों की स्थापना<br>• प्रमुख उद्योग और उद्यमी<br>• जूट उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, पूंजी एकत्र करने का साधन<br>• औपनिवेशिक शासन का भारतीय व्यापार पर नियंत्रण और दुष्प्रभाव<br>• फैक्ट्रियों के विस्तार के साथ मजदूरों की मांग में बढ़त<br>• मजदूरों की आपूर्ति, जाबर – (पारिभाषिक शब्द) |
| | 11 | औद्योगिक विकास की विशेषता<br>• यूरोपीय व्यापारियों द्वारा कुछ खास उत्पाद में रुचि<br>• चाय, कॉफी, नील, जूट एवं खनन में निवेश<br>• भारतीय व्यवसाय द्वारा सूती धागे का निर्माण<br>• स्वदेशी आन्दोलन, औद्योगिक समूह द्वारा अपने हितों की रक्षा के लिए आयात शुल्क में वृद्धि के लिए सरकार पर दबाव |
| | 12 | • भारतीय उद्योगपतियों द्वारा सूती कपड़ों का निर्माण, प्रथम विश्व युद्ध और भारतीय उद्योग, विश्व युद्ध के बाद लघु उद्योग, हथकरघा क्षेत्र, फ्लाइशटल के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि<br>• बुनकरों का मिलों से मुकाबला |
| | 13 | वस्तुओं के लिए बाजार<br>• वस्तुओं के विक्रय के लिए विज्ञापन का महत्व<br>• मेनचेस्टर के उत्पादों पर लेवल का महत्व<br>• कैलेण्डर द्वारा विज्ञापन, अखबार एवं पत्रिकाएं<br>• स्वदेशी वस्तुओं के विक्रय के लिए राष्ट्रवादी संदेश |
| | 14 | आकलन एवं पुनरावृति |
| पाठ–5, मुद्रण संस्कृति और आधुनिक | 1 | • मुद्रण संस्कृति का इतिहास ( प्रसार और प्रभाव )<br>• आधुनिक दुनिया में मुद्रण संस्कृति की भूमिका |
| | 2 | विश्व में मुद्रण का विकास– चीन, जापान, कोरिया पारिभाषिक |

| | | |
|---|---|---|
| दुनिया, दिवस 10 | | शब्द– खुशनवीसी |
| | 3 | यूरोप में मुद्रण का विकास, (प्राचीन पद्धति, गुटेनबर्ग और प्रिंटिंग प्रेस) पारिभाषिक शब्द– वेलम, प्लाटेन |
| | 4 | मुद्रण क्रांति और उसका प्रभाव (किताबों की सुलभता, नए संस्कृति का विकास, लोक गीत और लोक कथाओं का मुद्रण आदि) विचारों की व्यापकता, धर्म सुधार एवं विरोध, परिभाषिक शब्द इन्क्वीजीशन |
| | 5 | 17वीं,18 वीं सदी में यूरोप में साक्षरता के स्तर में सुधार एवं प्रभाव, मुद्रण संस्कृति और फ्रांसीसी क्रान्ति का सम्बन्ध |
| | 6 | यूरोप में जन–साक्षरता के विकास से तैयार नया पाठक वर्ग (बच्चे, महिलाएं और मजदूर, छापेखाने की तकनीक में निरंतर सुधार) |
| | 7 | • भारत में मुद्रण से पहले की प्राचीन परम्परा (पाण्डुलिपियाँ) एवं आधुनिक तकनीक का विकास<br>• भारत में– मुद्रण का सामाजिक व धार्मिक सुधार में योगदान |
| | 8 | प्रकाशन के नए रूप, मुद्रण का भारतीय महिलाओं और गरीब जनता पर प्रभाव |
| | 9 | औपनिवेशिक शासन के दौरान सेंसरशिप |
| | 10 | आकलन एवं पुनरावृत्ति |

## शिक्षण योजना 01

| अध्याय 1 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय | फ्रांसीसी क्रांतिकारियों द्वारा राष्ट्रवाद या सामूहिक भावना के विकास हेतु उठाए गए कदम | 02 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउटकम–** छात्र फ्रांसीसी लोगों में राष्ट्रीय भावना के विकास को समझकर बता पा रहे हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–**

- बातचीत व सामग्री की सहायता से छात्रों में यूरोप में राष्ट्रवादी भावना के विकास के कारणों की समझ विकसित करना।
- छात्रों को यूरोप और भारत के राष्ट्रवादी आंदोलनों के बीच संबंध जोड़ने में सक्षम बनाना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री–** पाठ्य पुस्तक, ब्लैकबोर्ड, चित्र, चार्ट, दीक्षा एप का वीडियो

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ–**

**शिक्षण के शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

● छात्रों को चन्द्रशेखर आजाद पर एक कहानी सुनाकर या नाट्य मंचन कराकर राष्ट्रवाद के आशय और फ्रांसीसी क्रान्ति से उत्पन्न राष्ट्रवादी भावना के यूरोप में विकास की बाबत बताएँगे–

**कहानी–** 1921 ई0 में असहयोग आन्दोलन के समय छात्रों के एक विरोध–प्रदर्शन के वक्त पुलिस द्वारा पकड़े जाने के बाद जब चन्द्रशेखर आजाद को जज के सम्मुख प्रस्तुत किया गया तो जज और आजाद में बातचीत इस प्रकार हुई–

जज– तुम्हारा क्या नाम है ?<br>
चन्द्रशेखर– आजाद<br>
जज – तुम्हारे पिता का क्या नाम है ?<br>
चन्द्रशेखर– स्वाधीनता<br>
जज – तुम्हारी माँ का क्या नाम है ?<br>
चन्द्रशेखर – भारत मेरी माँ है और जेलखाना मेरा घर है।

.

**शिक्षण के दौरान– (समय 20 से 25 मिनट)**

• शिक्षक छात्रों के समक्ष फ्रांसीसी क्रांतिकारियों द्वारा लोगों में राष्ट्रवाद या सामूहिक भावना के विकास हेतु उठाए गए कदमों की चर्चा PPT या फ्लो चार्ट दिखा कर करेंगे, जैसे,–

● भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय भी इनमें से किन बातों पर बल दिया गया था, छात्रों से जानने की कोशिश करेंगे।उन्हें ये बातें बताएंगे भी।

निम्नांकित प्रश्नों द्वारा छात्रों के अधिगम का आकलन करेंगे, जैसे,–

- फ्रांस में किस भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान किया गया?
- यूरोप में राष्ट्रवाद की प्रथम अभिव्यक्ति कब हुई?
- नेशनल असेम्बली का चुनाव किस प्रकार होता था?

**शिक्षण के अन्त में– (समय 5 से 10 मिनट)**

• सामान्य दिनचर्या में लोगों द्वारा किए गए कौन से कार्य राष्ट्रहित में या राष्ट्र के अहित मे होते है? छात्रों को दो समूह में बाँटकर उनसे यह लिखने और प्रस्तुत करने को कहेंगे।

• शिक्षक लिखने और प्रस्तुत करने में कठिनाई महसूस करने वाले छात्रों का सहयोग प्रदान करेंगे।

**गृहकार्य/प्रोजेक्ट–** छात्रों को किन्हीं पाँच प्रमुख देशों का राष्ट्रीय झण्डा बना कर लाने सम्बंधी कार्य देंगे।

**शिक्षण की आगामी योजना–** शिक्षक द्वारा आगामी पाठ्य बिन्दु पर शिक्षण योजना बनाना एवं योजना का क्रियान्वयन करना।

## शिक्षण योजना 02

| अध्याय 02 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| भारत में राष्ट्रवाद | राष्ट्रवाद से अभिप्राय, भारत में राष्ट्रवाद उदय के कारण, प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत की आर्थिक व राजनीतिक स्थिति | 01 | 40 मिनट |

लर्निंग आउटकम :–

- छात्र राष्ट्रवाद की भावना से परिचित हैं एवं भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारणों को बता पाते हैं।
- छात्र प्रथम विश्व युद्ध के दुष्प्रभावों से अवगत हैं और चर्चा–परिचर्चा करते हैं।

शिक्षण उद्देश्य–

- कक्षा को भारत में राष्ट्रीय भावना के विकास के कारण समझने में सक्षम बनाना।
- छात्रों को प्रथम विश्वयुद्ध के समय भारत की आर्थिक व राजनैतिक दशा से परिचित कराना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** पीपीटी, मानचित्र, दीक्षा एप की सामग्री

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ :–**

शिक्षण के शुरुआत में (समय 5–10 मिनट)

- शिक्षक छात्रों से पिछले अध्याय ''यूरोप में राष्ट्रवाद के उदय'' के सन्दर्भ में राष्ट्रवाद पर चर्चा एवं परिचर्चा करेंगे। जैसे–
- राष्ट्रवाद से क्या अभिप्राय है?

शिक्षक छात्रों को राष्ट्रवाद को समझाने हेतु भगत सिंह के बन्दूक बोने की कहानी को पीपीटी के माध्यम से सुनाएगें।

इसी के साथ बच्चों को यह भी बताएंगे कि ब्रिटिश सरकार ने भारत में उद्योगों, शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान, परिवहन आदि का विकास रोक रखा था। इस कारण भारतीय जनता के विभिन्न तबकों में असंतोष था और वह एक स्वतंत्रराष्ट्र चाहती थी, जो यह काम करे।

Link :– https://youtu-be/p1PActÛSSXW?

**शिक्षण के दौरान (समय 20–25 मिनट)**

- शिक्षक विद्यार्थियों से भगत सिंह के अतिरिक्त अन्य भारतीय राष्ट्रतादी नेताओं के बारे में चर्चा–परिचर्चा करेंगे ।
- शिक्षक राष्ट्रवाद को स्पष्ट करते हुए गांधी जी के आगमन के पश्चात भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन के विकास की व्याख्या करेंगे।
- प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत की आर्थिक व राजनीतिक स्थिति

(i) रक्षा–व्यय में भारी वृद्धि

(ii) युद्ध के नाम पर कर्ज

(iii) करों में वृद्धि

(iv) ग्रामीण क्षेत्रों से सिपाहियों की जबरन भर्ती

(v) अकाल एवं महामारी

(vi) गांधी जी का आगमन

**शिक्षण के अंत में (समय 5–10 मिनट)**

कुछ प्रश्नों के माध्यम से बच्चों का पाठ्यवस्तु संबंधी आकलन तथा पुनरावृत्ति।

- प्रथम विश्व युद्ध कब से कब तक हुआ?
- प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत की आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों के कारकों की सूची बनाइए।

**गृहकार्य/प्रोजेक्ट–**

विद्यार्थी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में साम्मलित होने वाले 10 राष्ट्रवादी नेताओं एवं क्रांतिकारियों की सूची बनाकर लाएंगे।

**शिक्षण की आगामी योजना–** शिक्षक द्वारा आगामी पाठ्य बिन्दु पर शिक्षण योजना बनाना एवं योजना का क्रियान्वयन किया जाना।

## शिक्षण योजना 03

| अध्याय 03 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| भूमण्डलीकृत विश्व का बनना | भूमण्डलीकरण की समझ | 01 | 40 मिनट |

लर्निंग आउटकम :–

- विद्यार्थी भूमण्डलीकरण की समझ बना पा रहे हैं और भूमण्डलीकरण करने वाले क्रिया–कलापों के उदाहरण दे रहे हैं।
- विद्यार्थी व्यापार, संचार, विचार एवं आवागमन के साधनों से विभिन्न देशों के एक–दूसरे से जुड़ने की आवश्यकता और प्रक्रिया को समझ पा रहे हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–** छात्रों द्वारा भूमंडलीकरण की जरूरतों, कारणों और परिणामों को समझना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–**

विश्व का राजनैतिक व प्राकृतिक मानचित्र, ग्लोब, दीक्षा एप, चार्ट आदि।

**सीखने – सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ :–**

**शिक्षण के शुरुआत में (समय 5 से 10 मिनट)**

- ग्लोब, विश्व का प्राकृतिक व राजनीतिक मानचित्र दिखाते हुए शिक्षक निम्नांकित बिन्दुओं पर कक्षा में चर्चा करेंगे।
- भूमण्डल शब्द पढ़कर हमारे मन में कौन सी तस्वीर उभरती है?
- शिक्षक ग्लोब को बच्चों के सामने घुमाते और मानचित्र को दिखाते हुए बातचीत द्वारा भूमण्डल (पृथ्वी के गोलाकार होने) और मानचित्र की बनावट के आधार पर भूमण्डल शब्द का अर्थ स्पष्ट करेंगे।
- भूमण्डल की प्राकृतिक बनावट (महाद्वीप, महासागर, पर्वत, मैदान, रेगिस्तान, पठार) उनके नाम और विशेषताओं के आधार पर चर्चा – परिचर्चा करेंगे।
  (ये सब हमारी पृथ्वी का हिस्सा है और पृथ्वी इन सबमें बँटी होने पर भी एक है।)

**शिक्षण के दौरान (समय 20 से 25 मिनट)**

पृथ्वी को राजनीतिक मानचित्र के आधार पर विभाजित करते हुए विभिन्न देशों के बारे में दिए गए प्रश्नों पर चर्चा–परिचर्चा करेंगे–

- आप की समझ में कौन–कौन सी वस्तुएं है जो विभिन्न देशों को आपस में जोड़ती है (बाजार की वस्तुएं (व्यापार), जहाज, यात्री, खेल, तकनीकी, भोजन)
- खेलों के माध्यम से हम एक देश से दूसरे देश से कैसे जुड़ते हैं?
- व्यापार के माध्यम से विभिन्न देश एक दूसरे से कैसे जुड़ते हैं? विद्यार्थियों से चर्चा–परिचर्चा करें!
- तकनीकी के द्वारा विभिन्न देशों के आपस में जुड़ने पर चर्चा–परिचर्चा द्वारा समझ बनायें।
- भारत में आने वाले विदेशी यात्रियों के बारे में चर्चा–परिचर्चा करेंगे।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

- विद्यार्थियों को दो समूहों में बांटकर कार्ड के माध्यम से देशी और विदेशी वस्तुओं के बारे में जानकारी देना।
- भारत में आने वाले विदेशी यात्रियों की प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत और आधुनिक भारत में आने के क्रम के आधार पर सूची बनवाना।

**गृहकार्य/प्रोजेक्ट–** विद्यार्थी अपने आस–पास उपयोग की जाने वाली देशी और विदेशी वस्तुओं की सूची बनाकर लायेंगे।

**शिक्षण की आगामी योजना–** शिक्षक द्वारा आगामी पाठ्य बिन्दु पर शिक्षण योजना बनाकर उसका क्रियान्वयन करना।

## शिक्षण योजना 04

| अध्याय 04 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| औद्योगीकरण का युग | कारखानों का उदय तथा औद्योगिक परिवर्तन की रफ्तार | 03 | 40 मिनट |

लर्निंग आउटकम :–

(i) छात्र 18 वी शताब्दी में स्थापित होने वाले नवीन कारखानों तथा प्रौद्योगिकी से परिचित होकर उसे मौखिक व लिखित रूप में अभिव्यक्त कर पाते हैं।

(ii) छात्र 19 वीं शताब्दी में होने वाले नवीन आविष्कारों तथा आधुनिक जीवन में उनके प्रभावों के बारे में जानकारी दे पाते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–** छात्रों में औद्योगिक विकास (खासकर यूरोप में) के कारणों और परिणामों की तार्किक समझ विकसित करना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** श्यामपट्ट, पाठ्यपुस्तक व वीडियो क्लिप

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया / गतिविधियाँ :–**

**शिक्षण के शुरुआत में (समय 5 से 10 मिनट)**

- औद्योगीकरण को समझने के लिए निम्नांकित प्रश्नों के माध्यम से संक्षिप्त चर्चा / परिचर्चा–
- आप जो कपड़े पहने हैं वह कहाँ बनते हैं?
- अगर एक साथ ज्यादा संख्या में कपड़ा बनाना हो तो किस तकनीक द्वारा जल्दी बनाया जा सकता है।
- कारखानों से अधिक मात्रा में तैयार माल किस माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जायेगा ?
- रेल व मशीन का निर्माण किस धातु से होता है?

**शिक्षण के दौरान (समय 20 से 25 मिनट)**

- पाठ्यपुस्तक में उल्लिखित विषयवस्तु के माध्यम से वैश्विक स्तर पर इंग्लैण्ड से औद्योगीकरण की शुरुआत का संदर्भ देंगे।

- 18 वीं शताब्दी का सबसे बड़ा उद्यम सूती वस्त्र उद्योग रहा। इस बिन्दु पर छात्रों से चर्चा करेंगे।

**उत्पादन प्रक्रिया** :– निम्नांकित बिन्दु के आलोक पर छात्रों से चर्चा करेंगे।

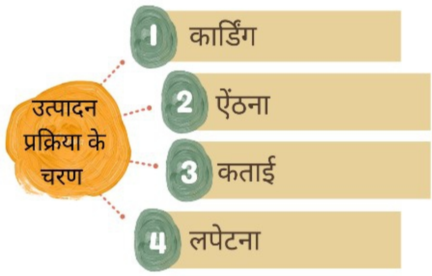


Video Clip द्वारा (https://youtu.be/UH7i6fe - 8B4?si=5Ceg BHQ1 igbos-XV)

- रिचर्ड आर्कराइट की सूती कपड़ा मिल की रुपरेखा
- 18 वीं शताब्दी के आरम्भ में कारखानों का परिदृश्य जो घरेलू इकाइयों पर निर्भर था
- लोहे व स्टील उद्योग का विस्तार
- कई लघु उद्योग साधारण व छोटे आविष्कारों का परिणाम
- नयी तकनीक महँगी व उसके रख रखाव में बाधा।

**शिक्षण के अंत में (समय 5 से 10 मिनट)**

पढाएं गए उपर्युक्त बिंदुओं पर छात्रों को चार समूहों में विभाजित करते हुए निम्नांकित प्रश्नों के माध्यम से उनके अधिगम का आकलन करेंगे –

- कारखाने कैसे अस्तित्व में आए ?
- औद्योगिकीकरण क्या है ?
- कार्डिंग विधि क्या है ?
- 19 वीं शताब्दी में प्रचलित परंपरागत गैर–मशीनी लघु उद्योग कौन –कौन से थे ?

**गृहकार्य / प्रोजेक्ट–**

- अगर आस–पास कोई कारखाना है तो आप उससे उत्पादित वस्तुओं की सूची बनवायें। कारखानों से होने वाले लाभ व हानि को 50 शब्दों में लिखकर लाने को कहें।

- विद्यार्थियों से स्थानीय स्तर एवं ग्रामीण स्तर पर परिवेश में बनने वाली हस्तनिर्मित वस्तुओं की सूची बनवाना और यदि उन वस्तुओं को बाहर भेजा जाता है तो किस माध्यम से और कहाँ यह लिखवाना।

**शिक्षण की आगामी योजना–** आगामी पाठ्य बिन्दु पर शिक्षण योजना बनाकर उसका क्रियान्वयन करना।

## शिक्षण योजना 05

| अध्याय 05 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया | यूरोप में मुद्रण का विकास | 03 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउटकम–** मुद्रण संस्कृति का विकास कैसे और कहाँ–कहाँ हुआ छात्र बता पाते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–** छात्रों को छपाई (मुद्रण कला) के विकास के शुरुआती दिनों, उसके प्रयोगों और प्रयोगकर्ताओं से परिचित कराना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री–** कार्यपुस्तिका, चित्र, चलचित्र, चार्ट, पीपीटी।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ–**

**शिक्षण के शुरुआत में (समय 5 से 10 मिनट)**

- आप जिस आधुनिक दुनिया में जी रहे हैं, यहाँ सभी तरफ रंगीन फोटो, सुंदर सुंदर किताबों के चित्र और एक समान लिखावट कैसे बनाये जाते हैं? कौन लिखता है? (शिक्षक और छात्रों द्वारा सामूहिक चर्चा–परिचर्चा)
- इस मशीन को क्या कहते हैं जो एक समान लिखित एवं रेखांकित चित्र प्रदान करती है। (वीडियो क्लिप के माध्यम से शिक्षक छात्र को दिखाएंगे)।
- छपाई मशीन क्या–क्या छापती है?
- मुद्रण सबसे पहले कहाँ शुरू हुआ?

**शिक्षण के दौरान ( समय 20 से 25 मिनट)**

निम्नांकित प्रकार के बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए बच्चों में समझ विकसित की जायेगी–

- शिक्षण के दौरान पाठ्य पुस्तक में उल्लखित यूरोप में मुद्रण की शुरुआत कैसे हुई– यह इन प्रश्नों के साथ छात्रों को बताया जायेगा।
- 1295 ई. में यात्री मार्कोपोलों कौन था?
- बुड–ब्लॉक क्या होती है?
- पारिभाषिक शब्द – वेलम, कातिब से क्या समझते हैं?
- गुटेन्बर्ग और प्रिंटिंग –

(i) गुटेन्बर्ग द्वारा 1448 तक यंत्र का आविष्कार

(ii) बाइबिल

- नए शब्द – प्लाटेन पर चर्चा करें!

**शिक्षण के अंत में (समय 5 से 10 मिनट )**

निम्नांकित प्रकार के बिन्दुओं के माध्यम से आकलन करेंगे–

- कातिब से क्या आशय हैं?
- वुडब्लॉक किसे कहते है?
- मुद्रण/छपाई मशीन दैनिक जीवन में क्यों आवश्यक है?
- गुटेन्बर्ग कौन था?
- गुटेन्बर्ग ने पहली पुस्तक की छपाई की उसका क्या नाम था?

**गृहकार्य/प्रोजेक्ट–** बच्चे अपने आस–पास के क्षेत्रों में अवलोकन करेंगे कि वहाँ छपाई किस तरह से होती है। इस विषय पर लिखकर लाएंगे।

**शिक्षण की आगामी योजना–** आगामी पाठ्य बिन्दु पर शिक्षण योजना बनाकर उसका क्रियान्वयन।

# नागरिक शास्त्र

# केन्द्रिक लर्निंग आउटकम

1. **तथ्यों, आँकड़ों को पहचानता और पुनः प्राप्त करता है और प्रक्रियाओं को अभिव्यक्ति दे पाता है।**
   - कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं जैसे फ्रांसीसी क्रांति, राष्ट्रवाद, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण और शहरीकरण से जुड़े लोगों के नाम, स्थान, दिनांक याद करता है।
   - राष्ट्रवाद, उपनिवेशवाद, प्राच्यवाद, लोकतंत्र, सत्याग्रह, और स्वतंत्रता जैसे शब्दों और संकल्पनाओं को परिभाषित करता है।
   - संघीयता, विविधता, धर्म, राजनीतिक पार्टी जैसे महत्वपूर्ण शब्दों को परिभाषित करता है।
2. **घटनाओं, तथ्यों और आँकड़ों को वर्गीकृत करता और उनकी तुलना करता है, जैसे–**
   - जर्मेनिया की छवि के साथ भारतमाता की छवि जैसे दृश्यों की तुलना करता है।
   - भारत, दक्षिण अमेरिका, केन्या, इंडोचीन जैसे देशों में उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद के साथ यूरोपीय राष्ट्रवाद की तुलना करता है।
   - भारत में राज्य और केंद्र सरकार की शक्तियों और कार्यों की तुलना करता है।
   - भारत में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का वर्गीकरण करता है।
   - राजनीतिक चर्चाओं में प्रयुक्त शब्दों और उनके अर्थ, जैसे –गांधीवादी, साम्यवादी, धर्मनिरपेक्षतावादी, नारीवादी, जातिवादी, सांप्रदायिकतावादी आदि की व्याख्या करता है।
3. **घटना, कार्यक्रमों और उनकी घटना के बीच कारण और प्रभाव संबंध बताता है, जैसे–**
   - विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं और विकास के बीच कारण और प्रभाव जैसे कि– भारत में राष्ट्रवाद के विकास पर प्रिंट संस्कृति का प्रभाव बताता है।
   - भारत के राज्यों में विभिन्न राजनीतिक दलों की नीतियों और कार्यक्रमों की व्याख्या करता है।
4. **विश्लेषण और जानकारी का मूल्यांकन करता है, जैसे –**
   - आम चुनावों में राजनीतिक दलों की जीत और हार के बारे में बताता है।
   - भारत में लोकतंत्र में सुधार के लिए विभिन्न सुझावों का मूल्यांकन करता है।
   - ग्रंथों और दृश्यों का विश्लेषण करता है, जैसे कि यूरोप के बाहर के देशों में राष्ट्रवाद के प्रतीक यूरोपीय प्रतीकों से कैसे भिन्न हैं।
   - मनरेगा के प्रभाव, ऋण के स्रोत के रूप में बैंकों की भूमिका का आकलन करता है।
   - अपने क्षेत्र/इलाके/स्थानीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण के प्रभाव का आकलन करता है।

5. व्याख्या करता है, उदाहरण के लिए –
    - मानचित्र
    - ग्रंथ
    - प्रतीक
    - आरेख जैसे कि पाइ और बार
    - कार्टून
    - तस्वीरें
    - पोस्टर
    - अखबार की कतरनें
    - यूरोप में विभिन्न संधियों द्वारा लाए गए मानचित्रों में परिवर्तन
    - भारत से पश्चिम एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और दुनिया के अन्य हिस्सों में व्यापार के समुद्री और भूमि लिंक को बनाता है।
6. सामाजिक विज्ञान के साथ अंतर्सम्बंध जोड़ता है–
    - बताता है कि भारत के कुछ क्षेत्रों को क्यों विकसित किया गया है।
    - आर्थिक विकास और लोकतंत्र के बीच संबंधों को दर्शाता है।
7. मान्यताओं/पुरानी सोच/पूर्वाग्रहों/रुढ़ियों की पहचान करता है, उदाहरण के लिए–
    - क्षेत्र
    - ग्रामीण और शहरी क्षेत्र
    - जेंडर
    - भाषा
    - विकास का विचार
    - मतदान का व्यवहार
    - जाति
    - धर्म
    - लोकतंत्र
    - राजनीतिक दल
    - हाशिए पर और निःशक्त लोगों के समूह
    - विभिन्न विकासों, जैसे– भूमंडलीकरण और औद्योगीकरण के कई पक्षों की पहचान करता है।
    - प्रगति और आधुनिकता की धारणा की आलोचना करता है।
8. जिज्ञासा/पूछताछ के कौशल को प्रदर्शित करता है अर्थात् इससे संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत करता है, उदाहरण के लिए–

- विभिन्न देशों के राष्ट्रवादी संघों में महिलाओं की भूमिका
- स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक लोकतंत्र का काम करना।

9. एकत्रित/दी गई जानकारी के आधार पर तर्कों/विचारों का निर्माण करता है, उदाहरण के लिए –
   - किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता
   - ऐतिहासिक घटनाएँ और व्यक्तित्व
10. कार्यक्रमों और घटनाओं का पहले से अनुमान लगाता है, उदाहरण के लिए–
   - कलाकारों और लेखकों द्वारा कला, साहित्य, गीत और कहानियों के माध्यम से राष्ट्रवादी संवेदनाओं का पोषण कैसे किया है, इन स्थितियों से निष्कर्ष निकाल पाता और उन्हें संभावित अतिरिक्त विस्तार दे पाता हैं।
   - मुद्दों और समस्याओं पर रचनात्मक तरीके से जवाब दे पाता है, जैसे क्या होगा यदि– (क) भारत पेट्रोलियम कच्चे तेल का आयात बंद कर देता है? (ख) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बंद हैं? (ग) 2050 में भारत में रोजगार की प्रकृति? (घ) यदि भारत के सभी स्कूलों और अस्पतालों का निजीकरण हो जाता है?
11. निर्णय लेने/समस्या सुलझाने के कौशल दर्शाता है, उदाहरण के लिए–
   - अपने क्षेत्र में निम्नलिखित मुद्दों के समाधान के साथ आता है।
   - यह आकलन करता है कि औपनिवेशिक भारत में विभिन्न क्षेत्रों में कुछ विकास जैसे– साहित्य, परिवहन और उद्योगों में– उपनिवेशवादियों के साथ राष्ट्रवादियों के लिए भी उपयोगी थे।
12. संवेदनशीलता और प्रशंसा कौशल दर्शाता है, उदाहरण के लिए–
   - समाज के विभिन्न दिव्यांग और अन्य सीमांत वर्गों, जैसे वनवासी, शरणार्थी, असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों के साथ सहानुभूति रखता है।
   - राजनीतिक विविधता की सराहना करता है।
   - सांस्कृतिक विविधता की सराहना करता है।
   - धार्मिक विविधता की सराहना करता है।
   - सामाजिक विविधता को पहचानता है।
   - विस्थापन, अतिवाद और प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाएँ, जैसे विभिन्न देशों में भारतीय गिरमिटिया मजदूर, कैरेबियन और फिजी के साथ सहानुभूति रखता है।

# अवधारणा पत्र

## राज्य और नागरिक जीवन

राज्य और नागरिक जीवन एक दूसरे से संबद्ध हैं। मानव जाति ने अपने विकास की यात्रा में जो श्रेष्ठ आविष्कार किए ''राज्य'' उनमें से एक है। राज्य के ही साथ घुली–मिली है उसके सदस्यों की सदस्यता या नागरिकता। वैसे नागरिक ही अपनी चेतना से राज्य बनाते हैं। लेकिन कई बार राजसत्ता अपना चरित्र बदल देती है और नागरिकता का अस्तित्व जैसे नेपथ्य में चला जाता है। लेकिन राज्य को फिर आकार देने के लिए नागरिकों की ही जरूरत होती है। बिना नागरिकों के राज्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इसलिए नागरिकता की स्थितियों को समझने के लिए इतिहास में राज्य के बदलते स्वरूप को समझना जरूरी है। दोनों की ही विकास यात्राएँ लंबी हैं। अलग–अलग जगहों पर समाज विकास के खास दौर में राज्य की उत्पत्ति हुई है। उससे पहले यह संभव नहीं थी। आदिम समाज और कबीलाई जीवन – जहाँ से मानव समाज की शुरुआत मानी जाती है– की परिस्थितियाँ बेहद जटिल और अभावों से भरी थी। इस कारण उच्चस्तरीय राजनीतिक–सामाजिक चिंतन का विकास असंभव था। भौतिक परिस्थितियाँ इसके अनुरूप नहीं थीं। कदम–कदम पर जीवन की असुरक्षा और आहार की चिंता मुँह बाए खड़ी रहती थी। लड़ाइयाँ, बर्बरता और घुमंतू जीवन कबीलाई समाज का अंग थे । यद्यपि आदिम कबीलो में बराबरी की भावना थी, रक्तसंबंधों पर आधारित संवेदनशीलता थी तथा अपने कबीले के प्रति समर्पणभाव था। बस यही कबीले की अलिखित नागरिकता का अलिखित आदर्श था। पर इसे राज्य का रूप मान लेना सही नहीं होगा।

## राज्य का पहला रूप : गण समाज

अनुभवों और समझ के विकास के साथ कबीलों ने गण समाजों का रूप ले लिया। गण कबीलों का परिष्कृत रूप थे। बहुधा गण व्यवस्था घुमंतू पशुचारक अवस्था से कृषि अवस्था में प्रवेश के कारण संभव हुई। अब मानव समाज के पास दो हुनर थे– पशुपालन का ज्ञान और खेती बारी की समझ। इसने मानव समाजों को स्थिर दशा में ला दिया। आहार की चिंता को कम किया और आत्मनिर्भर बनाया। गांवों की बसावट शुरु हुई। खेती व शिल्प के विकास ने तथा अतिरिक्त पैदावार ने व्यापार को संभव बनाया। नगर बसे। संगठन के रूप में कुछ सामाजिक शिक्षाओं और नीति नियमों की जरूरत पड़ी। स्वशासन की भी। तब गणों का उदय हुआ। यह एक आरंभिक लोकतांत्रिक और नियमबद्ध व्यवस्था थी। इसके वयस्क सदस्यों को अपने प्रतिनिधि और नायक चुनने की जरूरत पड़ी। इस प्रकार गणपरिषदों का गठन शुरु हुआ। गण परिषदें अपने गण के आम सदस्यों के मतों का आदर करती थीं और उनके प्रति जवाबदेह थीं।

ईसापूर्व की सदियों में भारत में आर्य कबीले/गण समुदाय अपना नायक चुनते थे, प्राचीन साहित्य में इसे महापितर तथा कहीं कहीं इन्द्र भी कहा गया है। आर्यों की एकाधिक गणपरिषदें थीं। इनका क्षेत्र उत्तर भारत का मध्य और पश्चिमी भाग था। गण खास भूभाग को नियंत्रित करता था। विभिन्न गणों के बीच आपस में मेल और युद्ध की स्थितियाँ रहती थीं। ऐसे संकेत मिलते हैं कि पराजित गणों को विजयी गणों में दास के रूप में अपनाया जाता था।

अपनी विशेष योग्यताओं के कारण कोई दास सामान्य सदस्य की हैसियत भी पा लेता था। सामान्यतया गण बराबरी की भावना पर आधारित थे। इनमें स्त्रियों को विशेष सम्मान प्राप्त था। पुराने भारतीय साहित्य में गणों को 'जनपद' भी कहा गया है। बुद्ध के समय (ईसापूर्व पांचवीं सदी के आस–पास) भारत में 16 महाजनपदों (अनेक गणों को मिलाकर बना राज्य का रूप) के होने का जिक्र प्राचीन साहित्य में मिलता है।

यूरोप में, स्पार्टा, एथेंस, ट्राय, यूनान आदि स्थानों पर गणों की मौजूदगी थी।

नीचे के बॉक्स में कुछ बुद्धकालीन गणों/गणराज्यों का विवरण दिया गया है

**गणराज्य :** **क्षेत्र और केन्द्र**

**कुरू** : हरियाणा के कुछ जिले मेरठ और थानेश्वर का इलाका। केन्द्र– हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ (आधुनिक दिल्ली)

**पांचाल** : पश्चिमी हिमालय के भाबरी इलाके– देहरादून का जौनसार बाबर, बरेली, बदायूँ और फर्रुखाबाद का क्षेत्र। इसकी पूर्वी सीमा नैमिषारण्य तक थी। पश्चिम में मेरठ तक। उत्तरी पांचाल जनपद का केन्द्र अहिच्छत्र (बरेली जिले का रामनगर गाँव) तथा दक्षिणी पांचाल का केन्द्र फर्रुखाबाद था।

**शाक्य** : इसमें नेपाल की तराई का इलाका था। बुद्ध इसी गण मे जन्में थे। इसका केन्द्र आधुनिक तलाराकोट था।

**वत्सगण** : इस गण के अधीन इलाहाबाद और उसके आस–पास का भूभाग था इसका केन्द्र कौशांबी था।

**कौशल** : इस गण के अंतर्गत आज के अयोध्या, गोंडा व बहराइच के इलाके थे। इसके केन्द्र थे साकेत और श्रावस्ती।

**मल्ल** : यह गोरखपुर के आस पास के क्षेत्र में था। केन्द्र थे कुशीनगर और पावा।

**शूरसेन** : इसके अंतर्गत मथुरा आगरा, हाथरस का क्षेत्र था। इसका केन्द्र मथुरा था।

**काशी** : वाराणसी, जौनपुर और उसके आसपास के क्षेत्र इसमें थे। वाराणसी इसका केंद्र था।

**गणराज्य :** **क्षेत्र और केन्द्र**

**मगध** : दक्षिणी बिहार के इलाकों में इसका विस्तार था और केन्द्र राजगीर तथा पटना थे।

**वज्जि और लिच्छवि** : बिहार के दरभंगा और मुजफ्फरपुर के क्षेत्र इसके अंतर्गत थे।संभवतः यह एक संयुक्त गण था। इसके दो केन्द्र थे जनकपुरी और वैशाली।

**चेदि** : इसके अधिकार में बुंदेलखंड का भूभाग था। इसका केन्द्र वर्तमान बांदा के निकट शक्तिमती था।

**मत्स्य** : इस गण के अधीन जयपुर और अलवर तथा आस–पास का क्षेत्र था। इसका केन्द्र विराटनगर था।

**अश्मक** : इसके अंतर्गत गोदावरी घाटी के कुछ जिले थे तथा केन्द्र तब का पांड्य नामक स्थान था।

**अवंति** : मालवा क्षेत्र में इसका विस्तार था और केन्द्र था उज्जयिनी ।

**गांधार** : इसका फैलाव पाकिस्तान और अफगानिस्तान के कुछ जिलों में था। केन्द्र तक्षशिला में था।

**कंबोज** : इसका क्षेत्र अफगानिस्तान के कुछ जिलों में था। केन्द्र राजापुर था।

गणों का राजतंत्र में रूपांतर –

समय बीतने के साथ गणों का राजतंत्र में बदलना शुरु हुआ। इसके ये कारण थे–

- कृषि और शिल्पों के विकास के साथ समाज में उपयोग की चीजों का अतिरिक्त उत्पादन (अधिशेष) होने लगा। यह समाज की आवश्यकता से अधिक था।
- इसका एक भाग व्यापार में लगे यह जरूरी था। गणों की सीमाएँ होती थीं। व्यापार के लिए एक बड़ा और निर्बाध क्षेत्र चाहिए था। ताकि समाज का व्यापारी और श्रेष्ठि वर्ग दूरस्थ क्षेत्रों तक व्यापार कर सके।
- समाज में कामकाज के अनेक नए रूप पैदा हो गए थे। किसान, खेत मजदूर, दास, शिल्पी और अन्य कामगार वर्ग पैदा हो गए थे। इनमें श्रमिक और शिल्पी अपने गणों की सीमाओं से बाहर भी हुनर दिखाना चाहते थे।

- अतिरिक्त उत्पादन से प्राप्त अनाज, उत्पादक वस्तुएं और अन्य सामग्री समाज के अधिकार प्राप्त लोगों के हिस्से में गई। ये थे गण परिषदों के सदस्य, गणपति, बड़ी भूमियों के स्वामी, पुरोहित। इनकी महत्वाकांक्षाएँ बढ़ गईं। धीरे–धीरे गणपति राजा बनने लगे, राजा वंशानुगत होने लगा। गण के सामान्य सदस्यों द्वारा चुनी गई गणपरिषदों की जगह राजा द्वारा नामित मंत्रिपरिषद ने ले ली। राजा इनकी सलाह से राज्य का शासन चलाने लगा। पुरोहित वर्ग राज्य का बौद्धिक प्रतिनिधि बना। साधारण नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और मत का मूल्य लगभग शून्य हो गया। सभी शक्तियाँ राजा और उसके मंत्रिमंडल में समाहित हो गईं।
- ईसापूर्व 600 वर्ष से 200 वर्ष के बीच भारत में सामाजिक, धार्मिक नीतियों, आचार–व्यवहार और राजनीति से संबंधित प्रचुर साहित्य का सृजन किया गया। इसने वर्गो में बँटे राजतंत्रीय समाज के लिए वैचारिक–सांस्कृतिक जमीन तैयार की। इसमें साधारण और विशिष्ट नागरिकों का उनके कर्त्तव्य/श्रम के आधार पर श्रेणीकरण/वर्ण विभाजन किया गया। यह व्यवस्था आगे जाकर जाति–व्यवस्था में बदल गई। गांवों में जातीय–पंचायतें और नगरों में शिल्पियों की श्रेणियॉ जाति व्यवस्था के आधार पर रुढ़िबद्ध हो गईं। इनके सदस्यों को दोहरा कर्तव्यपालन करना होता था। अपने प्रभु राजा के प्रति और अपनी जातीय पंचायत या श्रेणी प्रधान के प्रति। जाहिर है कि तब कर व्यवस्था भी दोहरी थी। राजा या प्रभु की देनदारी तथा अपनी श्रेणियों द्वारा निर्धारित आंशिक दाय भाग (सहयोग राशि)।

## गणों–राजतंत्रों में संघर्ष और साधारण जनता

गणों के राजतंत्र में बदलने का काम आसान नहीं रहा। अनेक गणों ने समानता और लोकतंत्र के आदर्श नहीं छोड़ने चाहे। राजतंत्रों ने उनपर आक्रमण किए। राजाओं को डर था कि उनके राज्यों के निकट गण समाज बने रहे तो उनकी समतामूलक भावनाएँ राजतंत्र के एकाधिकारी शासन में विद्रोह खड़ा कर सकती हैं। इसलिए एकाधिक राजाओं ने मिलकर अनेक गणों को नष्ट किया। उनके भूभाग आपस में बाँट लिए। 328 ईसापूर्व में स्थापित विशाल मौर्य साम्राज्य उत्तर भारत के अधिकांश गणों को पराजित और खुद में समाहित कर बनाया गया था। 55000 वर्ग किमी में फैला यह राज्य ज्ञात इतिहास में भारत का पहला शास्त्रीय (क्लासिक) साम्राज्य (मोनार्क) था।

यद्यपि मौर्य साम्राज्य बड़ा था। इसने व्यापार और मजबूत राज्य के मानदंड स्थापित किए। लेकिन यह एक विषम वर्गीय समाज था जिसमें श्रमिकों, शिल्पियों और दासों की स्थिति कमतर और अभावग्रस्त रही। अपनी जीवनदशाओं से हताश लोगों ने छिटपुट विद्रोह किए जिनका खास प्रभाव नहीं रहा। सैकड़ों हजारों लोगों ने बौद्ध धर्म की शरण ली। बौद्ध धर्म उनकी समस्याओं का हल तो नहीं देता था पर यहाँ आकर वे जीवन की कठिनाइयों और अभावों से कुछ सीमा तक मुक्ति अनुभव करते थे। उस काल के ऐसे साधारण स्त्री–पुरुषों की भावनाएँ

बौद्ध ग्रंथ 'थेरगाथा' और 'थेरी गाथा' में संकलित हैं। तो भी कहना होगा कि मौर्य साम्राज्य की स्थापना ने इतिहास को गति दी और एक सुदृढ़ राज्य व्यवस्था के मानदंड स्थापित किए।

बड़े साम्राज्यों की यह जरूरत थी कि बड़े राज्य संचालन के लिए कुछ केंद्रीय नियम निर्धारित करें, व्यापार वाणिज्य को बढ़ावा दें और इसके लिए राज्य के सभी भागों में आवागमन संभव बनाएँ। व्यापारी, श्रेष्ठि समुदाय और श्रमिक, शिल्पी भी इसमें अपना लाभ देखते थे। व्यापारी अधिकाधिक स्थानों पर व्यापार और लाभ के रूप में तथा श्रमिक और शिल्पी अच्छी मजदूरी की आशा में नई जगह हुनर दिखाने की उम्मीद में । बड़े राज्य के नियमों, कार्यों में उनकी सुविधा के लिए कुछ गुँजाइश निकल आती थी। हम कल्पना ही कर सकते हैं कि अशोक महान ने जब ग्रांड ट्रंक रोड (कलकत्ता से पेशावर) बनाई होगी तो कितने श्रमिक और शिल्पी काम में लगे होंगे और कितने ही दासों को मुक्त श्रमिक बनने के अवसर भी मिल गए होंगे।

## सामंतवाद का विकास और साधारण नागरिकों की स्थिति

**मौर्य साम्राज्य के बाद** – उत्तर भारत में क्रमशः शुंग, कण्व, सातवाहन और गुप्त वंश के शासन रहे। गुप्त काल में कला कौशल की उन्नति हुई। लेकिन उसके बाद हम भारतीय 'राज्य' का स्वरूप बदला पाते हैं। ईसा की पहली दूसरी सदियों से राजाओं द्वारा अपने सेनाधिकारियों, सामंतों, उपसामंतों, दरबारी विद्वानों, धार्मिक संस्थाओं तथा पुरोहितों को भूमि दान करने (जागीरें देने) की प्रवृत्ति जोर पकड़ने लगी। गुप्तकाल के बाद भारत में राष्ट्रकूट, वाकाटक, प्रतिहार, पाल, गौड़, गहड़वाल, सेन, कलचुरि, चालुक्य आदि वंशों के राजाओं ने इस प्रथा को बहुत बढ़ाया। दूसरी से करीब तेरहवीं सदी तक भारी पैमाने पर यह काम हुआ। समूचे भारत में इस अवधि के 'दानपत्र' भारी संख्या में मिले हैं। सामंतों को इतने व्यापक पैमाने पर भूमिदान से राज्य के साधारण जनों की स्थिति विचित्र हो गई। इस विचित्रता को समझने के लिए भूमिदान के प्रकार और शर्तों को जान लेना होगा –

- राजा कुछ गाँवों से हजार गाँवों तक की भूमि सामंत को दान में देता था। उसके बाद उन गाँवों की जनता सामंत की प्रजा हो जाती थी, भूमि का स्वामी सामंत ही उन गाँवों से कर वसूलने, न्याय करने या दंड देने का अधिकारी हो जाता था। सामंत अपनी सेना रख भी सकता था और नहीं भी। भूमि के बदले वह अपने प्रभु राजा को एकमुश्त कर/लगान देता था और उसके लिये युद्ध में सैनिकों का बंदोबस्त करता था। राजा और उसके अनुचर उसकी दानभूमि में कोई दखल नहीं देते थे। सम्बंधित भूमि में सामंत के अपने नियम कायदे चलते थे।
- दान की गई भूमि कभी–कभार वापस ले ली जाती थी। तब प्रजा में फिर से नए स्वामी के नियम कायदे चलने लगते थे। कभी दान में दी गई भूमि पर राजा और सामंत का

संयुक्त स्वामित्व चलता था। गाँव वासियों को कुछ कर राजा को तथा कुछ देय सामंत को देने होते थे।

- सामंत कभी अपनी इच्छा से तो कभी राजा की आज्ञा से अपनी भूमि का एक भाग किसी सैनिक सरदार या उप–सामंत या अन्य को दान कर देता था, तो इस भूभाग की प्रजा अन्य स्वामी के मातहत हो जाती। तब यह नया स्वामी अपनी जागीर में, कर, न्याय और अपराध संबंधी अपने नियम चलाने लगता था।
- धार्मिक संस्थाओं जैसे मंदिर, मठ या अन्य शैक्षिक संस्था को दिए दान से राजा कोई कर नहीं वसूलता था। लेकिन इन संस्थाओं के संचालकों को अपना खर्च चलाने के लिए संबंधित गॉव से अनाज, मुद्रा, पशु तथा अन्य रूपों में कर लेने का अधिकार था। बौद्ध विहार नालंदा को एक समय आस–पास के 200 गाँवो से कर वसूलने का अधिकार था। इससे उसका खर्च चलता था।
- राजा की ओर से दान देते समय ही दानपत्र पर प्रजा के कर देने, सामंत को स्वामी और दंडाधिकारी मानने संबंधी आदेश लिख दिए जाते।
- राजा, सामंत या किसी संस्था को कर देने का एक तरीका यह था कि कर देने वाला किसान, श्रमिक, शिल्पी या दास उसे 'विष्टि' (बेगार) दे।
- बहुधा सामंत या भू स्वामी किसानों को भूमि के छोटे–छोटे टुकड़े निर्वाह के लिए देते थे। तब उन्हें दोहरा श्रम करना होता था। अपने निर्वाह हेतु अपनी भूमि पर और स्वामी की सेवा के लिए उसकी भूमि पर।
- लगभग हर सामंत, राजा, या भूस्वामी की कोशिश रहती थी कि उसकी जागीर के किसान, श्रमिक और शिल्पी उसकी जागीर छोड़ दूसरे में काम करने न जाएँ। अक्सर दानपत्र में यह उल्लेख होता भी था। शहरों में शिल्पी या कारीगर अपने श्रेणी प्रधान की आज्ञा के बिना अपना पेशा नहीं बदल सकते थे।
- इस प्रकार के संबंधों में भूमि या संपत्ति के स्वामी बदल सकते थे लेकिन प्रजा (नागरिकों) को अपना स्वामी, श्रेणी या व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता नहीं थी। यद्यपि इसके अपवाद भी होंगे और समय के साथ अनेक किसान स्वतंत्र हो गए।

इस करीब 1200 वर्ष की अवधि में साधारण जनता के जीवन का प्रवाह जैसे ठहर–सा गया था। इस काल के सिक्के बहुत कम मिले हैं इससे व्यापार के ह्रास का अनुमान लगता है। लेकिन इन परिस्थितियों ने भारतीय गाँवों में एक स्वायत्त–आत्मनिर्भर व्यवस्था को जन्म दिया। गाँव अपनी बुनियादी जरूरत की चीजें स्वयं पैदा कर लेते थे। यद्यपि ये जरूरतें बहुत सीमित थीं।

तो यह था सामंती व्यवस्था में साधारण नागरिकों का जीवन। उनके कर्तव्य और अधिकार और सुविधाएँ अब तक सुस्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं थे। बड़े राजतंत्रों के समय बने कुछ विधान भी कहीं खो गए थे।

यूरोप में भी कमोबेश इसी अवधि में बड़े राजतंत्रों के बाद छोटे राजाओं और सामंतों का समय आया। राजाओं की सामंतों पर निर्भरता अत्यधिक बढ़ गई। राजाओं (किंग्स) द्वारा नाइट्स, ड्यूक, युद्ध सरदारों तथा चर्च को प्रचुर मात्रा में भूमि दान दिए गए। फलतः ये भूस्वामी बन गए और अपने भूभाग के किसानों पर अपने स्वेच्छाचारी नियम लागू किए। विभिन्न राजाओं द्वारा सर्वाधिक दान योरोपियन चर्च को दिया गया और ग्यारहवीं से तेरहवीं सदी के बीच चर्च यूरोप का सबसे बडा भूस्वामी था। जहाँ तक नागरिकों का प्रश्न है– यहाँ के किसानों और साधारण लोगों को राज्य और चर्च दोनों को कर देने होते थे, न चुका पाने की स्थिति में सजा देने या 'दास' बनाने का चलन भी था।

**भारत में बारहवीं से सोलहवीं सदी : राज्य और जनता –**

दसवीं सदी के बाद में क्रमशः तुर्क, गुलाम और खिलजी वंशों के राज्य रहे। इनके बाद बड़े राज्य के रूप में मुगल साम्राज्य स्थापित हुआ। लेकिन भारतीय सामंती व्यवस्था टूटी नहीं। मुगल राज्य में कृषि संबंधी कुछ सुधार हुए। विभिन्न कारणों से स्वतंत्र किसानों की संख्या बढ़ी। शिल्पों और व्यापार का विकास हुआ। कृषि व निर्माण आधारित दस्तकारी के विकास के कारण गाँवों की जनता का एक भाग मुक्त श्रमिकों के रूप में नगरों में आया। आंशिक रूप में दास रहे सत्रहवीं सदी तक भारत में कपास आधारित कपड़ा निर्माण चरम सीमा पर था। भारतीय करघों पर बने कपड़ों की संसार भर में धूम भी। मुगल साम्राज्य को नष्ट होना ही था क्योंकि भारतीय दस्तकारी, व्यापार और कृषि उस मुकाम पर थे जहाँ राजतंत्र और सामंतवाद उपयोगी राजनीतिक व्यवस्था नहीं रह गए थे। बहुत संभव था कि ब्रिटेन और फ्रांस की तरह भारत में भी कोई औद्योगिक या लोकतांत्रिक क्रांति होती, भारतीय किसान, श्रमिक, शिल्पी, कलाकार, बुद्धिजीवी इसके अग्रदूत बनते। लेकिन तभी यूरोपीय व्यापारियों का एक दुर्घटना की तरह भारत आगमन हुआ और देश उनकी गुलामी की जंजीरों में जकड़ा गया। अब भारत एक उपनिवेश था। अंग्रेजों ने सबसे पहले भारतीय कृषि और दस्तकारी की रीढ़ तोड़ी।

**उपनिवेशी राज्य और नागरिकों की स्थिति**

भारत ही नहीं यूरोप के विकसित देशों ने थोड़ा आगे, पीछे अपने व्यापारियों और सेना के बल पर एशिया और अफ्रीका के अन्य देशों को भी उपनिवेश बनाया और जैसे इनकी आर्थिक राजनीतिक स्वतंत्रता पर ग्रहण सा लगा दिया। जनता की राजनीतिक, सामाजिक स्वतंत्रता व अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाया। जहाँ यूरोप में नागरिकों की स्वतंत्रता, वोट और उनसे चुनी जाने वाली सरकारों के नारे हवा में गूँज रहे थे वहीं उपनिवेशों में नागरिक स्वतंत्रता वोट और दलीय राजनीति की स्वतंत्रता की बातें अँधेरे में डाल दी गयीं। अपनी नागरिकता स्वतंत्रता के लिए एशियाई–अफ्रीकी देशों की जनता को करीब 200 साल लड़ना पड़ा। लेकिन बीसवीं सदी एशिया और अफ्रीका के लिए जैसे आजादी की सुबह लेकर आई। इनके देश एक–एक कर उपनिवेशवादियों और राजाओं–सामंतो की गुलामी से मुक्त हुए। इन देशों ने अपने स्वतंत्र संविधान बनाए, नागरिकों को मतदान के अधिकार दिए और उनके वोट से चुनी सरकारें बनाईं।

स्वयं भारत 200 वर्ष के अनवरत संघर्ष के बाद 1947 में स्वतंत्र देश बना। यद्यपि जनदबाव के कारण भारत में प्रान्तों का निर्माण 1947 से पहले ही शुरू हो गया था। विभिन्न राज्यों में विधानसभाओं का औपचारिक गठन भी होने लगा था। 1921 से 30 के बीच विभिन्न राज्यों में नागरिकों को मतदान के अधिकार भी मिले थे। पर ब्रिटिश अधिकारियों ने इसके लिए संपत्ति के मालिक होने, नगरपालिका का कर देने तथा एक निर्धारित वार्षिक आय होने जैसी शर्तें लगा दी थीं। पर 1947 से 50 के बीच भारत ने अपना विशाल संविधान तैयार किया और 21 वर्ष से ऊपर के वयस्कों को बिना शर्त मतदान का अधिकार दे दिया। भारतीय संविधान में नागरिकों के मूल अधिकार, कर्तव्य और नीति निर्देशक तत्व परिभाषित हुए। इसमें प्रांतों और केन्द्र के (संघ) अधिकारों और दायित्वों का भी निर्धारण किया गया है।

<u>आधुनिक स्वतंत्र राज्यों के प्रकार</u> –

आधुनिक विश्व में लगभग सभी देश स्वतंत्र और स्वायत्त हैं। अनेक भिन्नताओं के बीच मुख्य रूप से तीन प्रकार की राज्य प्रणालियाँ चलन में है 1) बहुदलीय लोकतांत्रिक पूंजीवादी राज्य 2) एकदलीय समाजवादी राज्य 3) धार्मिक – निर्दलीय राजशाही राज्य।

- बहुदलीय लोकतांत्रिक पूंजीवादी राज्य– बहुदलीय लोकतंत्र में सामाजिक विविधताओं और वर्गों का स्थान बना रहता है। ऐसे देशों में तय अवधि में आम–चुनाव होते हैं। बहुमत प्राप्त दल शासन करता है। राज्य सभी वर्गों और समुदायों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ बनाता है। ऐसे सभी देशों का भी अपना लिखित संविधान है पर अनेक बार उच्च वर्ग के सदस्य जो राजनीतिक सामाजिक रूप से ताकतवर हो जाते हैं अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करने लगते हैं।
- एकदलीय समाजवादी राज्य– एकदलीय समाजवादी प्रणाली किसानों, श्रमिकों के विकास पर अधिक जोर देती है। समाजवादी राज्य में निजी संपत्ति बढ़ाने को हतोत्साहित किया जाता है। बीसवीं सदी के आरंभ में समाजवादी देशों में अपने संविधान में रोजगार के अधिकार को सभी नागरिकों का मूल अधिकार बनाया था। लेकिन इसमें एक ही राजनीतिक दल के लगातार सत्ता में बने रहने के कारण शीर्ष राजनीतिज्ञों द्वारा पद और अधिकारों के दुरुपयोग की संभावना रहती है।
- धार्मिक निर्दलीय राजशाही– राज्य का एक अन्य आधुनिक प्रकार है। इसमें धर्म, बादशाहत/राजतंत्र और आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य के कुछ नियमों का मिश्रण किया जाता है। संयुक्त अरब अमीरात के अनेक देश इसका उदाहरण हैं।

**सोचने के लिए प्रश्न**

आपकी समझ से किसी राज्य/देश के ये कार्य कितने प्रासंगिक हैं?

- आधुनिक औद्योगिक और वैज्ञानिक सभ्यता के काल में हजार वर्ष पुराने धार्मिक नियमों के अनुसार राज्य संचालन का आग्रह करना।
- किसी राजनीतिक दल के मुखिया द्वारा संसद में ऐसा विधान पारित करना कि वह आजीवन देश का मुखिया बना रह सके।
- राज्य द्वारा देश की सांस्कृतिक विविधताओं, बहुभाषिता, स्थानीय व पारंपरिक ज्ञान संपदा की उपेक्षा करना।
- लोकतांत्रिक पद्धति से मतों के आधार पर चुनाव न कराना।
- जनसाधारण की आर्थिक–सामाजिक दुर्दशा की उपेक्षा करना। उसके विचारों/मतों को अनदेखा करना।

## पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु

नागरिक शास्त्र की नवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक लोकतंत्र और उसके विभिन्न अंगों की अवधारणात्मक समझ बनाने पर केंद्रित थी। दसवीं की पाठ्यपुस्तक 'लोकतांत्रिक राजनीति–2' लोकतांत्रिक देशों की कार्यप्रणाली, उनमें मौजूद संघवाद, उनमें राजनीतिक दलों की स्थिति और उनकी भूमिका का वर्णन करती है। इसके साथ पुस्तक में बहुदलीय लोकतांत्रिक राष्ट्रों तथा एकाधिकार शासन वाले राष्ट्रों की तुलना करते हुए भारत जैसे बहुदलीय लोकतंत्र को अधिक उपयुक्त बताया गया है। पाठ्य पुस्तक का–

**पहला अध्याय** 'सत्ता की साझेदारी' नाम से है। इसमें बेल्जियम और श्रीलंका की तुलना करते हुए समझाया गया है कि बहुभाषी देश बेल्जियम ने अपने यहाँ सभी भाषाई समुदायों को सत्ता में भागीदारी दी और देश को जनअसंतोष तथा अस्थिरता से बचा लिया। श्रीलंका में बहुसंख्यक बौद्धवाद को वरीयता दी गई। बौद्ध धार्मिकों को सत्ता में विशेष अधिकार दिए गए तो वहां तमिल जनअसंतोष फूट पड़ा और देश को अनेक वर्ष के सामुदायिक संघर्ष से गुजरना पड़ा।

**दूसरा अध्याय** लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में 'संघवाद' की उदाहरणों सहित व्याख्या करता है। उसका औचित्य बताता है। यह संघीय लोकतंत्र के निम्नलिखित मानदंड प्रस्तुत करता है।

- संसार के दो स्तर और द्विस्तरीय नागरिकता
- केंद्र और प्रांतों के सुपरिभाषित अधिकार क्षेत्र और कर्तव्य
- देश के मौलिक प्रावधान बनाने में या उनमें बदलाव करने के लिए केंद्रीय और प्रांतीय सरकारों की साझा सहमति

- देश के राजस्व स्रोतों का केंद्र और राज्य/प्रांत के बीच उचित बँटवारा
- दोहरे उद्देश्यों का निर्धारण (क – देश की सुरक्षा, ख – क्षेत्रीय विविधताओं का आधार)
- केंद्र प्रांत विवाद की स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय को निर्णायक मानना

इसके अलावा अध्याय में भारत में भाषाई आधार पर राज्य गठन का औचित्य स्पष्ट किया गया है तथा भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के लिए देश की 21 अनुसूचित भाषाओं में परीक्षा देने की सुविधा को लोकतंत्र के जनोन्मुखता के तौर पर समझा गया है। अध्याय देश में क्षेत्रीय दलों के उदय और स्थानीय पंचायतों के गठन को लोकतंत्र के विकास का लक्षण मानता है।

**तीसरा अध्याय** 'जाति, धर्म और लैंगिक मसले' शीर्षक से है। और इन्हीं की अंतर्राष्ट्रीय – राष्ट्रीय विवेचना करता है। अध्याय भारत के अधिकांश राज्यों में स्त्रियों का अनुपात पुरुषों की तुलना में कम होने को चिंतनीय मुद्दे के तौर पर देखता है और उसके सामाजिक कारणों की तहें खोलता है। इस समस्या के समाधान को लेकर भारतीय राज्य द्वारा विभिन्न स्तरों पर स्त्रियों के लिए राजनैतिक प्रतिनिधित्व सुरक्षित करने हेतु प्रशंसा भाव प्रकट करता है।

धर्म को लेकर अध्याय में भारतीय संविधान में लिखित धर्म–निरपेक्षता की नीति को दूरदर्शिता पूर्ण और देशहित में उपयुक्त बताया गया है। यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारतीय लोकतंत्र पर विश्वास के लिए किसी धर्म को मानना जरूरी नहीं है। जाति के मुद्दे को भारत की एक विशिष्ट समस्या के रूप में पहचाना गया है। समय–समय पर इसके समाधान के लिए भारतीय राज्य द्वारा किए गए संवैधानिक प्रयासों की बाबत बताया गया है। अध्याय का समापन बाबूराव बागल की एक कविता से होता है।

**चौथा अध्याय** – भारतीय राजनैतिक दलों पर केन्द्रित है। इसमें पहले उनकी प्रासंगिकता स्पष्ट की गई है, फिर 'राजनैतिक दल' को परिभाषित करते हुए लोकतंत्र में उनके कार्यों की व्याख्या की गई है। अध्याय विभिन्न राजनैतिक दलों को विभिन्न सामाजिक–आर्थिक समुदायों के प्रतिनिधि के रूप में देखता है। इनके जरिए वे सत्ता में भागीदारी करते हैं। अध्याय के दूसरे भाग में भारत में मौजूद विभिन्न राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनैतिक दलों का परिचय दिया गया है और उनकी कार्यप्रणाली में सुधार के लिए कुछ मुद्दे सुझाए गए हैं।

**पांचवा अध्याय** 'लोकतंत्र के परिणाम' नाम से है, इसमें लोकतंत्र के मूल्यांकन की कुछ कसौटियां प्रस्तुत की गई हैं। जिसके आधार पर विश्व के किसी देश में लोकतंत्र की उपस्थिति का आकलन किया जा सकता है। यह कसौटियां निम्नलिखित हैं :–

- उत्तरदायी और वैध शासन
- जनता द्वारा विभिन्न राजनीतिक दलों की भूमिकाओं पर विश्वास
- आर्थिक समृद्धि और विकास
- असमानता और गरीबी का घटना
- सामाजिक विविधताओं के बीच सामंजस्य की स्थापना

- नागरिकों की गरिमा और आजादी को महत्व मिलना, राज्य/शासन द्वारा उन्हें प्रजा की जगह सम्मानित नागरिक के रूप में देखना।

पुस्तक में दिए विविध अभ्यासों का विवरण निम्नलिखित है –

| | |
|---|---|
| मानचित्र | 8 |
| 'बात बोले, भेद खोले' (संख्याओं/तथ्यों की जानकारी और उनके प्रति सजगता के सुझाव) | 15 |
| इन्नी उन्नी के सोचू सवाल (इनका जवाब किताब से और तत्काल मिले, जरूरी नहीं) | 30 |
| स्वतंत्र चित्र, फोटोग्राफ्स, पोस्टर्स व कार्टून | 37 |
| 'क्या समझा क्या जाना' (अपनी समझ की जांच पारख के लिए प्रश्न और तथ्य) | 10 |
| जानकारी बॉक्स | 4 |
| 'खोजबीन पर निकले हम' (खोजबीन आधारित प्रोजेक्ट कार्य) | 4 |
| अध्ययन, विश्लेषण हेतु तालिकाएं. 'खुद करें खुद सीखें' | 5 |
| आरेख – (थंब – 5, पाई – 2, ग्राफ – 1 ) | 8 |
| 'अखबारनामा' (खबरें पढ़ने व उनके वर्गीकरण, विश्लेषण का काम) | 1 |
| 'सुनो रेडियो' (रेडियो सुनकर समाचार विश्लेषण करना) | 1 |
| कविता | 1 |
| **प्रश्नावलियों के अभ्यास प्रश्न** | 52 |

## दिवसवार अध्याय की विषयवस्तु का विभाजन

| अध्याय संख्या, नाम, निर्धारित दिवस | दिवस | पाठ्यवस्तु / पाठ्यबिन्दु |
|---|---|---|
| पाठ–1, संस्थाओं का कामकाज,<br><br>दिवस 08 | 1 | सत्ता का तात्पर्य प्राधिकृत शक्ति या राजनीतिक शक्ति<br>● लोकतंत्र एक बुनियादी सिद्धांत।<br>● समस्त शक्ति का स्रोत जनता।<br>● सत्ता का विकेन्द्रीकरण कामकाज के लिए आवश्यक।<br>● स्वशासी संस्थाओं द्वारा शासन।<br>● नागरिकों एवं संस्थाओं के सुझाव को सार्वजनिक नीतियों में स्थान। |
| | 2 | नागरिकों की राजनीतिक सत्ता में हिस्सेदारी एवं उसका स्वरूप<br>● विभिन्न अंगों के मध्य सत्ता का क्षैतिज वितरण।<br>● सत्ता का संतुलन / नियंत्रण एवं संतुलन की व्यवस्था।<br>● विभिन्न स्तरों पर सरकारों के मध्य सत्ता का विभाजन भारत, श्रीलंका, बेल्जियम |
| | 3 | सत्ता का ऊर्ध्वाधर बंटवारा (उच्चतर से निम्नतर)<br>● विभिन्न समूहों में सत्ता का विभाजन<br>● भाषायी और धार्मिक समूहों की सत्ता में साझेदारी (बेल्जियम का संदर्भ)<br>● सत्ता में उचित हिस्सेदारी।<br>● दबाव समूह, जन आन्दोलन और सत्ता |
| | 4 | चर्चा–परिचर्चा, समूह कार्य, पुनरावृत्ति। |
| | 5 | सत्ता की साझेदारी आवश्यक क्यो?<br>● लोकतंत्र की आत्मा एवं लोकतांत्रिक व्यवस्था<br>● सभी समूहों का शासन व्यवस्थाओं से जुड़ाव<br>● युक्तिपरक तर्क (लाभकारी परिणामों पर जोर )<br>● नैतिक तर्क (सत्ता के बटवारे में निहित ) |
| | 6 | पुनरावृत्ति के साथ रोल प्ले, गृहकार्य |
| | 7 | विभिन्न देशों में सत्ता की साझेदारी के स्वरूप एवं उदाहरण<br>● फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम एवं श्रीलंका।<br>● जनसंख्या, समाज की संरचना (जातीय आधार)<br>● डच, फ्रेंच, जर्मन, एवं तमिल (भाषाई आधार) |

| | | |
|---|---|---|
| | | • आर्थिक विकास एवं शिक्षा<br>• समूहों के बीच तनाव<br>• एथनिक (जातीय), संस्कृति, धर्म एवं राष्ट्रीयता<br>• श्रीलंका का बहुसंख्यकवाद<br>• बेल्जियम की समझदारी |
| | 8 | प्रोजेक्ट कार्य |
| पाठ–2, संघवाद,<br><br>दिवस 07 | 1 | संघवाद से आशय/भारत में संघीय व्यवस्था<br>• संघवाद का अर्थ<br>• संघवाद की विशेषताएं<br>• केंद्रीय सरकार और प्रांतीय सरकार<br>• सूची और अनुसूची |
| | 2 | संघीय शासन व्यवस्था का संचालन एवं भाषायी राज्य<br>• संघात्मक और एकात्मक शासन प्रणाली<br>• भारत की राजनीतिक इकाइयां<br>• नए राज्यों के निर्माण के आधार |
| | 3 | पुनरावृत्ति – पिछले तीन दिनों में पढ़ाये गये बिन्दुओं को दोहराना। |
| | 4 | केंद्र–राज्य संबंध –<br>• केन्द्र और राज्य की सरकारें<br>• राजनीतिक क्षेत्रीय दल<br>• गठबन्धन की सरकार |
| | 5 | भारत की भाषायी विविधता –<br>• भाषा एवं राजभाषा |
| | 6 | भारत में विकेन्द्रीकरण<br>• केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण (ब्राजील में विकेन्द्रीकरण का प्रयोग)<br>• पंचायतीराज |
| | 7 | प्रोजेक्ट/मूल्यांकन –<br>• विश्व मानचित्र पर संघात्मक व्यवस्था वाले देशों को दर्शाना<br>• संघवाद का चित्र बनाकर दर्शाना।<br>• मूल्यांकन के लिए टेस्ट कराना। |
| पाठ–3, जाति, धर्म और लैंगिक | 1 | लैंगिक मसले<br>• सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आधार एवं शैक्षिक आधार पर भेदभाव। |

| | | |
|---|---|---|
| मसले,<br>दिवस 10 | 2 | महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व<br>● राजनीति में महिलाओं की नगण्य भूमिका<br>● महिलाओं के अधिकारों के लिये आन्दोलन<br>● रोजगार के अवसरों में असमानता |
| | 3 | अब तक की पाठ्य वस्तुओं की पुनरावृत्ति |
| | 4 | धर्म, साम्प्रदायिकता और राजनीति<br>● साम्प्रदायिकता से तात्पर्य<br>● धर्म का राजनीति में प्रवेश<br>● साम्प्रदायिक आधार पर राजनीतिक गोलबन्दी<br>● साम्प्रदायिकता लोकतंत्र के लिये चुनौती<br>● साम्प्रदायिकता की अस्मिता पर राजनीतिकरण |
| | 5 | धर्म निरपेक्ष शासन<br>● धर्म निरपेक्षता संविधान का बुनियादी सिद्धान्त<br>● धार्मिक आधार पर भेदभाव असंवैधानिक<br>● राजनीतिक ध्रुवीकरण (धार्मिक आधार पर)<br>● भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता की भावना<br>● अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा |
| | 6 | पुनरावृत्ति |
| | 7 | जाति और राजनीति<br>● जातिगत आधार पर समाज का विभाजन<br>● सामाजिक असमानता व श्रम का विभाजन<br>● छुआछूत का व्यवहार<br>● वर्ण व्यवस्था की समझ |
| | 8 | भारत की सामाजिक और धार्मिक विविधता<br>● जाति एवं भेदभाव मुक्त समाज का निर्माण<br>● आधुनिक भारत में जातियों की संरचना एवं जाति व्यवस्था में परिवर्तन<br>● आर्थिक विकास, शहरीकरण, शिक्षा का विकास, पेशा चुनने की आजादी |
| | 9 | राजनीति में जाति एवं जाति के अंदर राजनीति<br>जातीय ध्रुवीकरण<br>जातीय आधार पर दलों की मनोदशा |

| | | |
|---|---|---|
| | | जातीय आधार पर वोट |
| | 10 | मूल्यांकन प्रश्न/प्रोजेक्ट कार्य |
| पाठ–4, राजनीतिक दल, दिवस 09 | 1 | राजनीतिक दलों की जरूरत क्यों?<br>• प्रतिनिधि लोकतंत्र और राजनीतिक दल<br>• संविधान निर्माण एवं सरकार के गठन हेतु दल<br>• जनमत निर्माण हेतु, विपक्षी दल की भूमिका |
| | 2 | राजनीतिक दल का अर्थ एवं कार्य–<br>• दल या समूह से राजनीतिक दल अलग कैसे?<br>• राजनीतिक दलों के आवश्यक तत्व<br>• राजनीतिक दल के प्रमुख कार्य |
| | 3 | पुनरावृत्ति |
| | 4 | राजनीतिक दल कितने?<br>• एक दलीय व्यवस्था के लाभ–हानि ।<br>• द्विदलीय व्यवस्था तथा इसके लाभ–हानि।<br>• बहुदलीय व्यवस्था, लाभ–हानि । |
| | 5 | भारत में प्रमुख राजनीतिक दल<br>• राष्ट्रीय दल तथा क्षेत्रीय दल<br>• भारत के प्रमुख राजनीतिक दल<br>• उत्तर प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दल |
| | 6 | पुनरावृत्ति कार्य |
| | 7 | राजनीतिक दलों की चुनौतियाँ।<br>• दलों के अन्दर लोकतंत्र की चुनौती<br>• नैतिकता, नेतृत्व एवं संगठन तथा धनबल व बाहुबल की चुनौती |
| | 8 | राजनीतिक दलों में सुधार<br>• दल–बदल कानून<br>• सिद्धांत व नीतियों में नैतिकता<br>• योग्य नेतृत्व व जनभावना का सम्मान |
| | 9 | मूल्यांकन/प्रोजेक्ट कार्य |
| पाठ–5, लोकतंत्र के परिणाम, | 1 | उत्तरदायी, जिम्मेदार एवं वैध शासन<br>• उत्तरदायी सरकार एवं लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं<br>• लोगों का निर्णय प्रक्रिया में शामिल होना<br>• बातचीत और तोलमोल के आधार पर काम |

| | | |
|---|---|---|
| दिवस 08 | | • पारदर्शी, नियमित एवं निष्पक्ष चुनाव<br>• प्रमुख नीतियां और नए कानूनों पर खुली सार्वजनिक चर्चा<br>• सूचना का अधिकार एवं समान अवसर<br>• आवश्यकता एवं मांग<br>• भ्रष्टाचार मुक्त शासन<br>• सरकार और उसकी कार्यप्रणाली<br>• लोकतंत्र की क्षमता एवं परिणाम<br>• गैर लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था से तुलना |
| | 2 | सामाजिक विविधताओं में सामंजस्य<br>• सद्भावपूर्ण सामाजिक जीवन की शर्तें<br>• जन सामान्य की इच्छा का प्रतिनिधित्व<br>• बहुमत एवं अल्पमत का शासन (अर्थ, धर्म, नस्ल तथा भाषाई आधार पर) |
| | 3 | पुनरावृत्ति पिछले दो दिवस में पढ़ाये हुए बिन्दुओं पर आधारित। |
| | 4 | नागरिकों की गरिमा एवं आजादी<br>• गरिमा और स्वतंत्रता की चाह ही लोकतंत्र का आधार<br>• महिलाओं की गरिमा और समानता का व्यवहार लोकतंत्र की आवश्यक शर्त<br>• समान स्तर एवं समान अवसर के दावे<br>• प्रजा से नागरिक बनने की प्रामाणिकता<br>• आलोचनात्मक मूल्यांकन |
| | 5 | चर्चा एवं परिचर्चा के साथ पुनरावृत्ति |
| | 6 | आर्थिक संवृद्धि और विकास<br>• शासन प्रणालियों (कई देशों) के अर्थव्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन<br>• आर्थिक विकास के कारक<br>• |
| | 7 | लोकतंत्र के परिणामों का मूल्यांकन<br>• अन्य व्यवस्थाओं से उत्कृष्ट<br>• आधारभूत अधिकारों की गारण्टी<br>• राजनीतिक समानता पर आधारित<br>• प्रतिनिधियों के चुनाव में प्रत्येक चुनावकर्ता का वजन बराबर<br>• आर्थिक असमानता की चुनौती |

| | | |
|---|---|---|
| | | • जनप्रतिनिधियों के लिए संस्कारवान और राष्ट्रभक्त/देशभक्त होना पहली शर्त |
| | 8 | कोलॉज निर्माण, रोल प्ले एवं प्रोजेक्ट कार्य |

## कुल दिवस–42

# शिक्षण योजना 01

| अध्याय 01 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| संस्थाओं का कामकाज | सत्ता का परिचय | 01 | 40 मिनट |

लर्निंग आउटकम :–

- छात्र/छात्राएं सत्ता एवं उसकी साझेदारी की सामान्य समझ रखते हैं।
- राजनीतिक व्यवस्था के स्थायित्व की समझ को व्यक्त पाते हैं।

शिक्षण उद्देश्य–

- कक्षा में सामग्री व चर्चा द्वारा जनता की सत्ता में भागीदारी के रूप में लोकतंत्र की समझ विकसित करना
- अल्पसंख्यकवाद और बहुसंख्यकवाद में अंतर स्पष्ट करना
- विविधता और लोकतंत्र में संबंध को स्पष्ट करना

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** ग्लोब, मानचित्र, फ्लैश कार्ड, पीपीटी, वीडियो, डाक्यूमेंण्ट्री, कोलाज आदि।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ–**

शिक्षण के शुरुआत में – (समय 05 से 10 मिनट)

- शिक्षक फ्लैश कार्ड छात्र/छात्राओं को दिखाकर जानेंगे कि, दिखाए कार्ड में क्या दर्शाया गया है।
- व्हाइट/स्मार्ट बोर्ड द्वारा आरेखीय डायग्राम खींच कर सत्ता में भागीदारी करने वाले बिन्दुओं को समझाने का प्रयास करेंगे।

शिक्षण के दौरान (समय 20 से 25 मिनट)

- सत्ता के अल्पसंख्यकवाद एव बहुसंख्यकवाद के बारे में अन्तर व तुलना को स्पष्ट करते हुए विभिन्न मुद्दों जैसे– शिक्षा एवं भाषा आधारित, क्षेत्र आधारित, जाति आधारित, समुदाय आधारित सामाजिक संरचनाएं क्या हैं? पीपीटी/चार्ट/रेखाचित्र के माध्यम से स्पष्ट करेंगे।

- ग्लोब एंव मानचित्र का प्रयोग करते हुए भारत, श्रीलंका, बेल्जियम, फ्रांस एवं जर्मनी आदि की सत्ताओं एवं जातियों, भाषाई समूहों को बारे में चर्चा के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे।
- सत्ता के केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण की तुलना करते हुए विकेन्द्रीकरण/केन्द्रीकरण कैसे बेहतर हैं? समूह चर्चा द्वारा प्रश्न पूछकर स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे।

इसके अतिरिक्त निम्नांकित बिन्दुओं पर चर्चा कर समझ विकसित करेंगे–

1– सत्ता के केन्द्रीकरण एंव लोकतंत्र में क्या संबंध है?

2– सत्ता के केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण के अन्तर को स्पष्ट करें।

3– सामुदायिक सत्ता से क्या तात्पर्य है?

4– बहुसंख्यवाद के बारे में बताएं।

5– सत्ता की साझेदारी आवश्यक क्यों?

- शिक्षक अपने विवेकानुसार प्रकरण से संबंधित वीडियो दिखाकर विषयवस्तु को स्पष्ट करेंगे।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

- स्थानीय उदाहरणों के माध्यम से सत्ता के बंटवारे में कौन–कौन से कारक जिम्मेदार हैं, इस बिन्दु पर चर्चा करेंगे।

**गृहकार्य/परियोजना (प्रोजेक्ट)** :– विद्यार्थियों द्वारा सत्ता की साझेदारी के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रोजेक्ट का निर्माण करना।

**शिक्षण की आगामी योजना** :– अगली कक्षा में विद्यार्थी सत्ता के स्वरूप में नागरिकों की राजनीतिक सत्ता में हिस्सेदारी एवं उसके विभिन्न आयामों के बारे में जानेंगे।

## शिक्षण योजना 02

| अध्याय 02 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| संघवाद | संघवाद से आशय | 01 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउटकम :–**

छात्र/छात्राएँ पिछली कक्षाओं के पूर्वज्ञान से और अपने ग्रामीण परिवेश के माध्यम से संघवाद के विषय में बता पा रहे हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–**

- छात्रों में लोकतांत्रिक देश में केन्द्र–राज्य संबंध की समझ विकसित करना
- लोकतंत्र की राष्ट्रीय विशेषता के रूप में विविधता और एकता के संबंध को समझाना

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** पाठ्यपुस्तक, मैप, चार्ट।

**सीखने सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियां :–**

**शिक्षण के शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

छात्र/छात्राओं को रोल–प्ले के माध्यम से पिछले अध्याय का पुनरावलोकन कराते हुए उनसे उनके स्थानीय परिवेश के आधार पर संघवाद के विषय में जानने का प्रयास करेंगे।

**प्रश्न–** आप लोगों ने अपने–अपने गाँव में पंचायत का चुनाव देखा होगा। चुनाव के बाद पंचायत के सदस्य आपस में मिलकर कैसे कार्य करते हैं।

यहाँ यह स्पष्ट करें कि सभी लोग या विभिन्न संख्याएं आपस में मिलकर योजना बनाकर कार्य करते हैं इसी को संघवाद कहते हैं।

**शिक्षण के दौरान – (समय 20 से 25 मिनट)**

स्पष्ट करें कि

- संघीय व्यवस्था में दो स्तरीय सरकारें होती हैं। इसमें से एक सरकार देशभर के लिए होती है, जिसके अन्तर्गत राष्ट्रीय महत्व के विषय होते हैं।
- दूसरी राज्य या प्रांतीय स्तर की सरकारें होती हैं। जो शासन के दिन–प्रतिदिन के कार्यों को देखती है।

- सत्ता के इन दोनों स्तरों की सरकारें अपने–अपने स्तर पर स्वतंत्र होकर अपना कार्य संपादित करती हैं।
- संघवाद का अर्थ परिभाषा और उसकी विशेषताएँ बताएंगे।
- संघवाद के गुण और दोष को बताएंगे ।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

विषय से सम्बन्धित जो प्रश्न शिक्षक द्वारा पूछे जाएंगे उनका उत्तर छात्र/छात्राएं देंगे। प्रश्न कुछ इस प्रकार से हो सकते हैं–

- संघवाद किसे कहते हैं?
- संघवाद के गुण क्या हैं?
- संघवाद की विशेषताएँ क्या हैं?
- संघवाद अपनाने वाले देशों के नाम लिखिए।

**गृह कार्य/प्रोजेक्ट** :– सभी लोग संघवाद की विशेषता जैसी समझ में आई उस पर एक फ्लो में चार्ट बनाकर लाएंगे।

**शिक्षण की आगामी योजना :–**

अगले दिन छात्र/छात्राओं को संघवाद के विषय में पुनरावृत्ति करवाएंगे और अगले अध्याय को इससे जोड़ कर पढ़ाएंगे।

## शिक्षण योजना 03

| अध्याय 03 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| जाति, धर्म और लैंगिक मसले | लैंगिक मसले | 01 | 40 मिनट |

लर्निंग आउटकम :–

- छात्र छात्राएँ लैंगिक आधार पर भेदभाव के विषय में जानकारी रखते हैं।
- लैंगिक आधार पर निजी एवं सार्वजनिक संस्थाओं में मौजूद भेदभाव की समझ पर किए गए प्रश्नों के उत्तर बता पाते हैं।

शिक्षण उद्देश्य–

- छात्रों में लैंगिक भेदभाव के प्रति सजगता उत्पन्न करना
- उन्हें स्त्री–समुदाय के प्रति संवेदनशील बनाना

**सीखने–सिखाने की सामग्री** :– चार्ट, पीपीटी, वीडियो, पोस्टर,मॉडल

**सीखने सिखाने की गतिविधियाँ** :–

शिक्षण के शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)

- शिक्षक एक वीडियो क्लिप के माध्यम से लैंगिक भेदभाव को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे जिससे बच्चों में बेहतर समझ विकसित हो सके।
- शिक्षक इसके साथ ही अपने पास–पड़ोस के स्थानीय वातावरण से जोड़ते हुए लैंगिक भेदभाव को स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयास करेंगे।

शिक्षण के दौरान (समय 20 से 25 मिनट)

शिक्षक छात्र/छात्राओं को चार्ट के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे लैंगिक भेदभाव को प्रदर्शित करके उन पर चर्चा करेंगे–

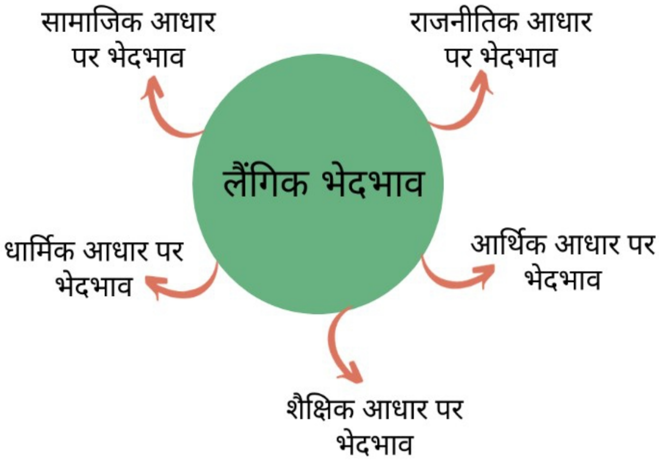


- शिक्षक मॉडल के माध्यम से निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति दिखायेंगे। आँकड़ों द्वारा छात्र/छात्राओं को यह समझाने का प्रयास किया जायेगा कि वर्तमान समय में भारत में कितनी प्रतिशत महिलाएं सरकारी एवं प्राइवेट क्षेत्रों में काम करती हैं, और कितने प्रतिशत महिलाएं घरेलू तथा कृषि कार्यों में संलग्न हैं।
- इन आँकड़ों को चित्र, चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित करेंगे।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

शिक्षक छात्र/छात्राओं को तीन–चार समूहों में बाँटकर लैंगिक आधार पर भेदभाव के विषय में चर्चा–परिचर्चा कराकर कुछ प्रश्न पूछेंगे –

- लैंगिक भेदभाव से आप क्या समझते हैं?
- लैंगिक भेदभाव के क्या कारण हैं?
- निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों से आप क्या समझते हैं?

**गृहकार्य/प्रोजेक्ट** – छात्र/छात्राएं निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यों पर एक टी०एल०एम० तैयार करेंगे।

**शिक्षण की आगामी कार्ययोजना**– अगले दिन छात्र/छात्राओं को पिछले वादनों में पढ़ाये गये लैंगिक भेदभाव के विषय में संक्षिप्त पुनरावृत्ति कराते हुए अगले अध्याय साम्प्रदायिकता से जोड़ कर पढ़ायेंगे।

## शिक्षण योजना 04

| अध्याय 04 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| राजनीतिक दल | भारत के प्रमुख राजनीतिक दल | 05 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउटकम–** छात्र–छात्रायें, भारत के कई राजनीतिक दलों का नाम बता लेते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–** छात्रों को भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों की लोकतांत्रिक राजनीति की विशेषताओं से परिचित कराना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री–** पाठ्यपुस्तक, चित्र, चार्ट, दीक्षा एप का वीडियो।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ –**

**शिक्षण के शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

शिक्षक बोर्ड पर उत्तर प्रदेश के 2–3 प्रमुख राजनीतिक दलों का नाम लिखेंगे। छात्रों से पूछकर दलों के नाम के आगे उनका चुनाव चिह्न लिखेंगे। इसी क्रम में शिक्षक पी. पी. टी. या किसी छोटे वीडियो के माध्यम से विभिन्न राजनीतिक दलों से सम्बन्धित राजनेताओं की पहचान भी छात्रों से करा सकते हैं।

**शिक्षण के दौरान– (समय 20 से 25 मिनट)**

शिक्षण के दौरान शिक्षक भारत देश के किन्हीं 5 राज्यों के नाम बोर्ड पर लिखेंगे और छात्रों से इन 5 राज्यों के मुख्यमंत्री का नाम पूछेंगे। कुछ छात्र इनमें से 2–3 राज्यों के मुख्यमंत्री का नाम बता सकते हैं। छात्रों से इन राज्यों में किस राजनीतिक दल की सरकार है, यह प्रश्न पूछें। किसी वीडियो/पी. पी. टी./पोस्टर द्वारा इन राज्यों के मुख्यमंत्री का चित्र/वीडियो दिखाकर उनसे सम्बन्धित दलों का नाम पूछें। छात्रों द्वारा प्राप्त जवाब को स्पष्ट करते हुए भारत के प्रमुख राज्यों के प्रमुख राजनीतिक दलों का नाम, उनका चुनाव चिह्न बतायें। इनमें से कौन–2 राष्ट्रीय दल, कौन क्षेत्रीय दल हैं यह भी स्पष्ट करें। राष्ट्रीय दल और क्षेत्रीय दल के लिए क्या शर्त होनी चाहिए तथा वर्तमान में कितने राष्ट्रीय दल व क्षेत्रीय दल हैं, उनके विषय में विस्तृत चर्चा करेंगे।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

प्रमुख दलों के विषय में छात्रों से प्रश्न पूछें तथा किस राष्ट्रीय या क्षेत्रीय दल की सरकार किस राज्य में है, इसकी जानकारी प्राप्त करें। छात्रों से प्राप्त जवाब पर पुनर्बलन देते हुए पाठ्यबिन्दु को आवश्यकतानुसार पुनरावृत्ति द्वारा स्पष्ट करें।

**गृहकार्य/प्रोजेक्ट–** शिक्षक, छात्रों को सभी राष्ट्रीय दलों का सामान्य विवरण (संस्थापक, स्थापना वर्ष, प्रमुख नेता) तैयार करने का कार्य देंगे।

**शिक्षण की आगामी योजना** – भारत के प्रमुख दलों से सम्बधित पाठ्यवस्तु की आवश्यकतानुसार अगले दिन की कक्षा में भी चर्चा करेंगे।

## शिक्षण योजना 05

| अध्याय 05 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| लोकतंत्र के परिणाम | उत्तरदायी, जिम्मेदार और वैध शासन | 01 | 40 मिनट |

लर्निंग आउटकम :–

- छात्र/छात्राएं उत्तरदायी, जिम्मेदार और वैध शासन की उपयोगिता की सामान्य समझ रखते हैं व व्यक्त करते हैं।
- लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्राप्त होने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी रखते हैं।

शिक्षण उद्देश्य–

- छात्रों में जनता के प्रति उत्तरदायी सरकार की समझ विकसित करना
- उन्हें जनता द्वारा चुने गए शासन की जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाना

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** चार्ट पेपर, फ्लैश कार्ड, टीएलएम एवं पीपीटी आदि।

**सीखने सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियां :–**

**शिक्षण की शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

शिक्षक उत्तरदायी सरकार के निर्माण एवं कार्य के बारे में बताते हुए उसकी जिम्मेदारियों से छात्रों को अवगत करायेंगे। जैसे–

- लोकतंत्र में जनता द्वारा एक उत्तरदायी सरकार का निर्माण कैसे किया जाता है?
- उत्तरदायी शासन में जनता भी सरकार की नीतियों के निर्णय लेने में कैसे अपनी भागीदारी करते हुए सरकार की मदद करती है?

**शिक्षण के दौरान– (समय 20 से 25 मिनट)**

छात्र/छात्राओं से बातचीत के माध्यम से जानकारी लें कि क्या उत्तरदायी सरकारें जनता के लिए उत्पन्न की गयी क्षमता का ही परिणाम है, जिसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता?

- ➢ क्या हम वास्तव में लोकतांत्रिक व्यवस्था में ही रह रहे हैं?

पीपीटी दिखाकर छात्र/छात्राओं को उत्तरदायी सरकार की अवधारणा स्पष्ट करते हुए समझायेंगे कि –

- लोकतंत्र में ऐसी उत्तरदायी सरकारों का गठन किया जायेगा, जो कानूनों व नीतियों का निर्माण करेंगी, उसका पालन करेंगी और लोगों के प्रति उत्तरदायी भी होंगी।
- अवसर की समानता होगी एवं प्रत्येक निर्णय पर सार्वजनिक विचार–विमर्श किये जाने के अवसर सुलभ होने चाहिए।
- भ्रष्टाचार मुक्त शासन होगा। यदि जनता को यह लगे कि शासन में बहुत भ्रष्टाचार है तो वह एक निश्चित समय के पश्चात वोट के अधिकार का प्रयोग कर सरकार को हटाने की शक्ति रखती है।
- गुण–दोषों की चर्चा करेंगे।
- अन्य शासनों से लोकतांत्रिक शासन उत्कृष्ट हैः यह एक वैध शासन व्यवस्था है।

शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)

विद्यार्थियों से लोकतांत्रिक व्यवस्था में उत्तरदायी, जिम्मेदार और वैध शासन की विशेषताओं से संबंधित चार्ट बनवाना।

गृहकार्य / प्रोजेक्ट–

- उत्तरदायी शासन की विशेषताओं के बारे में लिखें।
- उत्तरदायी, जिम्मेदार और वैध सरकार के क्रियाकलाप पर एक टीएलएम का निर्माण करें।

**शिक्षण की आगामी योजना** – लोकतांत्रिक शासन में उत्तरदायी, जिम्मेदार एवं वैध शासन सामाजिक विविधताओं में कैसे सामंजस्य स्थापित करता है इसके बारे में बच्चों को स्पष्ट करने की योजना बनायेंगे।

# अर्थशास्त्र

# केन्द्रिक लर्निंग आउटकम

1. **तथ्यों, आँकड़ों को पहचानता और पुनः प्राप्त करता है और प्रक्रियाओं को अभिव्यक्ति दे पाता है।**
    - विभिन्न प्रकार की मिट्टी, खनिजों, ऊर्जा संसाधनों, नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों की पहचान करता है।
    - भारत के मानचित्र पर कोयला, लौह अयस्क, पेट्रोलियम, चावल, गेहूँ, चाय, कॉफी, रबर, सूती कपड़े के उत्पादन किए जाने वाले इलाकों/क्षेत्रों का पता लगाता है।
    - भूगोल में महत्वपूर्ण शब्दों को परिभाषित करता है, जैसे कृषि संसाधन, नवीकरणीय और अप्राप्य संसाधन, निर्वाह कृषि, वृक्षारोपण, कृषि को स्थानांतरित करना।
    - स्थायी विकास, सकल घरेलू उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय, मानव विकास सूचकांक, बहुराष्ट्रीय कंपनी, विदेशी निवेश जैसे आर्थिक शब्दों को परिभाषित करता है।
    - धन के विभिन्न रूपों और ऋण के स्रोतों, उपभोक्ताओं के अधिकारों को सूचीबद्ध करता है
2. **घटनाओं, तथ्यों और आँकड़ों को वर्गीकृत करता और उनकी तुलना करता है, जैसे–**
    - संसाधनों, खनिजों, खेती के प्रकारों को वर्गीकृत करता है, उदाहरण– निर्वाह और व्यावसायिक खेती।
    - भारत के मानचित्र पर चावल और गेहूँ उगाने वाले क्षेत्रों की तुलना करता है।
    - कुछ महत्वपूर्ण देशों की प्रति व्यक्ति आय की तुलना करता है। उपभोक्ता के अधिकारों में अंतर पता करता है।
    - मानदंडों का उपयोग करके क्षेत्रों में व्यवसायों और आर्थिक गतिविधियों को वर्गीकृत करता है।
3. **घटना, कार्यक्रमों और उनकी घटना के बीच कारण और प्रभाव संबंध बताता है, जैसे–**
    - भारत में विभिन्न फसलों के उत्पादन के लिए जिम्मेदार कारकों के बारे में बताता है।
    - उद्योगों और पर्यावरण पर उनके प्रभाव की व्याख्या करता है।
    - खाद्य उपलब्धता पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव की जाँच करता है। दुनियाँ के उदाहरण के लिए अमेरिका के उपनिवेश में विभिन्न क्षेत्रों में पूर्व आधुनिक दुनिया में बीमारी के वैश्विक हस्तांतरण के प्रभाव का आकलन करता है।
    - भू–जल और कच्चे तेल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के अति प्रयोग के प्रभाव का विश्लेषण करता है।
    - सकल घरेलू उत्पाद की क्षेत्रीय संरचना में परिवर्तन का विश्लेषण करता है। क्रेडिट के विभिन्न स्रोतों पर निर्भरता के प्रतिफलों का विश्लेषण करता है।

4. विश्लेषण और जानकारी का मूल्यांकन करता है, जैसे –
   - सतत विकास को ध्यान मे रखते हुए किसी भी क्षेत्र में लोगों के जीवन पर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रभाव का आकलन करता है।
   - जल/वन/वन्यजीव व मिट्टी के संरक्षण के स्वदेशी/आधुनिक तरीकों का विश्लेषण करता है।
   - मनरेगा के प्रभाव, ऋण के स्रोत के रूप में बैंकों की भूमिका का आकलन करता है।
   - अपने क्षेत्र/इलाके/स्थानीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण के प्रभाव का आकलन करता है।
   - आउटपुट और रोजगार के लिए विभिन्न क्षेत्रों के योगदान का विश्लेषण करता है।
5. व्याख्या करता है, उदाहरण के लिए –
   - मानचित्र
   - ग्रंथ
   - प्रतीक
   - आरेख जैसे कि पाइ और बार
   - कार्टून
   - तस्वीरें
   - पोस्टर
   - अखबार की कतरनें
   - विभिन्न क्षेत्रों/जलवायु क्षेत्रों में पानी की कमी
   - यूरोप में विभिन्न संधियों द्वारा लाए गए मानचित्रों में परिवर्तन
   - भारत से पश्चिम एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और दुनिया के अन्य हिस्सों में व्यापार के समुद्री और भूमि लिंक को बनाता है।
   - भारत में सकल घरेलू उत्पाद, विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन और उद्योगों, रोजगार और जनसंख्या से संबंधित डेटा के पाइ और बार आरेखों को बनाता और उनकी व्याख्या करता है।
6. सामाजिक विज्ञान के साथ अंतर्संबंध जोड़ता है–
   - फसल पैटर्न, व्यापार और संस्कृति में परिवर्तन का विश्लेषण करता है।
   - बताता है कि भारत के कुछ क्षेत्रों को क्यों विकसित किया गया है।
   - संस्कृति पर व्यापार के प्रभाव का विश्लेषण करता है।
   - आर्थिक विकास और लोकतंत्र के बीच संबंधों को दर्शाता है।
7. मान्यताओं/पुरानी सोच/पूर्वाग्रहों/रुढ़ियों की पहचान करता है, उदाहरण के लिए–

- भोजन की आदतें
- विभिन्न विकासों, जैसे– भूमंडलीकरण और औद्योगीकरण के कई पक्षों की पहचान करता है।

**8. जिज्ञासा/पूछताछ के कौशल को प्रदर्शित करता है अर्थात् इससे संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत करता है, उदाहरण के लिए–**

- कुछ क्षेत्रों में उद्योगों की सघनता।
- पानी की कमी।
- वित्तीय साक्षरता के विभिन्न पहलुओं से संबंधित मुद्दे ।

**9. एकत्रित/दी गई जानकारी के आधार पर तर्कों/विचारों का निर्माण करता है, उदाहरण के लिए –**

- आर्थिक मुद्दे जैसे आर्थिक विकास और वैश्वीकरण
- गंभीरता से जाँच करता है– (क) विभिन्न आर्थिक अवधारणाओं के लिए पाठ्यपुस्तकों में आमतौर पर उपलब्ध परिभाषाएं (ख) संगठित/असंगठित क्षेत्र के सकल घरेलू उत्पाद, गरीबी, धन की आपूर्ति और आकार का अनुमान लगाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति।

**10. कार्यक्रमों और घटनाओं का पहले से अनुमान लगाता है, उदाहरण के लिए–**

- वनों की कटाई के कारण प्राकृतिक आपदाओं का
- विभिन्न समस्यात्मक प्रश्नों पर रचनात्मक तरीके से जवाब देता है। जैसे, क्या होगा यदि (क) भारत पेट्रोलियम कच्चे तेल का आयात बंद कर देता है? (ख) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बंद हैं? (ग) 2050 में भारत में रोजगार की प्रकृति? (घ) यदि भारत के सभी स्कूलों और अस्पतालों का निजीकरण हो जाता है?

**11. निर्णय लेने/समस्या सुलझाने के कौशल दर्शाता है, उदाहरण के लिए–**

अपने क्षेत्र में निम्नलिखित मुद्दों के समाधान के साथ आता है–

- कृषि और परिवहन से संबंधित समस्याएँ
- रोजगार के अवसर प्रदान करना
- कम आय वाले परिवारों के लिए ऋण तक पहुँच में सुधार
- यह आकलन करता है कि औपनिवेशिक भारत में विभिन्न क्षेत्रों में कुछ विकास जैसे– साहित्य, परिवहन और उद्योगों में– उपनिवेशवादियों के साथ राष्ट्रवादियों के लिए उपयोगी थे।

## अवधारणा पत्र

अर्थशास्त्र मनुष्य की बुनियादी जरूरतों का शास्त्र है। इनमें सबसे प्रमुख है, रोटी, कपड़ा, आवास, स्वास्थ्य तथा शिक्षा। प्राचीन भारतीय विचारकों ने जीवन के चार पक्ष बताये हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। अर्थ इसमें दूसरे क्रम में है। संक्षेप में इसका भाव है जीवन यापन तथा उसके विकास के लिए की जाने वाली समस्त आर्थिक गतिविधियाँ। आर्थिक गतिविधियों के बिना जीवन ही असंभव है। मनुष्य ही नहीं, सारा जीव जगत इस दायरे में आ जाता है। आर्थिक गतिविधियों और उत्पादन का मूल आधार है हमारा श्रम और हमारे कौशल– वे विधियाँ जिनके अनुसार कोई भी उत्पादन आकार लेता है। आर्थिक चेतना सबसे सरल रूप में हमारी बुनियादी जरूरतों की चेतना है। पैदा होने के तत्काल बाद से ही शिशु आहार माँगता है। अर्थशास्त्री इसे आर्थिक चेतना में शामिल करते हैं। शारीरिक–मानसिक जरूरतों के साथ उसकी जरूरतें बढ़ती जाती है। एक नागरिक के रूप में विकसित होने के लिए आगे उसे लगातार भोजन, वस्त्र, शिक्षा, रोजगार के रूप में श्रम का प्रतिफल चाहिए। अच्छा सामाजिक वातावरण और मानवीय–सामाजिक सुरक्षा चाहिए। सभी की बुनियाद में अर्थशास्त्र या आर्थिकी है। अर्थशास्त्र किसी भी समाज की नींव है, जिसके ऊपर बाकी विषयों के ढाँचे बन जाते या बनाए जाते हैं। इस प्रकार अर्थशास्त्र का सभी विषयों प्राकृतिक विज्ञानों (भूगोल, भौतिकी, रसायन, आदि) तथा मानविकी के अन्य विषयों के साथ गहरा संबंध है। विषयों के इस संबंध को हम आगे दिए एक रेखाचित्र से समझ सकते हैं–

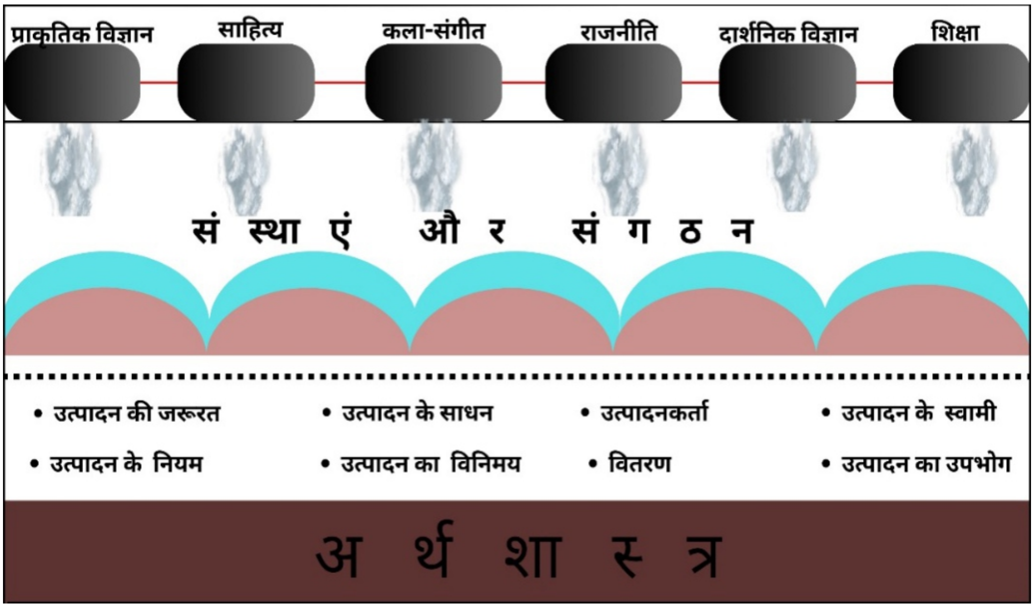


आर्थिकी किसी भी समाज को एक आधार देती है। यानि किसी समाज की आर्थिक व्यवस्था उसका बुनियादी (आधारिक) ढाँचा बनाती है। इसमें उत्पादन की जरुरत, उत्पादन के साधन व उत्पाद, उत्पादन करने वाले समुदाय या वर्ग, उत्पादन के स्वामी, उत्पादन या उत्पादन से पैदा मूल्य का बँटवारा व उत्पादन में सहायक होने वाले काम–काज शामिल हैं। इसे अर्थशास्त्री समाज की अवरचना (Basic Structure) कहते हैं। उत्पादन की खास पद्धति को

वैधता देने के लिए, उसके व्याख्या–विश्लेषण करने, उसका विकास करने के लिए बाकी विषय काम करते हैं। जैसे– भूगोल, भौतिकी, रसायन, राजनीति, दर्शन, शिक्षा, साहित्य, कला आदि। इसे समाज की अधिरचना (Super Structure) कहा जाता है। समाज का बुनियादी ढाँचा और ऊपरी ढाँचा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। वे एक दूसरे की हिफाजत करते हैं तो एक दूसरे को बदलते भी हैं। इस प्रक्रिया में ही समाज विकास करता है। यह कहा जाता है कि खास अर्थ–व्यवस्था खास तरह के विचारों को पैदा करती है। पर यह रिश्ता बहुत बारीक धागों से बना होता है।

'आधुनिक अर्थशास्त्र' का श्रेय अंग्रेज अर्थशास्त्री एडमस्मिथ को दिया जाता है उन्होंने सन 1976 में 'द वैल्थ ऑफ नेशंस' (राष्ट्रों की समृद्धि) प्रकाशित किया था। अपनी इस किताब में उन्होंने औद्योगिक सभ्यता के साथ दुनियाभर में विकसित होती आर्थिक गतिविधियों– पूंजीवाद, मुक्तबाजार, तथा 'मांग और पूर्ति' के नियमों की व्याख्या अपने लेखों में की है।

कौटिल्य भारत के सबसे प्राचीन अर्थशास्त्री माने जाते है। उनकी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' राजनीतिक अर्थशास्त्र पर एक महान पुस्तक के रूप में प्रसिद्ध है। इसका रचनाकाल 321 ईसापूर्व है। इसमें राजतंत्री शासन में आर्थिक गतिविधियों के संचालन के लिए नीति–नियम बनाए और बताएं गए हैं। आश्चर्य की बात है कि इसकी अनेक बातें और नियम आज भी प्रासंगिक हैं।

**अर्थशास्त्र का इतिहास–** यह मानवजाति की पैदाइश से आज की विकसित आर्थिक संस्थाओं तक फैला है। इसका रूप देश, काल, परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहा है। हजारों वर्ष पहले वन्य अवस्था में मानव समूह अपने आहार के लिए वन उपजों (कंद, मूल, फल आदि) तथा वनपशुओं के आखेट पर निर्भर थे। वन उपज आसान थी। एक निश्चित समय चक्र के बाद फिर मिल जाने वाली, पर शिकार कठिन था और उसकी कोई गारंटी न थी। कई बार शिकारी, खुद शिकार बन जाता था। मानव–समूहों के बीच रक्तसंबंध (खून के रिश्ते) थे। ये उन्हें एक सामाजिक अनुशासन में बाँधते थे। माँ, पिता, बहिन, भाई, नाना–नानी, दादी–दादा, दामाद–ससुर, सास–बहू, नाती–पोते और अन्य। पूरा परिवार वनोपज और आखेट के लिए साझी मेहनत करता था। जो मिल जाता उस पर सब का हक था। यह समता आधारित बहुत प्राचीन समाज था जिसे अभी मकान बनाना नहीं आया था। पर इसके पास अनेक सरल हथियार और बर्तन थे। फिर इसने धातु खोज ली। इस समाज का सरल सा अर्थशास्त्र था– वनोपज, आखेट और अनियमित विरल कृषि।

धनुष बाण अपने समय का भौतिकी का महत्वपूर्ण अविष्कार था। इसका अर्थ था कि पुरखों ने खिंचाव(तन्यता), नुकीलेपन, बल, दबाव, बल के संकेन्द्रण तथा लचीले काठ और डोरी के संयोजन का प्रभाव समझ लिया था। इसमें घर्षण और दूरी के मापन की समझ निहित थी। धनुष–बाण ने मानव समूहों को सुरक्षित किया। वनपशुओं के आखेट और अपनी सुरक्षा को

आसान बनाया। लंबे समय तक यह मानव रक्षा और आक्रमण का प्रभावशाली औजार रहा। अनेक आदिवासी समुदायों में यह आज भी प्रचलित है। धनुष बाण शिकार की आदिम प्राचीन आर्थिक क्रिया में भौतिक विज्ञान का मेल था।

**भूगोल और अर्थशास्त्र–** भूगोल न सिर्फ इतिहास का जनक है बल्कि वह अर्थशास्त्र के विकास का भी आधार है। वह इसे काफी दूर तक प्रभावित करता है। इसलिए पृथ्वी के अलग–अलग भागों में काफी समय तक अलग अलग प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ विकसित हुई। विकास की गति धीमी या तेज रही। अर्थशास्त्रियों के अनुसार जब मानवजाति पूरी पृथ्वी पर फैली तो पूर्वी गोलार्ध (पुरानी दुनियाँ– एशिया, यूरोप, अफ्रीका) में पालने योग्य लगभग सभी पशु और सभी प्रकार के अनाज मौजूद थे। पश्चिमी गोलार्ध– अमेरिका के दक्षिणी भाग में पालने योग्य एक पशु लामा मिला। यहाँ अन्न भी एक था– मक्का, यह श्रेष्ठ अन्न था। कोलंबस ने उत्तरी अमेरिका के नदी तटों पर कद्दू और खरबूज की खेती होती देखी थी। यूरोपीय व्यापारियों के अमेरिका में प्रवेश के समय वहाँ कच्ची ईंटों और पत्थरों के उपयोग से बने घर प्राप्त हुए थे।

पुरानी दुनियाँ के आर्थिक विकास को अंतरमहाद्वीपीय व्यापार ने तेज गति दी थी। करीब साढ़े चार हजार वर्ष पहले ही पश्चिमी एशिया तीन महाद्वीपों का व्यापारिक केन्द्र बन चुका था। अफ्रीका, यूरोप और एशिया के विभिन्न भागों के व्यापारी यहाँ आकर मिलते और व्यापार करते थे। चीनी, भारतीय, ईरानी, मंगोल, अरब, यूनानी, इजिप्शियन, फिनिशियाई (लेबनानी), असूरी, आर्मेनियन और अन्य। हमारी आज की बैंक व्यवस्था, चैक और हुंडी, व्यापार के लिए सिक्कों का प्रयोग फिनिशिया (आज का लेबनान) के व्यापारियों की देन है।

भारत में सिंधु घाटी सभ्यता (ईसापूर्व 3000 वर्ष) के अन्नगोदाम मिले हैं। ये खेती की अच्छी पैदावार, उपभोग के बाद भी अन्न के बचे रहने और उसके व्यापार का प्रमाण है। ईसापूर्व पाँचवी सदी से ईसापूर्व दूसरी सदी तक विभिन्न व्यवसायों को वर्णों के नाम से पहचान दी गई। यह भारतीय समाज का अपना विशिष्ट श्रम विभाजन था जिसके अपने अनेक पक्ष थे। इसने सामाजिक विभाजन का रूप लिया। आगे इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज में पेशे और जातियाँ घुल मिल गई। इस समाज व्यवस्था में आपसी अंतर्विरोध थे तो आपसी आर्थिक संबंध भी।

मौर्यकालीन भारत (322 से 185 ईसा पूर्व) में कृषि और दस्तकारी सुव्यवस्थित हुईं। यह बड़ा साम्राज्य था जिसने किसानों, शिल्पियों, मजदूरों और दासों के लिए राजस्व और मजदूरी के नियम बनाए।

• यदि कोई स्वामी पर्याप्त कारण के बिना श्रमिक/शिल्पी से काम लेने से इंकार करे तो माना जाएगा कि उससे काम कराया गया है। (कौटिल्य– 'अर्थशास्त्र' अधिकरण 3/15)

• जो कोई शिल्पियों का दर्जा घटाकर या साधनों की खरीद बिक्री में बाधा डालकर उन्हें अपनी उचित कमाई से वंचित करने का प्रयास करेगा उस पर 1000 पण जुर्माना लगाया जाएगा। (कौटिल्य– 'अर्थशास्त्र' अधिकरण 5/15)

बड़े राजकीय कृषि फार्मों ने उन्नीसवीं–बीसवीं सदी में राष्ट्रों के विकास में योगदान दिया। आश्चर्यजनक बात है कि उनका आरंभिक रूप मौर्य साम्राज्य में मौजूद था। इन्हें **'कृषि प्रक्षेत्र'** कहा जाता था। कामगारों को पारिश्रमिक देने के बाद इसकी आय सीधे राजकोष में जाती थी। मौर्यों के बाद कुषाणों का समय रहा। गुप्तकाल (240–550 ईस्वी) आर्थिकी, शिल्प, कला और साहित्य–संगीत की उन्नति के लिए जाना जाता है। इसे भारतीय राजतंत्र का **'स्वर्णकाल'** कहा जाता है।

गुप्तकाल के बाद ''चौदहवी–पंद्रहवीं सदी तक भारत में कोई बड़ा साम्राज्य नहीं'' बना। इस समय तक भारतीय गाँवों में श्रम और जातियाँ काफी हद तक एक हो गए थे। जाति व्यवस्था गाँवों और शहरों में भी जातीय पंचायतों के रूप में अश्मीभूत (फासिलाइज्ड) हो चुकी थी। शहरों में इसके बंधन कुछ शिथिल थे। ईसापूर्व 3000 वर्ष से इस समय तक कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार बनी हुई थी। इसी के साथ दस्तकारी विकसित होती रही। भारतीय गाँवों की एक स्वायत्त, आत्मनिर्भर व्यवस्था थी।

**अर्थशास्त्र और संस्कृति**

हजारों साल की कृषि और दस्तकारी ने भारतीय समाज में अनेक पर्वों को जन्म दिया। दीपावली उनमें से एक हैं। तब सरसों उगाना, तेल पेरना, कपास से सूत बनाना सीख लिया गया था। शिल्पियों ने कटोरे को थोड़ा छोटा रूप देकर, दिए को आकार दिया। कपास की बाती सरसों के तेल में भिगाकर जलाई गई। इस तरह रात के अंधेरे में घरों के भीतर के लिए प्रकाश के एक स्थिर और अपेक्षाकृत स्थाई स्रोत का आविष्कार किया गया। इसे सिर्फ तेज हवा से बचाना और इसमें तेल डालते रहना होता था (पुराने साहित्य में अखंड दीपक जलाने का उल्लेख हुआ है)। दीपावली इसी आविष्कार की खुशी मनाने का पर्व है। इसे बाद में अनेक तरह से मनाया जाता रहा और इससे अनेक कहानियाँ जुड़ गयीं।

तमाम राजनीतिक हलचलों के बीच मुगल साम्राज्य के समय भी भारतीय कृषि और दस्तकारी की विकास यात्रा जारी रही। समाजशास्त्रियों के अनुसार ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत आने के समय ढाका (बंगाल) से सूरत (गुजरात) तक करीब 40,000 हथकरघों की एक श्रृंखला मौजूद थी। इनमें लाखों बुनकर काम करते थे। भारत के कपास किसानों से उन्हें कपास प्राप्त होती थी। पहले ईस्ट इंडिया कंपनी और फिर ब्रिटिश सरकार ने भारतीय दस्तकारी को नष्ट किया। कंपनी के कारिन्दों ने 'लूम्स' को तोड़ डाला। भारतीय कपास इंग्लैंड भेजी जाने लगी, करघे बेकार हो गए। ब्रिटिश शासकों ने भारतीय कृषि की आवश्यकता आधारित 'चेन' को तोड़ा। अपने अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मुनाफे के लिए उन्होंने भारतीय खाद्य फसलों की जगह किसानों को वे फसलें उगाने के लिए विवश किया जिनके अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अच्छे दाम मिलते थे। इन्हें औने पौने दामों पर तो कभी मुफ्त में भारतीय किसानों से वसूल लिया जाता था। इस कारण देश के अनेक भागों में अनेक बार अकाल और भुखमरी के हालात पैदा हुए।

कुल मिलाकर अंग्रेजों ने भारत को सिर्फ कच्चा माल ले जाने का स्रोत और ब्रिटिश कारखानों में तैयार माल का बाजार बनाए रखा। इसने भारतीय अर्थव्यवस्था को बेहद कमजोर कर दिया। कृषि से दस्तकारी और दस्तकारी से उद्योग तक की भारतीय विकासयात्रा बाधित हुई। ब्रिटिश शासकों ने भारतीय उद्यमियों की राह में अनेक बाधाएँ खड़ी की। देश छोड़ने तक उन्होंने यह रवैया बनाए रखा।

आजादी से दो वर्ष पूर्व सन 1945 में भारतीय उद्यमियों की पहल पर बनी **'मार्शल योजना'** के साथ आधुनिक भारत के उद्योगों की नींव पड़ी। इस योजना के तहत देश के भारी और आधारभूत–उद्यम लोहा–इस्पात, कोयला, विद्युत उत्पादन, खनिज तेल, दूर संचार, रेल, वायु तथा सड़क यातायात, बीमा, बैंकिंग आदि सीधे भारत सरकार या राज्य सरकारों के नियंत्रण में स्थापित किए गए। इन्होंने देश के उद्योगपतियों और सामान्य जनता को उद्योगों के विकास के लिए सस्ती दरों पर आधारभूत सुविधाएँ मुहैया कराई। इससे देश धीरे–धीरे औद्योगिक विकास की राह पर चल पड़ा।

<u>अर्थशास्त्र की क्रियाएँ</u>

उत्पादन ⟶ तीन क्षेत्रक – कृषि, उद्योग विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्र

उपभोग ⟶ नागरिकों की कृषि और औद्योगिक उत्पादों तक पहुँच, उनकी क्रय शक्ति – आय

विनिमय ⟶ व्यापार, बाजार, आयात–निर्यात, मुद्रा, संचार–परिवहन

वितरण ⟶ संसाधनों का सामाजिक वितरण, सम्पत्ति का स्वामित्व, सार्वजनिक खाद्य वितरण प्रणाली

लोकवित्त ⟶ उत्पादन के क्षेत्रकों – कृषि, उद्योग व सेवा क्षेत्र के लिए वित्तीय विधान, बैंकिंग, सब्सिडी, अनुदान व ऋण सुविधाएँ आदि।

उत्पादन के क्षेत्रों का बढ़ना मानव जाति के आर्थिक विकास के इतिहास में अनिवार्य था। ऐसा ज्ञान–विज्ञान का निरंतर विकास होने, नए–नए उपकरणों के आविष्कार, उत्पादन की मात्रा बढ़ाने की चुनौती तथा उत्पादन में शीघ्रता की जरूरत के कारण हुआ। उत्पादन के क्षेत्रों के बढ़ने के साथ मानवश्रम का विभाजन अनिवार्य था। उत्पादन के लिए मानवश्रम के विभाजन का ऐतिहासिक क्रम इस प्रकार निर्धारित किया गया है–

1. कृषि ↔ पशुपालन
2. कृषि ↔ दस्तकारी
3. कृषि ↔ पशुपालन ↔ दस्तकारी
4. कृषि ↔ पशुपालन ↔ दस्तकारी ↔ उद्योग

## अर्थशास्त्र- कुछ गतिविधियाँ

विद्यार्थियों में अर्थशास्त्र की समझ बने, इसके लिए सबसे अधिक उपयोगी है उनके आस–पास चल रहे आर्थिक क्रियाकलापों का सर्वेक्षण। सर्वेक्षण का काम करते हुए विद्यार्थी भ्रमण, अवलोकन, तथ्य संकलन, साक्षात्कार, रेखाचित्रण, रिपोर्ट राइटिंग जैसे काम छोटी–छोटी टोलियों में' करेंगे। इनमें से हर क्रियाकलाप उनकी समझ का विकास करेगा। शिक्षक उनके बीच लगातार रहेंगे। उन्हें निर्देशित करेंगे कि यह काम करते हुए यदि संभव हुआ तो मोबाइल से फोटोग्राफी भी की जा सकती है। इन फोटोज को डिसप्ले कराने और उन पर बातचीत का आयोजन किया जा सकता है।

यह बात आश्चर्यजनक लेकिन सच है कि जो विद्यार्थी अच्छा पढ़–लिख नहीं पाते, वे भी अर्थशास्त्र की अच्छी व्यावहारिक समझ बना लेते हैं चाहे उन्हें अर्थशास्त्र के तकनीकी शब्द भले ही न याद रहें। यहाँ नीचे कुछ गतिविधियाँ सुझाई गई है –

गाँव की खेती का सर्वेक्षण–

**(क) जोतों का सर्वेक्षण** – विभिन्न परिवारों से बातकर उनके खेतों का अनुमानित रकबे पता किए जाएँ। किसान परिवारों से पूछा जाए कि वे कितनी जमीन का उपयोग कौन सी फसल उगाने में करते हैं?

• इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों को भू–संपत्ति के वितरण की स्थिति पता लगेगी। यदि गाँव में भूमिहीन लोग है तो उनकी भी जानकारी मिलेगी। उन्हें भी सर्वे में शामिल रखें।

• गाँव बड़ा है तो सारे ही गाँव का सर्वेक्षण करने की जरूरत नहीं। कुछ परिवार चुने जा सकते हैं, जैसे– शिक्षक बच्चों को परिवार की संख्या निर्धारित करने को निर्देशित करें।

**(ख) फसल की कहानी, जैसे गन्ना** – किसी गन्ना किसान से विद्यार्थी लंबी बातचीत करके गन्ना उगाने से लेकर उसके गुड़, चीनी बनाने तक की कहानी मालूम करें। बच्चों से इस पर अपनी – अपनी स्वतंत्र रिपोर्ट बनवाएँ और उसे कक्षा में साझा कराएँ।

**(ग) विद्यार्थियों को किसी कोल्हू का भ्रमण कराएँ–** कोल्हू की मशीन, गुड़ बनाने के चरण, गुड़ बनाने वाले बरतन, गर्म रस को जमाकर गुड़ बनाने की हौदी आदि की विशेषताएँ मालूम करवाएं। वे देखें कि वहाँ काम कर रहे लोग कौन–कौन हैं और उन्हें इस कोल्हू से क्या लाभ है?

- शिक्षक विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र से रसायन विज्ञान की दिशा में ले जा सकते हैं। बच्चों को कोल्हू पर काम कर रहे लोगों से ये बातें मालूम करने को कहें।

1. गुड़ लाल क्यों हो जाता है?
2. बूरा सफेद क्यों हो जाता है?
3. चीनी के क्रिस्टल कैसे बनते हैं?

## छोटे उद्यमों की छानबीन

शिक्षक बच्चों को किसी डेयरी फार्म या मुर्गी फार्म पर ले जाएँ। इन जगहों पर बातचीत के लिए एक प्रश्नावली विद्यालय में ही तैयार कर लें। बच्चों को टोलियों में बाँट कर इनके स्वामी और कामगारों से बातचीत करने को कहें। बच्चे स्कूल में वापस आकर इसकी रिपोर्ट बनाएँ।

## उद्योग का ढाँचा समझना

उत्तर प्रदेश के अनेक भागों में चीनी मिलों की बहुतायत है। चीनी मिल न सही कोई दूसरा उद्योग पास में हो तो विद्यार्थियों को उसका विजिट–कारखाने के प्रशासन की मदद से कराया जा सकता है। विद्यार्थियों से कहें कि वे इन बातों के बारे में जानकारी हासिल करें–

- कारखाने के प्लांट्स/यूनिट्स और उनकी भूमिका
- कारखाने का कार्मिक ढाँचा – विभिन्न पदों पर कार्यरत कर्मी
- कारखाने में उपयोग होने वाला कच्चा माल
- कारखाने का उत्पाद
- कारखाने द्वारा प्रदूषण नियंत्रण के प्रयास

## सेवा क्षेत्र (तृतीयक क्षेत्र) का सर्वे

शिक्षक किसी नजदीकी पोस्ट आफिस का विजिट आयोजित करें।

पहले पोस्ट आफिस प्रशासन को विश्वास में लें। विद्यार्थियों के साथ मिलकर विजिट की योजना बनाएँ, प्रश्नावली तैयार कर लें। विभिन्न समूहों में पोस्ट आफिस की कार्यप्रणाली का अध्ययन कराएँ।

## निर्धनता और जीवन स्तर का अध्ययन

किन्ही दो परिवारों का चुनाव करें। इनमें आपकी और विद्यार्थियों की नजर में एक निर्धन हो और एक समृद्ध। इन बिन्दुओं पर दोनों परिवारों के बारे में जानकारी एकत्र करें।

- परिवार के सदस्यों की आयु
- परिवार की आमदनी, पुरुषों–स्त्रियों के बीच काम का बँटवारा
- परिवार के पास मौजूद संसाधन,
- परिवार के खर्च
- परिवार के उपयोग की वस्तुएँ, खाद्य पदार्थ, वस्त्र या अन्य
- परिवार की आर्थिक समस्या

- पिछले एक वर्ष की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ

साक्षरता

टोलियाँ बनाकर पास–पड़ोस के करीब 10 परिवारों की साक्षरता स्थिति का अध्ययन करें। इसमें पुरुषों–महिलाओं की साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

रेड़ी–खोखे का अर्थशास्त्र–

सड़क पर चाय/चाउमिन/मोमो या अन्य कोई खाद्य पदार्थ बेचने वाले से घंटे भर का समय लें। विद्यार्थियों से उसकी बातचीत कराएँ। वे उसकी सामग्री, लागत, काम में लगने वाला समय और उसे होने वाले लाभ के बारे में जानकारी हासिल करें, उस की कठिनाइयों का पता करें। फिर इन मुद्दों पर स्वतंत्र नोट्स बनाएँ।

## पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु


अध्याय 1 : विकास

अध्याय 2 : भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

अध्याय 3 : मुद्रा और साख

अध्याय 4 : वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

अध्याय 5 : उपभोक्ता और अधिकार


- इस पुस्तक के **पहले अध्याय** में 'विकास' को दो पहलुओं से परिभाषित किया गया है। एक – व्यक्ति का आर्थिक विकास, दो – राष्ट्रीय विकास/व्यक्ति के आर्थिक विकास को उसकी आय से परिभाषित किया गया है और राष्ट्र के विकास के अनेक मापक हैं। यह एक वृहत्तर क्षेत्र है। इसमें देश की आय, नागरिकों की मासिक/वार्षिक औसत आय, उनमें अंतर शिशु मृत्यु दर, सार्वजनिक सुविधाएँ, नागरिकों का शैक्षिक स्तर और शिक्षा की उपलब्धता तथा स्वास्थ्य हैं। ये परस्पर जुड़े हुए हैं और देश के विकास को प्रभावित करने वाले तत्व हैं।

  अध्याय विकास की धारणीयता की बात करता है। यानि ऐसा विकास जिसमें सभी नागरिकों को रोजगार, स्वास्थ्य, पोषण व शिक्षा की निरंतरता बनी रहे। नागरिकों के बीच परस्पर सामंजस्य और मानवीय मूल्य स्थापित रहें। इसमें प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन के प्रति सावधानी बरतने को कहा गया है।
- **दूसरा अध्याय** भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रकों की पहचान करता है। ये तीन हैं। प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक। प्राथमिक क्षेत्र है कृषि। द्वितीय है विनिर्माण यानि उद्योग । तीसरा

सेवा क्षेत्रक है जो पहले दोनों को समर्थन/सहयोग देता है। इसमें परिवहन, कार्यालयी कामकाज, सूचना सेवाएँ – डाक, तार, टेलीफोन, इंटरनेट कैफे, कालसेंटर, प्रशासनिक शैक्षिक काम आदि आते हैं। तीनों क्षेत्रकों की क्षमता की गणना उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं/सेवाओं के मूल्य से की जाती है। उदाहरण के लिए किसी छोटे देश में ग्यारह लाख किलो (1100000 किलो) अनाज पैदा हुआ और उसका बाजार मूल्य 8 रु. प्रति किलो है तो कुल अनाज का दाम हुआ 8800000 रुपए (अट्ठासी लाख रुपए)।

इसी देश के उद्योगों ने 9200000 (वानबे लाख) रुपये मूल्य की विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन किया और इसी देश के विभिन्न विभागों में काम करने वाले कर्मियों को वेतन और अन्य सुविधाओं पर 1,2400000 (एक करोड़ चौबील लाख रुपये) खर्च हुआ तो देश का सकल घरेलू उत्पाद इस तरह निकाला जाएगा –

| | |
|---|---|
| कृषि (प्राथमिक क्षेत्र) | 8800000 |
| उद्योग (द्वितीयक क्षेत्र) | 9200000 |
| सेवा क्षेत्र (तृतीयक क्षेत्र) | 1,2400000 |
| सकल घरेलू उत्पाद | 30400000 रु |

अध्याय के अनुसार पिछले तीन दशकों में सेवा क्षेत्र का बहुत विस्तार हुआ है। अध्याय बताता है कि अस्पताल, स्कूल, प्रशिक्षण संस्थान, थाना, कचहरी, रक्षा विभाग बैंक आदि, देश की बुनियादी सेवाएँ हैं।

अध्याय में विभिन्न क्षेत्रकों में – आंशिक व पूर्णकालिक बेरोजगारी को भारत के संदर्भ में पहचाना गया है। विभिन्न क्षेत्रकों में यह अनेक तरह से है। यह आंशिक रोजगार के दिनों और वेतन की कमी की समस्या – दोनों रूपों में हो सकती है। अध्याय इस के समाधान के तौर पर ऐसे क्षेत्रों की पहचान और विकास करने को कहता है जहाँ जरूरतमंदों को नियोजित किया जा सके। अध्याय बताता है कि इन तीनों क्षेत्रकों के भीतर भी छोटे क्षेत्र हैं। सेवा शर्तों के आधार पर संगठित और असंगठित क्षेत्र हैं। जिन विभागों, कंपनियों, संस्थानों में काम करने वालों के लिए कुछ नियम कायदे बनाए गए हों, काम के घंटे, उचित वेतन, अवकाश सुविधाएँ, वरिष्ठता आदि निर्धारित हों वह संगठित क्षेत्र है– नियम कायदों के आधार पर संगठित। जहाँ ऐसा नहीं है वह क्षेत्र असंगठित है। अध्याय स्वामित्व के आधार पर भी क्षेत्रों का बँटवारा करता है। सभी

सरकारी संस्थान सार्वजनिक क्षेत्र में आते हैं और जिनका स्वामित्व एक व्यक्ति या परिवारों को था कुछ लोगों के ट्रस्ट के हाथों में हैं वे निजी क्षेत्र के उद्यम या संस्थाएँ है।

- **तीसरे अध्याय** में देश की सरकारी वित्तीय संस्थाओं की आर्थिक विकास में भूमिका को स्पष्ट किया गया है। शुरू में वस्तु विनिमय की असुविधा और उसके विकल्प के रूप में मुद्रा विनिमय के विकास की बात कही गई है। मुद्रा के आधुनिक रूप करेंसी से परिचय कराया गया है। बैंकों का खर्च कैसे चलता है इसे सरल ढंग से समझाया गया है। यह इस प्रकार है –

| | |
|---|---|
| बैंक द्वारा ऋण दाता से लिया गया ब्याज | 50,0000 |
| बैंक द्वारा जमाकर्ताओं को दिया गया ब्याज | 350000 |
| बैंक की अपनी बचत (बैंक का खर्च) | 150000 |

अध्याय में भारतीय नागरिकों की आर्थिक उन्नति में बैंकों के योगदान को रेखांकित किया गया है। यह एक तथ्य है कि साधारण जनता के जीवन स्तर को उन्नत बनाने में खासकर छोटे किसानों को साहूकारों, सूदखोरों के चंगुल से बाहर निकालने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

- **चौथा अध्याय** वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर है। अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि कैसे बहुराष्ट्रीय निगमों ने विश्वभर के उत्पादन को आपस में जोड़ दिया है। जैसे कच्चा लोहा एक से दूसरे देश में जाता है वहाँ उससे लोहे के औजार और अन्य चीजें बनाई जाती हैं और उन्हें दुनिया के बाजारों में बिक्री के लिए भेज दिया जाता है। इस प्रकार बाजार और व्यापार की जरूरतों ने दुनिया के देशों को जोड़ दिया है। उदाहरण के लिए अरब देशों में उत्पादित खनिज तेल विश्व भर में खरीदा, बेचा जाता है। अध्याय यह भी बताता है कि मौजूदा विश्वव्यापार गैरबराबरी पर आधारित है। इस पर विकसित देशों का दबदबा है। वे भारत सरीखे विकासशील देशों का माल अपने देश में मँगाते हैं तो उस पर आयातकर, सीमाशुल्क लगाते हैं। लेकिन अपना उत्पादित माल इन देशों में भेजते हैं तो उस पर सीमा शुल्क और अन्य करों से मुक्ति चाहते हैं – इसके लिए दबाव बनाते हैं।

  भारत सरीखे देश – विश्व व्यापार संगठन के आगे मुक्त और न्यायसंगत व्यापार के लिए आवाज उठाते रहे हैं। अध्याय बताता है कि वैश्वीकरण में विराट व्यापारिक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों की प्रतिस्पर्धा में छोटे भारतीय उद्यमियों का टिक पाना कठिन होता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एक पक्ष श्रमिक शोषण से भी जुड़ा है। जब उनके कारखानों/कंपनियों के

लिए कच्चे माल की लागत में ( जो वे दूसरों से मँगाते हैं ) कटौती संभव नहीं होती तो वे अपने मजदूरों पर लागत कम कर देते हैं।

- पुस्तक का **पाँचवाँ अध्याय** 'उपभोक्ता ओदोलन' पर केन्द्रित है। यह बाजार में दोषपूर्ण या मिलावटी सामग्री बेचने के खिलाफ हुआ एक जन आंदोलन है। यह वस्तु का मूल्य लेकर अनुचित व्यापार करने के विरुद्ध है। उत्पादित वस्तुओं के रैपर पर उसके निर्माण से संबंधित विस्तृत जानकारी इसी आंदोलन के दबाव में दी जाने लगी है। उपभोक्ता अधिकार के तहत उपयोग की अंतिम तिथि से पहले यदि माल खराब हो जाए तो शिकायत की जा सकती है। कई बार व्यापारी एक माल के साथ दूसरा खरीदने के लिए भी दबाव बनाते हैं। यह अनुचित है। इन मामलों की शिकायत के लिए 'उपभोक्ता संरक्षण फोरम' और 'उपभोक्ता न्यायालय' बने हुए हैं। इस आंदोलन का ध्येय वाक्य है –

  ''हमेशा जो मूल्य के बदले किसी प्रकार की सेवा प्राप्त करता है उसे चुनने का अधिकार है।'' अनुचित इलाज या इलाज में लापरवाही भी इसी दायरे में आती है।

  पाठ्यपुस्तक में निहित विभिन्न गतिविधियों का विवरण इस प्रकार है –

| | | | |
|---|---|---|---|
| चित्र और फोटोग्राफ | 90 | विशेष जानकारी बॉक्स | 7 |
| सभी प्रकार की तालिकाएं | 18 | कहानियाँ/केस स्टडी | 12 |
| विचार बिन्दु/आओ इन पर विचार करें (31 बॉक्स) | 109 | चित्र कथा | 1 |
| पाठों के बीच और उनके अभ्यासों में क्रिया कलाप | 11 | चर्चा व नोट्स के लिए अभ्यास प्रश्न | 72 |
| पाइ आरेख | 5 | अभिवृत्ति परीक्षण प्रश्न | 17 |
| थंब आरेख | 6 | | |

उपर्युक्त गतिविधियों के साथ शिक्षण को यथासंभव रुचिकर बनाया जा सकता है।

# दिवसवार अध्याय की विषयवस्तु का विभाजन

| अध्याय संख्या, नाम, निर्धारित दिवस | दिवस | पाठ्यवस्तु / पाठ्यबिन्दु |
|---|---|---|
| पाठ–1, विकास, दिवस 10 | 1 | विकास की अवधारणा एवं इसके लक्ष्य |
| | 2 | **महत्वपूर्ण आर्थिक शब्दावली पर चर्चा :–**<br>प्रति व्यक्ति आय, साक्षारता दर, शिशु मृत्युदर, जीवन प्रत्याशा, सकल नामांकन अनुपात, जन्मदर, मृत्युदर |
| | 3 | राष्ट्रीय विकास संबंधी धारणाएँ |
| | 4 | विभिन्न देशों या राज्यों की तुलना का आधार :–<br>• अविकसित, विकासशील तथा विकसित<br>• औसत आय |
| | 5 | विकास के अन्य मापदण्ड :–<br>आय मापदण्ड– प्रतिव्यक्ति आय के आधार पर<br>विकास के अन्य मापदण्ड– सुरक्षा, दूसरों से आदर, समानता का व्यवहार, आजादी, शिशु मृत्यु दर, साक्षरता दर, निवल उपस्थिति अनुपात<br>सार्वजनिक सुविधाएँ– (शिक्षा, स्कूल, अस्पताल, सड़क, सार्वजनिक वितरण प्रणाली |
| | 6 | आय व अन्य कारकों के आधार पर राज्यों की स्थितियों की तुलना |
| | 7 | शरीर द्रव्यमान सूचकांक (Body Mass Index) पर चर्चा |
| | 8 | विकास की धारणीयता :–<br>संवहनीय विकास (सतत विकास) की अवधारणा पर उदाहरणों के माध्यम से चर्चा |
| | 9 | विकास को मापने में अन्तराष्ट्रीय संस्थाओं के मापदण्ड :–<br>• यू०एन०डी०पी० का मापदण्ड (मानव विकास सूचकांक – HDI<br>• विश्व बैंक का मापदण्ड |
| | 10 | • अध्याय के आरेख, चित्र एवं सांख्यिकीय आँकड़ों के आधार पर क्रियाकलाप व चर्चा–परिचर्चा<br>• आकलन एवं पुनरावृत्ति |
| | 1 | आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्रक<br>• आर्थिक क्रियाओं को परिभाषित करना |

| | | |
|---|---|---|
| पाठ–2, भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक, दिवस 09 | | • आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्रक को उदाहरण की सहायता से परिभाषित करना |
| | 2 | • आर्थिक क्षेत्रकों (प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक) का वर्गीकरण व तुलना |
| | 3 | • सकल घरेलू उत्पाद से संबंधित विभिन्न अवधारणाएँ<br>• मध्यवर्ती वस्तुएँ, अंतिम वस्तुएँ तथा सेवाओं को परिभाषित करना |
| | 4 | भारत में प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्रक :–<br>• भारत के विकास में प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्रों का उत्पादन तथा रोजगार में योगदान |
| | 5 | • बेरोजगारी की अवधारणा<br>• अल्प बेरोजगारी का अर्थ<br>• खुली बेरोजगारी का अर्थ<br>• प्रछन्न या छुपी हुई बेरोजगारी का अर्थ तथा यह किस क्षेत्र में पायी जाती है। (संक्षेप में चर्चा करना) |
| | 6 | अतिरिक्त रोजगार का सृजन कैसे किया जाये? पर चर्चा<br>• आधारभूत संरचना का विकास<br>• सड़क, सिंचाई, बाँध, विनिर्माण, लोन, भण्डारण, खाद्य प्रसंस्करण, सूचना प्रौद्योगिकी, विद्यालय, अस्पताल आदि का निर्माण<br>• रोजगार बढ़ाने के लिए सरकारी योजनायें व कार्यक्रम – 'मनरेगा' आदि |
| | 7 | संगठित एवं असंगठित के रूप में क्षेत्रकों का विभाजन :–<br>• संगठित और असंगठित क्षेत्रों को परिभाषित तथा वर्गीकरण करना (उदाहरण की सहायता से)<br>• असंगठित क्षेत्रों की समस्याएं<br>• असंगठित क्षेत्रों का संरक्षण |
| | 8 | स्वामित्व आधारित क्षेत्रक – सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक :–<br>• सार्वजनिक व निजी क्षेत्र की अवधारणा<br>• सार्वजनिक व निजी क्षेत्र में अंतर |
| | 9 | • अध्याय के आरेख, चित्र एवं सांख्यिकी आँकड़ों के आधार पर क्रियाकलाप व चर्चा–परिचर्चा<br>• आकलन एवं पुनरावृत्ति |
| पाठ–3, | 1 | विनिमय का एक माध्यम :– मुद्रा |

| | | |
|---|---|---|
| मुद्रा एवं साख,<br>दिवस 10 | | • विनिमय का अर्थ<br>• वस्तु विनिमय प्रणाली की अवधारणा<br>• आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अर्थ<br>• मुद्रा का अर्थ<br>• मुद्रा किस तरह आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को पूरा करती है?<br>• मुद्रा विनिमय प्रणाली का अर्थ एवं आवश्यकता |
| | 2 | मुद्रा के आधुनिक रुप :–<br>• मुद्रा का ऐतिहासिक विकास<br>• मुद्रा का आधुनिक रूप– करेंसी, चेक आदि<br>• करेंसी नोट जारी करने के सन्दर्भ में भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका<br>• वित्त मंत्रालय द्वारा जारी नोट |
| | 3 | बैंक की भूमिका :–<br>• बैंक की अवधारणा<br>• बैंक के कार्य<br>• मांग जमा का अर्थ<br>• मांग जमा को मुद्रा जमा क्यों समझा जाता है?<br>• मुद्रा के अन्य रूप (चेक) क्या है? .<br>• चेक के द्वारा भुगतान के तरीके (उदाहरण सहित) |
| | 4 | बैंकों की ऋण संबंधी गतिविधियाँ :–<br>• ऋण की अवधारणा<br>• बैंक ऋण की आवश्यकता को कैसे पूरा करता है?<br>• ब्याज दर का अर्थ<br>• यदि सभी जमाकर्ता एक ही समय बैंक से पैसे निकालने पहुँच जाये तो क्या होगा? |
| | 5 | साख की दो विभिन्न स्थितियाँ :–<br>1–ऋण की सकारात्मक भूमिका का अर्थ<br>2–ऋण की नकारात्मक भूमिका का अर्थ<br>• स्थिर एवं कार्यशील पूँजी की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट करना<br>• ऋण जाल की अवधारणा<br>• ऋण जाल की स्थिति कब उत्पन्न होती |

| | | |
|---|---|---|
| | | • ऋण की शर्तों का अर्थ<br>• ऋणाधार की अवधारणा |
| | 6 | भारत में औपचारिक तथा अनौपचारिक क्षेत्रक में साख :–<br>• औपचारिक तथा अनौपचारिक क्षेत्र को उदाहरण की सहायता से स्पष्ट करना<br>• औपचारिक तथा अनौपचारिक क्षेत्र की कार्य प्रणाली |
| | 7 | • औपचारिक तथा अनौपचारिक ऋण स्रोतों में अंतर<br>• औपचारिक तथा अनौपचारिक ऋण स्रोतों पर निर्भरता<br>• औपचारिक ऋण स्रोतों का समान वितरण या भूमिका |
| | 8 | औपचारिक ऋण गतिविधियों को बढ़ाने के उपाय :–<br>• सहकारी समितियों की भूमिका<br>• स्वयं सहायता समूह की अवधारणा एवं इसके गठन पर चर्चा<br>• अनौपचारिक ऋण स्रोतों पर निर्भरता कम करने में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका |
| | 9 | • स्वयं सहायता समूह की विशेषताओं पर चर्चा<br>• महिला सशक्तीकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका पर चर्चा |
| | 10 | • अध्याय के आरेख, चित्र एवं सांख्यिकीय आँकड़ो के आधार पर क्रियाकलाप व चर्चा–परिचर्चा<br>• आकलन एवं पुनरावृत्ति |
| पाठ–4, वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था, दिवस 10 | 1 | वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था का परिचय :–<br>• क्षेत्रीय और अन्तरदेशीय उत्पादन का अर्थ<br>• राष्ट्रीय कम्पनी एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनी की अवधारणा<br>• बहुराष्ट्रीय कम्पनी की कार्य प्रणाली उदाहरण सहित |
| | 2 | • बहुराष्ट्रीय कम्पनी से लाभ एवं नुकसान<br>• विश्व भर के उत्पादन को एक–दूसरे से जोड़ना |
| | 3 | विदेशी व्यापार और बाजारों का एकीकरण :–<br>• व्यापार किसे कहते हैं?<br>• देशी व्यापार का अर्थ<br>• विदेशी व्यापार का अर्थ<br>• आयात–निर्यात की संकल्पना<br>• खुली एवं बंद अर्थव्यवस्था का अर्थ |

| | | |
|---|---|---|
| | 4 | वैश्वीकरण क्या है?<br>● वैश्वीकरण की अवधारणा पर चर्चा<br>● वैश्वीकरण की भूमिका पर चर्चा |
| | 5 | ● वैश्वीकरण के कारक (संचार एवं प्रौद्योगिकी तथा परिवहन प्रौद्योगिकी)<br>● वैश्वीकरण को सम्भव बनाने वाले कारक |
| | 6 | विदेशी व्यापार तथा विदेशी निवेश का उदारीकरण :–<br>● देशी तथा विदेशी निवेश का अर्थ<br>● उदारीकरण का परिचय<br>● उदारीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष |
| | 7 | विश्व व्यापार संगठन (WHO) :–<br>● विश्व व्यापार संगठन की अवधारणा, उद्देश्य एवं कार्य |
| | 8 | ● विश्व व्यापार संगठन के अन्तर्गत व्यापार व्यवहारों पर वाद–विवाद |
| | 9 | भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव :–<br>● छोटे उत्पादकः प्रतिस्पर्धा करो या नष्ट हो जाओ<br>● प्रतिस्पर्धा और अनिश्चित रोजगार<br>● न्यायसंगत वैश्वीकरण का अर्थ |
| | 10 | ● अध्याय के क्रियाकलाप के आधार पर परिचर्चा<br>● आकलन / पुनरावृत्ति |
| पाठ–5, उपभोक्ता अधिकार दिवस 7 | 1 | उपभोक्ता और अधिकार का परिचय :–<br>● उपभोक्ता शोषण के प्रकार<br>● उपभोक्ता शोषण के कारण<br>● उपभोक्ता शोषण के निदान |
| | 2 | उपभोक्ता आन्दोलन :–<br>● उपभोक्ता आन्दोलन का उदय, विकास एवं प्रभाव<br>● उपभोक्ता इंटरनेशनल का उपभोक्ता आन्दोलन के विकास में योगदान |
| | 3 | उपभोक्ता अधिकार एवं सुरक्षा :–<br>● विभिन्न अधिनियम एवं सुरक्षा कानून (उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम–1986, संशोधित उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 का संक्षिप्त परिचय) |

| | | |
|---|---|---|
| | | • वस्तुओं और सेवाओं के विषय में जानकारी |
| | 4 | • पुनरावृत्ति |
| | 5 | उपभोक्ता जागरूकता :– <br>• उपभोक्ता निवारण आयोग की स्थापना <br>• उपभोक्ता अधिकार संरक्षण करने वाली संस्थाएं (जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर) <br>• विविध उत्पादों की पहचान एवं गुणवत्ता के संकेतकों की पहचान <br>• आई. एस. आई. और एगमार्क <br>• जागरूक उपभोक्ता बनने के लिए आवश्यक बातें (कोपरा अधिनियम) |
| | 6 | • उपभोक्ता आन्दोलन को आगे बढ़ाने के सम्बन्ध में |
| | 7 | • अवलोकन एवं पुनरावृत्ति |

## शिक्षण योजना 01

| अध्याय 01 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| विकास | विकास की अवधारणा एवं उसके लक्ष्य | 01 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउट्कम :–** विकास की अवधारणा एवं इसके लक्ष्यों को समझते हैं तथा उसके बाबत सामान्य जानकारी दे पाते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–** छात्रों द्वारा व्यक्तिगत और सामाजिक रूपों में आर्थिक विकास की अवधारणाओं को समझना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** पाठ्य पुस्तक, तालिका आदि।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ**
**शिक्षण के शुरुआत में – (समय 05 से 10 मिनट)**
शिक्षक चर्चा के साथ नीचे लिखी तालिका भरवाएँ!

| व्यक्ति की श्रेणी | विकास के लक्ष्य/आकांक्षाएँ |
|---|---|
| भूमिहीन ग्रामीण मजदूर | काम के लिए अधिक दिन, सभी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति |
| पंजाब के समृद्ध किसान | किसान को उपज के लिए ज्यादा समर्थन मूल्य |
| किसान जो खेती के लिए केवल वर्षा पर निर्भर है | |
| भूस्वामी परिवार की एक ग्रामीण महिला | |
| शहरी बेरोजगार युवक | |
| शहर के अमीर परिवार का एक लड़का | |
| शहर के अमीर परिवार की एक लड़की | |
| गरीब व्यक्ति | गरीबी दूर करना, सभी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति। |
| नर्मदा घाटी का एक आदिवासी | |

उपरोक्त तालिका के आधार पर नीचे लिखे बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे –

- विकास का क्या अर्थ हो सकता है?
- विकास के लिए अलग–अलग कैसी आकांक्षाएँ निर्धारित होती हैं?
- प्रत्येक व्यक्ति के लिए विकास एक ही होता है या अलग–अलग होता है।

**शिक्षण के दौरान – (समय 20 से 25 मिनट)**

पाठ्यपुस्तक में मौजूद विकास की अवधारणा पर बच्चों के साथ चर्चा करें। चर्चा में यह जानने की कोशिश करें कि छात्र विकास को केवल आय में वृद्धि होना मानते हैं या विकास को आय में वृद्धि के अलावा अन्य लक्ष्य के रूप में भी देखते हैं। इस दौरान निम्नलिखित बिन्दुओं पर भी चर्चा करें–

- लोग नियमित काम, बेहतर मजदूरी, अपनी फसल के उपज के लिए अच्छी कीमतें दूसरे शब्दों में अधिक आय को विकास मानते हैं।
- लोग अधिक आय के अतिरिक्त बराबरी का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार, दूसरों से आदर मिलने की इच्छा तथा लड़कों के बराबर लड़कियों को अधिकार आदि को विकास मानते हैं।
- पाठ्य पुस्तक में दिये गये उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट करें कि विकास तब सही मायने में माना जायेगा जब उपरोक्त दोनों तथ्यों का समावेश होगा।

समूह सहभागिता

(क) छात्रों को चार बड़े समूहों में बाँट दिया जाए। इसके उपरान्त आय के अतिरिक्त अन्य कारक जो हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण है उनकी एक सूची प्रत्येक समूह द्वारा बनवाई जाए। इसके उपरान्त प्रत्येक समूह के लीडर द्वारा इस सूची का प्रस्तुतीकरण कराकर इस पर चर्चा–परिचर्चा की जाये।

अथवा

(ख) छात्रों को चार बड़े समूहों में बाँट दिया जाये। उसके उपरान्त विकास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण विचारों को समूह द्वारा अपनी भाषा में लिखा जाये। इसके उपरान्त प्रत्येक ग्रुप के लीडर द्वारा प्रस्तुतीकरण कराकर इस पर चर्चा–परिचर्चा की जाए।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के आधार पर अवलोकन किया जायेगा तथा अंत में प्रतिपुष्टि प्रदान की जायेगी।

- लोगों के लिए विकास की अवधारणायें भिन्न–भिन्न क्यों होती है?

  अ. क्योंकि लोग भिन्न–भिन्न होते हैं।     ब. क्योंकि लोग ऊँची सोच के होते हैं।

  स. क्योंकि लोगों की परिस्थितियॉ भिन्न–भिन्न होती हैं।   द. इनमें से कोई नहीं।

- विकास के मुख्य उद्देश्य कौन से होते है?

  अ. आय में वृद्धि करना     ब. जीवन में सुधार होना

  स. अ और ब दोनो     द. इनमें से कोई नहीं

- भूमिहीन कृषि श्रमिकों के लिए विकास होता है–

  अ. फसलों की ऊँची कीमतें     ब काम के अधिक दिन

  स. सस्ता श्रम     द. प्रदूषण मुक्त वातावरण

- व्यक्ति के विकास से तात्पर्य है।

  अ. मानसिक विकास     ब. शारीरिक विकास

  स. आध्यात्मिक विकास     द. समग्र विकास

गृहकार्य/परियोजना (प्रोजेक्ट)

छात्रों से उनके आस–पास के परिवेश में रहने वाले लोगों की परिस्थितियों के अनुरूप विकास की एक सूची बनाकर कक्षा में प्रस्तुतीकरण करायें।

**शिक्षण की आगामी योजना :–** राष्ट्रीय विकास सम्बन्धी अवधारणा पर चर्चा करेंगे।

## शिक्षण योजना 02

| अध्याय 02 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक | आर्थिक क्रियाओं की परिभाषा और आर्थिक क्षेत्रक | 01 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउट्कम** :– छात्र आर्थिक क्रियाओं की परिभाषा से परिचित होते हैं, उनके विभिन्न क्षेत्रकों को जानते हैं तथा क्षेत्रकों को वर्गीकृत कर लेते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य**– छात्रों को आर्थिक विकास के तीन क्षेत्रकों (कृषि, उद्योग और सेवा) की पहचान कराना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री** :– चित्र, चार्ट, पेन, स्केच, पीपीटी व प्रोजेक्टर इत्यादि।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ**

**शिक्षण के शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

- अध्यापक चित्रों/वीडियो क्लिप के माध्यम से विभित्र प्रकार की अर्थिक गतिविधियाँ और क्रियाओं से छात्रों को परिचित करायेंगे।
- छात्र ध्यानपूर्वक चित्र अथवा वीडियो को देखेंगे।
- ठसके पश्चात अध्यापक छात्रों से आर्थिक क्रियाओं के विषय में प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा–परिचर्चा करेंगे।

**शिक्षण के दौरान – (समय 20 से 25 मिनट)**

- अध्यापक विभित्र प्रकार की आर्थिक क्रियाओं पर उपयुक्त छात्रों का चयन करके रोल प्ले करवायेंगे।
- इसके बाद अध्यापक चार्ट के माध्यम से आर्थिक क्रियाओं पर आधारित क्षेत्र के वर्गीकरण को दर्शायेंगे।

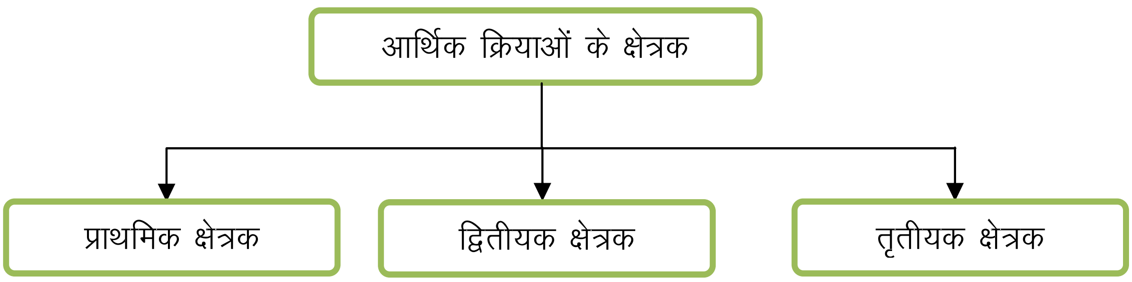

- पीपीटी के माध्यम से इन क्षेत्रकों और इनके विभित्र उदाहरणों को समझायेंगे।
- बीच–बीच में अध्यापक छात्रों से प्रश्न भी करते रहेंगे।
- विभिन्न प्रकार के क्षेत्रकों पर छात्रों से रोल प्ले करवायेंगे।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

अध्यापक छात्रों को कई समूहों में बाँटेगें और उनसे चार्ट पर प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रकों की सूची बनाने को कहेंगे।

**गृहकार्य/परियोजना (प्रोजेक्ट)**

अध्यापक छात्रों को चार्ट पेपर पर प्राथमिक द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रकों के कुछ चित्र चिपका कर लाने को कहेंगे।

**शिक्षण की आगामी योजना :–** इसी आधार पर आगे की शिक्षण योजना तैयार करेंगे।

## शिक्षण योजना 03

| अध्याय 03 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| मुद्रा और साख | विनिमय का एक माध्यमः मुद्रा | 01 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउट्कम** :– छात्र मुद्रा की आवश्यकता, उसके महत्व, करेंसी तथा विभित्र देशों की करेंसी के विषय में जानते हैं और बता पाते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य**– छात्रों में मुद्रा के सामाजिक उपयोग की समझ विकसित करना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री** :– चित्र, चार्ट, पीपीटी, वीडियो, पेन इत्यादि।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ**

**शिक्षण के शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

- अध्यापक छात्रों को प्रकरण के विषय में बताते हुए उस पर चर्चा––परिचर्चा करेंगे।
- शिक्षक छात्रों को बतायेंगे कि एक कृषक, एक भेड़ पालक और एक लोहा व्यापारी है। किसान गेहूं बेचना चाहता है, लोहा व्यापारी लोहा व भेड़ पालक भेड़ बेचना चाहता है। लेकिन किसान और भेड़ पालक लोहा नहीं लेना चाहते। लोहा व्यापारी को भेड़ नहीं चाहिए तब दिन में कैसे होगा? ऐसे में वस्तु विनिमय संभव नहीं है तब क्या होना चाहिए?

**शिक्षण के दौरान – (समय 20 से 25 मिनट)**

उपर्युक्त संदर्भ पर छात्रों से चर्चा करने के बाद शिक्षक छात्रों से पूछेंगे कि बताओ उपर्युक्त संदर्भ वाले तीनों व्यक्ति अपनी मनचाही चीजें कैसे खरीदेंगे?

छात्रों के समक्ष यह एक समस्यात्मक प्रश्न होगा। फिर अध्यापक बतायेंगे कि वस्तु विनिमय की इसी समस्या के कारण मुद्रा अस्तित्व में आयी।

इसके बाद मुद्रा क्या है? मुद्रा के कार्य क्या हैं और इनके महत्व क्या हैं? इन पर वीडियो अथवा पाठ्यवस्तु के आधार पर चर्चा–परिचर्चा करेंगे।

प्राचीन काल एवं मध्यकाल की मुद्राओं का चित्र दिखाते हुए मुद्रा के आधुनिक रुप पर बच्चों से चर्चा करें और स्पष्ट करें कि–

पहले चाँदी, सोने और ताँबे की धातुओं की मुद्रा विनिमय माध्यम के रुप में प्रचलन में थी। आजकल मुद्रा के रूप में करेंसी अर्थात कागज के नोट और धातु के सिक्कों का प्रयोग किया जा रहा है, अध्यापक आधुनिक युग में मुद्रा के रुप में करेंसी और उनके महत्व पर चर्चा करेंगे। करेंसी को विनिमय का माध्यम इसलिए बनाया गया है क्योंकि किसी देश की सरकार उसे प्राधिकृत करती है।

इसके बाद विभिन्न देशों की करेंसी पर एक वीडियो छात्रों को दिखायेंगे।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

छात्रों को चार समूहों में बाँटेगे तथा प्रत्येक समूह को चार्ट देंगे। उस पर देशों का नाम और उनकी करेंसी का नाम लिखने को कहेंगे।

**गृहकार्य/परियोजना (प्रोजेक्ट)**

अध्यापक छात्रों को प्रोजेक्ट कार्य के रूप में चार्ट पेपर पर मध्यकाल की मुद्राओं के चित्र चिपकाकर लाने तथा उसके सामने उनका मूल्य लिखकर लाने को कहेंगे।

**शिक्षण को आगामी योजना** :– पाठ्यवस्तु का विस्तार करते हुए आगे की शिक्षण योजना तैयार करेंगे।

## शिक्षण योजना 04

| अध्याय 04 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यस्था | विश्व व्यापार संगठन तथा इसके उद्देश्य और कार्य | 01 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउट्कम :–** विश्व व्यापार संगठन की अवधारणा को समझते हैं तथा इसके उद्देश्यों एवं कार्यों को बता लेते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–**

- विद्यार्थियों को व्यापार के अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप से परिचित कराना
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत की स्थिति से परिचित कराना

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–** वीडियो, दीक्षा एप, चार्ट आदि।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया / गतिविधियाँ**

**शिक्षण के शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

नीचे प्रदर्शित चित्र / चार्ट के माध्यम से आगे दिए गए बिन्दुओं पर चर्चा–परिचर्चा की जायेगी–

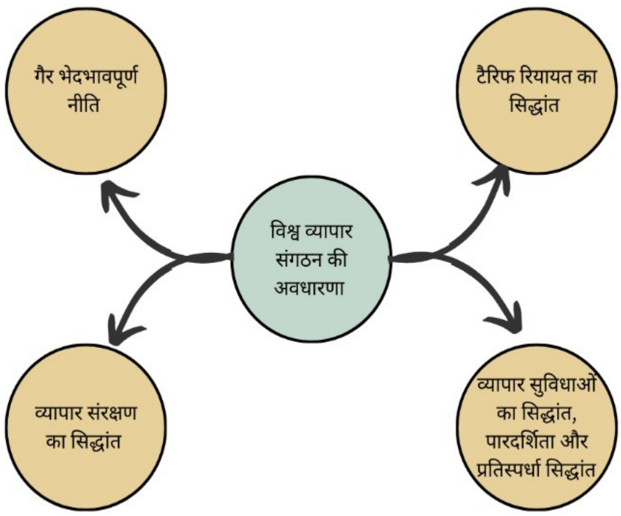


1. टैरिफ रियायत सिद्धांत का अर्थ

2. व्यापार सुविधाओं के सिद्धांत का अर्थ, व्यापार में पारदर्शिता का अर्थ तथा व्यापार में पारदर्शिता प्रतिस्पर्धा सिद्धांत का अर्थ।
3. व्यापार संरक्षण सिद्धांत का अर्थ।
4. व्यापार में गैर भेदभावपूर्ण नीति का अर्थ।

**शिक्षण के दौरान – (समय 20 से 25 मिनट)**

शिक्षण के दौरान निम्नलिखित बिंदुओं पर छात्रों के साथ चर्चा– परिचर्चा की जायेगी –

1. पाठ्य पुस्तक तथा ऊपर प्रदर्शित चित्र में उल्लिखित बिंदुओं द्वारा विश्व व्यापार संगठन (WTO) की अवधारणा पर छात्रों के साथ चर्चा–परिचर्चा की जायेगी।
2. नीचे दिए गए चार्ट के माध्यम से विश्व व्यापार संगठन (WTO) के उद्देश्यों पर चर्चा–परिचर्चा की जाएगी–

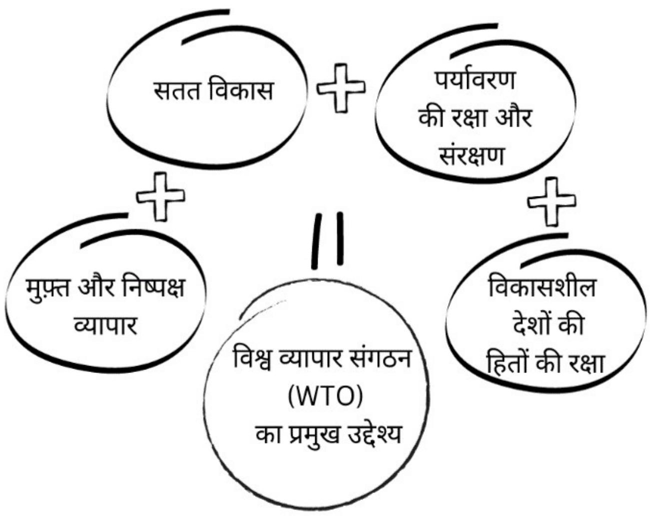


3. निम्नांकित फ्लो चार्ट के माध्यम से विश्व व्यापार संगठन (WTO) के कार्यों पर चर्चा–परिचर्चा की जायेगी–

शिक्षक यह भी स्पष्ट करें कि विश्व व्यापार संगठन में अक्सर ही बनने वाले नियमों–विधानों–निर्णयों में विकसित देश लाभ में रहते हैं। अनेक बार में अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्वबैंक के जरिए अपने लाभ की नीतियां अविकसित देशों पर लादने की कोशिश करते हैं। अविकसित देश इनका विरोध भी करते हैं।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के आधार पर अवलोकन किया जायेगा तथा अंत में अध्यापक द्वारा प्रतिपुष्टि प्रदान की जायेगी।

1. विश्व व्यापार संगठन की स्थापना कब हुई?

अ. 6 मार्च 1996 ब. 8 अप्रैल 1994 स. 5 फरवरी 1994 द. 1 जनवरी 1995

2. विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय कहाँ स्थित है?

अ. आस्ट्रेलिया ब. जिनेवा स. न्यूयार्क द. वाशिंगटन डीसी

3. विश्व व्यापार संगठन का उद्देश्य नही है–

अ. पर्यावरण की रक्षा ब. सदस्य देशों के भुगतान संतुलन की स्थिति को सुधारना

स. मुक्त और निष्पक्ष व्यापार द. विकासशील देशों के हितों की रक्षा करना

4. विश्व व्यापार संगठन का कार्य नहीं है–

अ. सदस्य देशों के सीमा विवादों का निपटारा करना

ब. व्यापार विवादों का निपटारा करना।

स. विकासशील देशों को तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करना।

द. सदस्य देशों के बीच व्यापार वार्ता के लिए मंच प्रदान करना।

**गृहकार्य/परियोजना (प्रोजेक्ट)**

विश्व व्यापार संगठन के उद्देश्यों तथा कार्यों को समूह में चार्ट पर बनवाया जायेगा तथा कक्षा में इसका प्रस्तुतीकरण कराया जायेगा।

**शिक्षण की आगामी योजना :–** इसी आधार पर आगे की शिक्षण योजना तैयार करेंगे।

## शिक्षण योजना 05

| अध्याय 05 | प्रकरण | दिवस | समय |
|---|---|---|---|
| उपभोक्ता अधिकार | उपभोक्ता अधिकार | 01 | 40 मिनट |

**लर्निंग आउट्कम :–** उपभोक्ता अधिकार को समझते हैं तथा इसके दैनिक जीवन में प्रयोग के बारे में बता पाते हैं।

**शिक्षण उद्देश्य–** एक नागरिक के रूप में छात्रों को उपभोक्ता अधिकारों के प्रति जागरूक बनाना।

**सीखने–सिखाने की सामग्री :–**योजना पत्रिका, प्रामाणिक वेबसाइट, वीडियो क्लिप्स।

**सीखने–सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ**

**शिक्षण के शुरुआत में – (समय 5 से 10 मिनट)**

शिक्षक उपभोक्ता अधिकार से सम्बन्धित वीडियो क्लिप या केस स्टडी द्वारा कक्षा में उस पर चर्चा करेंगे।

http://consumeraffairs.nic.in
(उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय भारत सरकार)

**शिक्षण के दौरान – (समय 20 से 25 मिनट)**

उपभोक्ता अधिकार पर चर्चा के दौरान स्पष्ट करें कि उपभोक्ता को सस्ती, गुणवत्तापूर्ण, व अपने इच्छानुसार वस्तुओं व सेवाओं को प्राप्त करने का नैतिक और कानूनी अधिकार प्राप्त है। कुछ अधिकारों पर नीचे लिखे अनुसार छात्रों की समझ बनाएं।

**1– सुरक्षा का अधिकार –** उत्पादकों को आवश्यक है कि उपभोक्ता के जीवन और स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन मानक के अनुसार करें। यदि ऐसा नहीं होता है तो उपभोक्ता के सुरक्षा के अधिकार का उल्लंघन होगा।

इसे स्पष्ट करने के लिए कक्षा में निम्नांकित गतिविधियाँ करायी जा सकती हैं–

**गतिविधि :** निम्नलिखित उत्पादों और सेवाओं के चित्रों पर चर्चा करें कि इनमें उत्पादकों द्वारा किन सुरक्षा नियमों का पालन किया गया है–

1. एलपीजी सिलेण्डर  2.दवाइयाँ  3. खाद्य तेल  4. विवाह मंडप (मैरिज लॉन)

**2– सूचना पाने का अधिकार** – उपभोक्ता को वस्तुओं व सेवाओं के विषय में जानकारियां प्राप्त करने का अधिकार है। जैसे– उत्पाद के अवयव, बैच संख्या, निर्माण की तारीख, अंतिम तिथि आदि ।

**गतिविधि** : दैनिक उपयोग की 10 वस्तुओं को एकत्रित करके उसके पैकेट/लेबल/लोगो (मार्क) की कक्षा में चर्चा की आएगी। (जैसे बिजली उपकरण, जैम, स्नैक्स पैकेट)

**3– चयन का अधिकार** – जब कोई उपभोक्ता वस्तु और सेवा खरीदता है तो उसे अपने इच्छानुसार चुनाव का अधिकार है।

**गतिविधि** : यदि कोई गैस एजेन्सी उपभोक्ता को गैस सिलेण्डर के साथ चूल्हा खरीदने का दबाव देती है तो क्या करना चाहिए? इस प्रकरण पर छात्रों से चर्चा करना।

**4– क्षतिपूर्ति का अधिकार** – उपभोक्ताओं को अनुचित सौदेबाजी और शोषण के विरुद्ध क्षतिपूर्ति प्राप्त करने का अधिकार है। इसके लिए सरकार द्वारा उपभोक्ता अदालतें बनाई गई है।

**5– सुनवाई का अधिकार** – यह उपभोक्ता अधिकार की आत्मा है। उपभोक्ताओं को विश्वास दिलाता है कि कुछ गलत होने पर विभिन्न उपभोक्ता मंचों पर उनके हितों का ध्यान रखा जाएगा।

छात्रों को बताएं कि बाजार में प्रचलित नियमों, कानूनों व उपभोक्ता शोषण से बचने के उपायों की जानकारी व प्रचार, प्रसार मीडिया व अन्य माध्यमों से किया जाता है।

शिक्षक आवश्यकतानुसार गतिविधियों, रोल प्ले. केस स्टडी के द्वारा उपर्युक्त अधिकारों को समझा सकते हैं।

**शिक्षण के अन्त में (समय 5 से 10 मिनट)**

निम्नांकित डायग्राम द्वारा छात्रों से उपभोक्ता अधिकारों की पुनरावृत्ति कराना।

इनके विषय में मौखिक रूप से छात्रों से पूछें –

- एगमार्क
- हॉल मार्क
- आई.एस.आई.

**गृहकार्य/परियोजना (प्रोजेक्ट)** :— विद्यालय में "उपभोक्ता जागरुकता सप्ताह" का आयोजन विषयक प्रोजेक्ट तैयार करना।

**शिक्षण की आगामी योजना** :— इसी आधार पर आगे की शिक्षण योजना तैयार करेंगे।

# परिशिष्ट

## सामाजिक विज्ञान शिक्षण हेतु पेडागॉजिकल (शैक्षणिक) रणनीतियाँ

- इन्क्वायरी (पूछताछ)
- इश्यू बेस्ड लर्निंग (मुद्दे आधारित अधिगम )
- कन्वर्सेशन, डिस्कशन व डिबेट्स (बातचीत), (परिचर्चा), (वाद–विवाद)
- रोल प्ले व सिमुलेशन (अभिनय तथा अनुकरण)
- कम्युनिटी सर्विस एण्ड फील्ड एक्सकर्सन ( सामुदायिक कार्य एवं अध्ययन यात्रा )
- रिफ्लेक्टिव एस्सेज (चिन्तनशील निबंध)
- प्रोजेक्ट वर्क (प्रदत्त कार्य)
- विशेष प्रोजेक्ट के रूप में कला शिल्प मॉडल व विरूपण साक्ष्य बनाने का अवसर देना

### सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम हेतु सहयोगी तरीके

**पठन** – किसी भी विषय के सीखने सिखाने की प्रक्रिया में पठन एक परम्परागत लेकिन बहुत महत्वपूर्ण गतिविधि है। इसे सुव्यवस्थित क्रम में किया जाना आवश्यक है यह निम्नवत है–

- विद्यार्थियों द्वारा पाठ का अनुच्छेद अथवा इकाईवार वाचन। शिक्षक द्वारा वर्तनी/उच्चारण संबंधी त्रुटियों को सुधारना तथा कठिन शब्दों को सरलीकृत रूप में स्पष्ट करना।
- शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों से पढ़े गए अनुच्छेद पर प्रश्न बनवाना तथा परस्पर एक दूसरे से अथवा सामूहिक रूप से उत्तर पूछने को कहना।
- विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नोत्तरी के उपरान्त शिक्षक द्वारा संबंधित पैराग्राफ पर प्रश्न पूछते हुए अस्पष्ट हिस्सों को पुनः स्पष्ट करना। अनुच्छेद को संक्षेप में प्रस्तुत करना।
- अगले अनुच्छेद/इकाई पर जाना तथा पुनः इसी क्रम को दोहराना।
- प्रकरण/पाठ के समाप्त हो जाने पर संबंधित प्रकरण के मुख्य बिन्दुओं को सार रूप में पुनः उभारना तथा विद्यार्थियों के समूह बनाकर प्रश्नोत्तरी करना।
- प्रकरण में आए जीवन कौशलों पर सोदाहरण चर्चा करना।

**2 समूह कार्य प्रस्तुति**– प्रकरण से संबंधित समूह कार्य हेतु विद्यार्थियों को समूहों में बाँटना तथा समूह कार्य देना। समूह कार्य हेतु पर्याप्त समय देना तथा समय समाप्त होने पर समूहवार प्रस्तुतीकरण कराकर आवश्यक सुझाव देना।

**3 केसलेट असेसमेंट**– केसलेट असेसमेंट सामान्यतः छोटे अनुच्छेद (पैराग्राफ) के रुप में प्रस्तुत किए जाते हैं। पैराग्राफ में कोई डेटा, वर्णन, विवरण या तर्क आधारित जानकारी होती है। इसे हल करने या इससे सम्बंधित प्रश्नों का उत्तर देने के लिए अनुच्छेद(पैराग्राफ) में प्रस्तुत जानकारी का उपयोग करना होता है।

विद्यार्थियों ने प्रकरण से सम्बंधित बिन्दुओं को कितनी गहराई से समझा है इसके आकलन हेतु प्रकरण से कुछ परिस्थितियाँ केसलेट के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से अथवा छोटे समूह में देकर उससे संबंधित उनके दृष्टिकोण को जाँचना।

**4 तकनीकी माध्यमों का प्रयोग**– सहज रूप से उपलब्ध तकनीकी माध्यमों यथा– रेडियो, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड, मोबाइल फोन, लर्निंग ऐप्स, ई मैटेरियल, चैनल्स, दीक्षा पोर्टल, ई ज्ञान गंगा, स्विप्ट चैट बोर्ड, फोन आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को संबंधित प्रकरण की अद्यतन जानकारी देना तथा उनके शैक्षिक उपयोग व प्रयोग से परिचित कराना।

**5 स्थानीय ज्ञान का उपयोग**– स्थानीय परिवेश में किसी विषय/विषयवस्तु विशेष के अच्छे जानकार व्यक्तियों को समय–समय पर विद्यालय में आमंत्रित कर विद्यार्थियों के समक्ष उनके ज्ञान का समुचित उपयोग किया जाना।

## सामाजिक विज्ञान की मुख्य शाखाएँ

**भूगोल**– पृथ्वी की संरचना (बनावट), लोगों, स्थानों तथा वातावरण(जलवायु) का अध्ययन

**इतिहास**– कालक्रमानुसार अच्छा जीवन जीने की चाह में अधिसंख्य पुरुष व महिलाओं के सहकारी एवं सहयोगपूर्ण कार्यों का वर्णन/विवरण।

**नागरिक शास्त्र/राजनीति विज्ञान** – राजनीति के सिद्धान्तों तथा कार्यप्रणाली का अध्ययन तथा राजनैतिक व्यवस्था और व्यवहार का विश्लेषण करना। इसमें घटनाओं तथा परिस्थिति के बीच संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

**अर्थशास्त्र**– इसमें मनुष्यों द्वारा उत्पादन, उपयोग एवं सम्पत्ति के चयन हेतु अपनाए जाने वाले विभिन्न तरीकों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। यह इंसान की आवश्यकताओं तथा उपलब्ध संसाधनों के बीच सन्तुलन का सामाजिक विज्ञान है।

**पुरातत्व विज्ञान**– इसमें प्राचीन काल के समाज तथा संस्कृति का अध्ययन किया जाता है।

**समाज शास्त्र–** इसके अंतर्गत सामाजिक संदर्भों में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। यह सामाजिक संरचना एवं कार्य प्रणाली को समझने पर केन्द्रित होता है।

## सामाजिक शिक्षण उपकरण (सोशल साइट्स टूल)

सामाजिक शिक्षण उपकरण शैक्षणिक एवं एंड्रोगॉजिकल उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण है जो व्यक्तियों और प्रणालियों के सोशल मीडिया संवाद का माध्यम बनते है। सामाजिक शिक्षण उपकरण शिक्षार्थियों, प्रशिक्षकों तथा इन्फॉर्मेशन(सूचना) के बीच औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से मध्यस्थ का कार्य करते हैं। इनके माध्यम से हम अपने कार्यों को कहीं ज्यादा सुगम और उपादेय बना सकते हैं।

**कुछ प्रचलित सोशल साइट्स टूल्स का विवरण निम्नवत है –**

**ब्लॉगर–** ब्लॉगर एक ऐसी साइट है जिसमें उपयोगकर्ता अपना ब्लॉग बना कर इसका उपयोग विभिन्न शैक्षिक संदर्भों में कर सकते हैं। इसमें ब्लॉग बनाकर शिक्षक बच्चों से बातचीत करते हुए उनके लेखन, पठन, योजना कौशल, विचारों का साझाकरण तथा अन्य शैक्षिक क्रियाकलापों का आदान प्रदान सुगमतापूर्वक कर सकते हैं।

**फेसबुक–** इस ऑनलाइन संचार उपकरण द्वारा कोई भी आभासी समुदाय परस्पर विचारों का आदान–प्रदान कर सकता है। वर्तमान समय प्रौद्योगिकी का है। अपने कार्य का प्रसार एवं दूसरों को प्रगति साझा करना, जरूरी वीडियोज शेयर करना, समूह परियोजनाओं पर चर्चा करना, लेख साझा करना जैसी तमाम संभावनाओं की वजह से फेसबुक एक प्रमुख सामाजिक शिक्षण उपकरण साबित हो सकता है। इसका उपयोग असाइनमेंट तथा पाठ्यक्रम सामग्री अपलोड करने के लिए डैशबोर्ड के रुप में भी किया जा सकता हैं।

**गूगल हैण्ड ऑउट–** यह एक संचार सॉफ्टवेयर प्लेटफार्म है, जिसके माध्यम से चैट, वार्तालाप, वीडियो कॉल, फोन कॉल और संदेश भेजना जैसे कार्य सुगमता से किए जा सकते हैं। यह विभिन्न सामग्री, असाइनमेंट और स्रोतों को संपादित करने और साझा करने की भी अनुमति देता है।

**इंस्टाग्राम–** यह एक सोशल नेटवर्किंग ऐप है जिसे आरंभ में फोटो और वीडियो साझा करने के लिए बनाया गया था। शैक्षिक जानकारियों के लिए इसका उपयोग कोई जानकारी, विषय सामग्री की तस्वीर अथवा छोटे वीडियो पोस्ट करने में किया जा सकता है। इसका उपयोग फोटो निबंध या कोई पाठ बनाने के लिए भी किया जा सकता है।

**खान अकादमी–** यह संगठन दुनिया भर में मुफ्त ऑनलाइन शैक्षिक संसाधन प्रदान करता है।

**पिनटेरेस्ट(pinterest)**–एक बेब–आधारित साफ्टवेयर प्लेटफार्म है जो अपने उपयोगकर्ता को चित्रों, विवरणों और लघुवीडियोज के उपयोग के माध्यम से नई जानकारियाँ साझा करने और खोजने की अनुमति देता है।

**स्काइप** – एक निःशुल्क दूर संचार उपकरण है, जो अपने उपयोगकर्ताओं को लैपटॉप और मोबाइल फोन जैसे विभिन्न उपकरणों के बीच वॉयस चैट या वीडियो कॉल करने का अवसर देता है। स्काइप को कक्षाओं में कई तरह से लागू किया जा सकता है, जैसे कि इसका उपयोग उन विद्यार्थियों को जो कि बीमारी या अन्य किसी कारण से विद्यालय में नहीं आ पा रहे है, कक्षा में होने वाली सहयोगात्मक चर्चाओं में सम्मिलित करने के लिए किया जा सकता है।

**ट्विटर**– एक स्थापित माइक्रो ब्लॉगिंग सेवा है जो कि दुनिया भर में इंटरनेट एक्सेस करने वाले व्यक्तियों के लिए उपलब्ध है। यह अपने उपयोगकर्ताओं को संदेश भेजने और प्राप्त करने के लिए असीमित पहुँच प्रदान करती है। कक्षा–कक्षीय परिस्थितियों में छात्र इस माध्यम पर अपने शिक्षक का अकाउंट देख सकते हैं। इस सेवा के माध्यम से शिक्षक असाइनमेंट टेस्ट, रिव्यू, फीडबैक, फ्यूचर प्लान आदि पर चर्चा कर सकते हैं।

**यू–ट्यूब**– 2005 में स्थापित वीडियो शेअरिंग साइट जो अपने उपयोगकर्ताओं को वीडियो साझा करने, पसंद करने, अपलोड करने तथा उनपर टिप्पणी करने का प्लेटफार्म उपलब्ध कराती है। अपनी इस विशेषता के कारण यू–ट्यूब एक बेहतर सामाजिक शिक्षण उपकरण साबित होता है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

नागरिकशास्त्र (वेबसाइट)


1. www.en.wikipedia.org
2. www.britannica.com
3. http://india.gov.in/direetonesa_gov_php
4. www.opendemneerog.net
5. www.brainencyclopedia.com
6. DIKSHA- www.diksha.gov.in
7. Prerna app- www.prernaup.in
8. NCERT- www.ncert.nic.in
9. MHRD- www.mhrd.gov.in
10. E-Pathshala- www.epathshala.nic.in

## प्रमुख पुस्तकें


1- An ABC of Democracy: Nancy Shapiro
2.भारतीय संविधानः रचना एवं कार्य
3.शिवाजी किंकर चौबे अनुः के0 बी० सिंह, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, भारत
4.माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
5.संविधान का परिचय, डी0डी0बसु
6.लोकतंत्रः 80 प्रश्न और उत्तर, डेविड बीथम एवं केविन बॉयले
7.अनुवादः देसराज गोयल, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया
8.आधुनिक लोकतंत्रः कार्ल एल0 बेकर, अनु ओमप्रकाश दीपक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
9.भारत में नागरिको के लिए अधिकार, बलराज शर्मा, एन० बी० टी०, नई दिल्ली
10. दिवास्वप्न, गिजुभाई बधेका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
11. पहला अध्यापक, चिन्गीज एटमाटोन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
12. बच्चे की भाषा और अध्यापक, प्रो० कृष्णा कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
13. प्रभावकारी शिक्षण, एन0 के0 जंगीरा, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
14. एक अध्यापक का सफरनामा, राम जी दुबे, एन० बी० टी०, दिल्ली
15. भारतीय इतिहास कोश, सच्चिदानंद भट्टाचार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,
16. प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, दामोदर धर्मानंद, कोम्सवी, राजकमल
17. भारत ज्ञान कोश, चंद्रकान्त सिंह, नीलम भट्ट, भास्कर जुयाल, रविशंकर पेडा, एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका (इंडिया) प्रा.लि. नई दिल्ली
18. आधुनिक भारत का इतिहास, रामलखन शुक्ल, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन, निदेशालय, दिल्ली वि.वि.
19. आधुनिक भारत, विपिन चंद्र
20. भारत का इतिहास, रोमिला थापर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

# समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ